

एक बीनणी दो बीन

(अुपन्यास)

१११

लेखक

श्रीलाल न० जोशी

प्रकाशक

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादम)

बीकानेर

प्रकाशक *

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (प्रकाशनी)

बीकानेर

मोल 830

संस्करण पहला

1973

मुद्रक

अजन्ता प्रिण्टर्स,

जोहरी बाजार, जयपुर

प्रकाशकीय

राजस्थानी गद्य लिखारा मे श्री श्रीलाल न० जोशी रे घोळ्खाण करावणी जरूरी लागे कोनी, कारण 'यारी-यारी विधावा म उणा रे अनेक पोथ्या छप चुकी है जिणा रे साहित्य ससार मे मोकळो आदर हुयो है ।

प्रस्तुत पोथी एक बीनणी दा बीन-म जाशोजी आग्ल महाकवि टनीसन रे अमर कृति 'ईनक आरडन' रे क्या न फलाव देयर राजस्थानी पाठवा सारु प्रस्तुत करी है जिणसू मालम पढ क मिनस रे प्रकृति मे देस वाळ रे सीवा बाधक बण सकै कोनी । जिको चित्रण आज सू दो सी बरसा पत्ती रे टनीसन ईनक आरडन मे विदेसी धरती रे मिनसा रे बर्या है, वो दो सईका बीत्या पछ भी भारत रे भोम रे मानबिया रे सो लाग ।

भरोसो है राजस्थानी पाठक इण न वाड सू पढमी अर आ पोथी राजस्थानी पाठका सू सनेव अर आदर पासी ।

मुरलीधर व्यास

समापति

राजस्थानी भाषा साहित्य सम (प्रकाशको)

वीकानर

घर बिघ री

विद्यार्थी जीवण मे अग्रजे महाकवि लॉड टेनीसन री अमर कृति-ईनक आरदन पढ़ण रो मौकी मिल्यो । 'ईनक आरदन' 911 ओळ्या री एक लांबी कविता है, जिकी टेनीसन री सरबसेष्ठ रचनावा मे आकीज । इण कविता री सरळता भर इण री रोचक कथा रो म्हारे माथे इसो जादूई असर हुयो के म्है पद्यानुवाद करणो सरु कर दियो भर हा तिहाई भाग रो अनुवाद कर भी लियो । बाकी एव तिहाई खातर अठोन-बठोने आसगो भी तावयो, पण काम पार पड यो कोनी ।

केर विचार आयो व इनक आरदन री कथा नै जे मद्यबद्ध करन राजस्थानी पढारा गामी लाईज, तो घणो ठीक रसी । इण निजरिये सू अेक बीनणी बी बीन नाव स ईनक आरदन रो कनाव राजस्थानी पढारा भाग मेलण री चेष्टा करीजी है ।

म्हारो भुक्ताव इण रचना पासी क्यू हुयो, आ लिखण सू पली कवि बाबत राजस्थानी पाठका न ठूक में जाणकारी देवणी चाऊ हू जदपी अग्रजे पाठका खातर टेनीसन अणजाण्यो कोनी ।

6 अगस्त सन 1809 न अल्फ्रेड टेनीसन रो जसम लिबनशायर र एक गाव सॉमसबी में हुयो । 1828 मे महाकवि ट्रिनिटी कालेज कैम्ब्रिज मे भरती हुया जठ वा विश्वविद्यालय र कुलपति सू 'टिम्बकट्ट' कविता माथे सोन रो तुकमो पायो । 1830 म उणा री कवितावा रो पलो सग्रह छप्यो भर 1832 म दूजो सग्रह, भर दस बरमा पछे तीजो सग्रह । पण उणा री खास रचनावा हाल बाकी ही भर इण खास रचनावां माय सू एक ही "ईनक आरदन" जिकी सन् 1864 में छपी । सन् 1850 मे महाकवि बडसवय रो मुरगवास हुया उणा री जगां लॉड टेनीसन राज-कवि रें पद सू मुमोमित हुया । 6 अक्टूबर 1892 मे लॉड टेनीसन रो मुरगवास हुयो भर वेस्टमिस्टर ऐव मे महाकवि ब्राउनिंग री समाधी रें सहार इणा न समाधिस्थ कर्या ।

अंग्रेजी में एक वक़्त है—No woman is Chaste—कोई लुगाई सतवती कोनी। जिए देस री इसी मानता है के वठे सगळो लुगायीं आचरण—बाधरी है, वठ ईनक आरडन कविता म अनी जिसी लुगाई रो चरित्र मिल जिकी आपर सत र खाळण खातर वृत्त सनल्प है। इए कविता रो सगळो वातावरण धार्मिक भावनावा सू इसी धोतप्रोन है क पाठक न एकाएक विस्वास बधण में कठणार्ई पड क ओ चित्रम आयुए देसा रो है या भारत रो। 1864 म छप्पोडी इए कविता र सह मे कवि वताव क आ कथा सी जरसा पनी रो है। इए तर आज भू लगभग दो सी घरस पली रो चित्रम इए म आवयोज है।

कथा री गत पाठक न धीरो लाग सक, पण जे आ बात ध्यान में रव क दो सी घरसा पली समन्तर र विना उत्योड एव नावडिय रो चित्रम इए मे कोरयो है तो पाठका री निकायत आपेई मिट जावसी, कारण गावा री जीवण खापी चाल सू नई चाल अर दो सद्या पनी जद विधान पनतिया ई करतो हो, सहरी जीवण किसी चाल पवडी हो ?

इए कथा रो नायक ईनक आरडन गाव र एक भाभी रो डावडको है अर उए री घरमभीरता रो जिको चित्रम टेनीसस आक्यो है, भगवान में उए रो जिको अटूट भरोसो दरसायो है उएन दपता दया लाग क ओ आदमी तो भारत र किणो गाव र हुबणो चाईज। पण चू कि पक्कायत ई ईनक भारत रो वासी कोनी, तो इए सू आ मालम पड क भगवान म भरोसो राखलिया लोग खानी भारत मे ई नई भारत सू बार, अंग्रेजा र मुलक म भी वस। इणी तर अघविस्वासा न देखता केर पढारा र मन म सका उनक सक क रसा अघविस्वास अंग्रजा म समब कोनी, पण पाठक जे म्हारो नई तो टेनीसन रो जरूर भरोसो करै क वठ भी लोग अघ विस्वासा रा सिकार रया है। (अर आज भी है।)

इए कथा मे जिकी एव दूज खातर उत्सव री भावना है, प्रतिद्वन्द्वी खातर भी जिकी जान लडावण री भावना है वा ता पाठका रो हिरदो जीत्या बिना रैव कोनी।

ईनक आरडन री आ विसेसतावा अर राजस्थानी मे विदेसी साहित्य कथा न लावण र प्याल सू 'एक बीनणी दो बीन रो राजस्थानी म जलम हुयो अर आ पोथी आपर हाथ मे आई।

जठ वठ ई आपन पोथी रो कोई थळ दाय आव आप इए मे टेनीसन रो पिढाई रो प्रभाव समझोला, पण जे आपन पोथी पढता कठ ई नाक मे सळ

पालण री नोवत आयगी, तो इण मे राजस्थानी लिखार रा ई दोस है, कारण टेनीसन री आ कृति तो आख जगत मे घणो नाव पायोडी है भर टेनीसन, जिण रा अग्रेजी कविया मे सगळा सू घणा पढार है, उण री सागोपाग रचनावा मे आ रचना है ।

अत मे हू राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी), बीकानेर सारू आभार दरसावणो भ्हारो फरज समझू जिण री तरफ सू आ पोषी छपर आपरै हाथ न आई है ।

समाप्ति सू पली अर्द्धेय गुरुजी स्व० शिव बाळी सरकार री स्मरण जरूर करणो चाऊ जिणा र श्रीचरणा मे बठ बठ मनै इण ग्रंथ रँ अध्ययन री मौको मिल्यो भर आज हू इण न विस्तृत रूप मे राजस्थानी पाठका आगै राख सक्यो ।

श्रीलाल न० जोशी



अनुक्रम

क्रम

| | | |
|----|--------------------|-----|
| १ | टाबरा री रमत | १७ |
| २ | जवानी रो सूरज | २१ |
| ३ | ऊनी सूटर | २६ |
| ४ | नवो घर | ३१ |
| ५ | हेजल-बन मे | ३४ |
| ६ | ढील रो नकीटो | ३६ |
| ७ | अमोलस वचन | ३८ |
| ८ | अनी रो ब्याव | ४० |
| ९ | सुप रा सात बरस | ४२ |
| १० | सपनो | ५० |
| ११ | कमावण सातर | ५७ |
| १२ | अनासुरती मोकाण | ६१ |
| १३ | अरज | ६५ |
| १४ | स्याणा टाबर | ६६ |
| १५ | फिलिग बापू | ७२ |
| १६ | टाबरा री रळी | ७४ |
| १७ | कर हेजल-बन म | ७७ |
| १८ | अेक बरस बीतग्यो | ८६ |
| १९ | पाटा मजट | ९२ |
| २० | ईनक कठ रयग्यो | ९७ |
| २१ | पाछो घरे | १०६ |
| २२ | सराय म डेरो | ११४ |
| २३ | अ परा भी आपरा कोनी | ११७ |
| २४ | फेर मझरी | १२४ |
| २५ | आलरी सनेसो | १२८ |
| २६ | जात्र आयग्यो | १३७ |

आदरणीय गुरुजी
स्व० शिवकाळी सरकार
सू पायोडी
महाकवि टेनीसन री चीज
उणा नै ई भेट

धीताल न० जोशी

एक बीनणी दो बीन



टावरा री रमत

“ईनक, तन सरम धावणो चाईज ।”

“काई बात री ?”

“काई बात री ? याद कर, घवार ई भूलगयो ?”

“मन याद वरण री जरूरत बोनो । तू बठो-बठो याद करवा कर ।”

“ज” भाषा भनी साध पैनपोत इगु गुफा म भाषा ता भा त ररी के भेव दिन तू बीन बणनी, घर भेव तिन हू ।” कयर फिलिप भापर हाव हाथ मू ईनक री जीवणो खांपो हिलायो ।

“हाथ लगावण री काम बोनो, मूड मू बात कर ।” कयर ईनक भनी न भापर और भी नैडी तिरकाय ली ।

“घरे ईनक, घबडाई भाछी बानी । जे भणो घबडगी, ता हाथ बाई, पार जूता पहसी ।” कयर फिलिप ईनक र सामो भाव्यो क बा जूता री घमरी मू डरिपोक नई ।

ईनक भनी रें गळवापडी घाल्या उठो रया घर बी फिलिप न उथळो नई दियो । ईनक री लापरवाई मू फिलिप र बाज्जें म ताय लागती ही । बी भाष री जूतो उताव्यो घर हाथ मे लेयर ऊचो वर्यो ।

भनी री मूडो उतरग्यो । ईनक बोल्हो “भनी, तू डर ना । बकण दे फिलिप न ।”

“ईनक, तू सभाळर की बोल नी ? जे भेव चिपगो, तो तीन दिन पागो की मागसी नी ।” कयर फिलिप भापरी छाती न फूलायर तवडो दीसण री बोसीस करी ।

“जूत री चेप पार बाप रें, वो पारा जूता खासी । हू तो भेक री इक्कीस पाछी तेषू । म्हार चेपणियो भई घरती माय राम्यो ई बोनो । कयर ईनक थारी निजर मू फिलिप सामो भाव्यो, फेर पाछी चर री मुदा पलटर भनी सामन मुळकण लाग्यो ।

‘अरे कमल रा पून, म्हार बाप रा नाव लेव तू । म्हारो बाप बळचव्ही रो मालक, हजाक रुपिया खरख सावै तू अरे बापड माभी रो जायो । थारी म्हारी हैसियत म अनास पताळ रो आतरो । थार माथे दया माव तू थार साग रमू हू । जे तू नालायकी कर, तो काल सू तू अटें मत घाए । धनी म्हारी बीनगी है । म्हे दोनू रमसा । नीच बठ ई रो ।”

बाप री निंदा मुण्या ईनक लिलाड मे सळ घाल्या, पुरण्या पूनाई, धर धरी सू थोडो अळयो सिरकयो । ईनक रा बरण पुरता देवर फिलिप रो गरमी उतरण लागी । बी जूत आळ हाथ न हेटो कर लियो, पण भाप रो डर लुबावण खातर क्यो—‘कमीण रो जायो ।

ईनक बाल्यो—‘कमीण थारो बाप । वो बळचव्ही मू दिन रात भापो पाड जिवा । तालण मे खोटा सोल, धर भाट सू थोळा हुयोडो रात दिन भून हुव ज्यू रव । अबक ज म्हारें मरयोड बाप रो नाव लिया, तो म्हारो मुडो थार पुटगडा सू बाता करलो ।”

‘अरे नालायक’ म्हे जूतो हेटो कर लियो, जेव तू मुडो दयाळण लाग्यो ? दकणी म नाक दुबोयर मर तू ईनकडा ।’ कथर फिलिप धावो पावडा तार सिरक्या पण ईनक न ठा नई धाली । कारण फिलिप जाणतो के ईनक सबडो हो ।

फिलिप री बात रो उचळो देवतो ईनक बारयो, “स्याळ री मीत भाव जेव वो गाव म जाया कर । तन कुमत सूभी दे, तू म्हार सू बाथडो कर । तू मन ‘ईनकडो’ कव । तन ठा कोनी म्हारा नाव ‘ईनक आरडन है । तू है फिलिपियो ।’

‘अरे माभी रा छोरा, थारी मीत आयगी । म्हारो नाव फिलिप रे’, धर तू मन ‘फिलिपियो’ कव । आज तई इमे हठार नाव मन कण ई को बतळायो नी । जे अबक ‘फिलिपियो’ क्यो, ता पछ देख मत्रा ।” कथर फिलिप भापरो जूतो कर हाथ मे ऊचो उठायो ।

ईनक भी भापरो पण ममाळयो, पण अनाथ र पण म पनरखो कठ ? वो भापरी गरीबी माथ लजखाणो पडर रम्यो ।

‘ईनक री गरीबी री फिलिप पायदो उठायो— पण माथ मू जती काढण लाग्यो है । थार पाप ही कइई जूती परी हो ?’

ईनक र गेम आयली । वो अरी र पसवाड मू उठयो, धर फिलिप र कमीज री कालर आली ।

फिलिप बोल्हो—“हा, हा, पाडो कमीज । पर थारी ठा पडसी । म्हार बापूजी तन मू थारो लुणदी नई बणवाळ, तो म्हारो नाव फिलिप र कोनी ।”

फिलिप आ कारी धमकी दखाओ ही, मन मे तो वो जाणता हो क अ वाता बापूजी आग बवण री कोनी । ईनक न भी ठा ही क सिकायत बापूजी तई पूग कानी । पण फर भी वो कमीज फाड़नो ठीक नई समझ्यो, कारण इण म सिकायत नइ करण पर भी जाच पड़ताल हुवा भेद खुलण री सभावना लुबधोडी हो । इण कारण फिलिप री कालर छोडर ईनक बीरा दानू खाधा मचवाया—
“नालायक, फर तू म्हार बाप रा नाव नेव ।”

फिलिप सामो हाथ नइ उठाया—“और मचका म्हारा खाधा । करल, बार जच ज्यू करल । पसी अनी न पूछ, क बा धारी बीनणी हैक म्हारी । माडाणी धरणी दण ।” बसत बसते फिलिप ७ मुर मे कातरता आयगी अर नणा म नमी । पण बी आग्या काठी फाडी अर चर न बिकराळ बणायर कातरता अर नमी नै लुकावण री कोसोस करो ।

फिलिप री इण दसा माथे अनी रा हिया पसीज्यो । दाना न आमा सामा भूमा दखर अनी उठी । वा बोली—“अर, ४ म्हार खातर लडा ? ईनक, म्हार खातर ना लड, फिलिप, म्हार खातर ना लड । ४ दोनू स्याणा हो । ह धारी दाना री बीनणी हू ।” इया कयर अनी दाना र खाधा माथ आपरा बाजू मेल दिया, अर दोना र चरा माथे सू रीस रवाता हुयगी अर वा आपस म भेक बीज रो बुझी लिधा ।

ईनक बोह्यो—फिलिप, आज तो अनी म्हारा बीनणी है, काल धारी बणसी ।”

फिलिप इत म राजी हुयर बोल्हो—“मजूर है ।” पण फर बार चर रा भाव पलटग्या—“देख ईनक, काल फर तू काल माथे नई सिरकाय देव । जद अनी आपा री दाना री है ज्यू क आ आपर भूड सू स्वीकार, फर अबला धणियाप लगावणो ब्रदगरजी है ।”

“धारी दान साळ आना ठीक है । हू चाऊ क आपा न धारी धारी बीन बणनो चाईज, पण जद अनी री मोवणी मूरत देखू तो म्हारो मन लोभ म पड जाव ।” कयर ईनक अनी रो हाथ भालतो बोल्हो—अनी, रसोई भटपट उणा, मन काम जावणो है । अनी बोली, ‘आज तो ये दोनू आपस म राड मचावण लाग्या, साग सब्जी तो काईलाया कानी, माड म बिस्कुट पड या है अर काल री डबलरोटी है जिनी जिना मापण खावणी पडसी । घर मे चीज-बस्त तिसावण रो ता नांव ई सेव कोनी अर आपस म माथा फोड ।’ अनी कूडेई कूडेई पुरसर दोना र आगे प्लेटा मल दी । ईनक जीमण लाग्यो, पण फिलिप हाल गुमगुम हो । अनी बोली—फिलिप तू जीमे कोनी ? जीम फिलिप, म्हार हाथ री पुरस्याडी रसाई तन भाव कोनी ?”

फिलिप चुप ।

“ठीक है, ना जीम । लटवाई तो थारें सून ईनक करी ही, म्हार सून रीसाणो क्यूं हुयो ?” नयर अनी फिलिप री ठोड़ी भानी, अर वीर दरद भरवा नणा र सामी भावी ।

ईनक बोल्थो—“भाई फिलिप, तन थारी भाभी जीमाव, अर तू जीमे कोनी ।

जद फिलिप बोल्थो कानी तो अनी कयो—“ल आपा दोनू साग जीमा । वाल जीमसीक नई ? जे तू नई जीमसी, तो हू भी जीमू कोनी । मन भूलो राखणी चाव तो ना जीम ।”

अनी र भत्याग्रह आग फिलिप ढङ्गयो, अर वो अनी सामे जीमण लाग्यो । मन मे राजी भी हुयो वै अनी आज बीनणो ईनक री हुई तो वाई हुयो वीर साग तो जीमी कोनी । ईनक माभी री छोरो है वीर साग जीमण म धैनी न पक्कायत सून आवती हुवली । हू मालदार म्हारो चाव कळचक्री रो मालक ।

पण फिलिप पाछो विचार करयो क अ वाता तो म्है खाली मन न आवस दवण खातर करी है । असली बात तो भा है क म्हारो रूप, म्हारो कुळ, म्हारा नाभा, म्हारा पीसा कोइ अठ आडा आव कोनी । ईनक र पया म पगरबी कोनी, पूरिया बोधा-पुराणा, रवण तातर घर रो टापरियो कानी, न मा न कोई चाप, पण केर भी म्हारी बारी कदेई-सीक आव अर धो धेकलो सात सात मिना तई बीन वण, अर ह ई र मूड सामो भाकू । ई रो कारण ओ है क ईनक सबळो है, अर हू निमळो हू । हू मो जे ईनक वई डील मे लू ठो हुवतो, तो किसो ईनक न ढाडा अडण दवतो । एण लारल विचार रै सागे ई फिलिप री रीस उतरनी ।

समदर र बनार अेक छाटा साक बडरगाह, जिए रै पसवाडै अेक छाटो सोक गाव । उणी गाव रा अ तीनू टाबर आज सून सकडू बरसा पली समदर र बनार रमण न आवता । छोळा न उठती आवती अर बिलायीजती देखन किलकारमा मारता । आली माटी रा घर घालिया बणावता जिका छोळ माग लोप हुआवता । ब घरे जावती बगत भी नित रा घर घालिया बणावत आवता पण दूज दिन पाछा आवता जित नाव निसाण ई लावतो कोनी ।

समदर र पसवाड अेक साकडी गुफा म अ तीनू टाबर बीन बीनणी बण्या करता अर पूरो घरवार माडर दाठ कर ज्यू करता ।

एण तर बीन बीनणो वणता केई वरस बीतग्या । बीनणी अेक, अर बीन दा । कदेई वारा बारी सून बिना गडबड काम चालतो, ता कदेई हाथा पाई रो नौवत प्राप जावतो अर कई वरस वातग्या ।

भागर टाबरपण रो जाभरना बीतग्यो, अर जबानी र सरज आपरी लाली कानी ।

जवानी रो सूरज

वाळपण रो जाभरको खतम हुवण लाग्यो, अर जवानी र सूरज आपरी पत्ती किरण काढी । छोटो टावरिया समझणा हुवण लाग्या, अर वाळपण रा खेल भा छाट दिया । जिए अनी सू फिलिप अर ईनक नित हमेस मिलता, उण सू अब कदम काल मिलणो हुव । टाबरा री दुनिया यारी है । वाने सगळी वाता री छूट है, पण बढा हुआ सू वा छूट तारें छूट जाव, अर वारें अेक अेक पावड माथ निगराणी अर पौरा लागण साग जाव । इणी कारण जद वाळपण सू नीसर न टावर वय सधि मे हुव, ना तो टावर रवं अर ना पूरा जवान हुव तो व दिनडा दोरा कट । अब ना तो टावरपण आळो लाड माईत राखें, ना खेल कूद री इत्ती छूट देव ना मिलण भिटण री पैली जित्ती आजादी रव । दूज कानी, हरेक बात म टाकण, सक करणो, अर काम भोळावणो, ओ जाण माईत काई नवो घघो सोझया हुव ज्यू लसाव ।

ईनक आरडन अर फिलिप रे गुफा री रमत रा दिन भूल्या कोनी, अर बा दोना आपर मन म अेक बात ठाणी—अनी स ब्याव करणो है । पण अब आ बात किया पोर पड ? उण गुलाबी भोर रें साग अनी सू ब्याव दोना न असभव लागण लाग्या अर गुफा रा दिन जाण अेक सपनो हो, सपनो ।

जद कदेई अनी साग-मब्जी री दुकान माथ जावती, तो वा साग लिया पछें भी पोडी ताळ फालतू ई अूभी रैवती जे कदास ईनक अथवा फिलिप मिल जाव ता । अर वा माथ सू कोई कदेई सीक मिल भी जावतो । जद फिलिप मिलता, तो अनी श्रुज माथ सू काढती उण सू पली ई वो साग रा दाम चुकत कर देवतो । आधी रसाळ आपरी तरफ सू लेयर अनी री थेली अथवा छवडी या भाळी में घाल देवतो । कदेई कदेई अनी र डील रो स्पश भी हुजावतो, वाने इण स्पश रो सुख भलीकव लागतो । टावरपण मे इसो स्पश घणो ई मिल्या पण उण वगत इण री पूरा बीमन नई आकी ।

साग री दुकानदारण अेक बून्गे माजी ही । वा आपरी तरफ सू फिलिप अर अनी रें बिना व या, बीमनी रसाळ ताल देवती, अर अनी र पाळना थका फिलिप

उए माजी नै पीसा पक्काय देवतो । माजी दोना र सामी भावती—फिलिप अनी न कित्तो चाव, कित्तो कदर कर । अर इए रै साग माजी न आपरा व दिन याद आय जावता जेद उए री भी इए तर, नई, इए सू ई बसी कदर हुया करती, अर बा आल उठायर केई न साबळ देएण री किरपा ई नई करती । पए आज ? घोस्या गया आज कुए पूछ, अर बा साग सब्जी बेचर आप री पट पाळ ।

फिलिप रा बाप अब बूढो हुयग्यो, अर वी बळचक्की रा घधा फिलिप न सू प दियो । फिलिप जिस मीजी जीव न बळचक्की म भून वण्योडो रवणा ना तो बूढ हो अर ना आछो लागतो, पए रजगार चानू ता राखणा ई पड, मलेई काम दाय आवा चाव ना आवा ।

सह सह म फिलिप नै आ घधा माकळा अलर्या, पए मेयाअक इए म भी रस रो सघार हुयग्या । अनी री मा मादी पडगो, अर बळचक्की म पीसणो दवण रो काम अर अनी न पाती आयो । फिलिप री चक्की म पीपा लयर जावते ग्रेक बार तो अमी न साज आई, पए वाई करती, उए र सिवाय नड नडास म कोई दूजो चक्की भी तो ही नानी ।

सिझ्या री टम , अनी पीपो लयर आई । अनी सरमाई, माथ ऊपर पीप र कारण, फिलिप सरमाया, घाट भू भूत हुयोडा हुवण र कारण । एण खर, फिलिप भट भागन अनी रो पीपा उतरायो अर वो अनी री हाफनी छाती सामो रस लीन हुपर देवतो रया ।

“पीपो तोन” अनी बोली ।

‘तानणो पाई है ? आटो पीस्याया त्यार पड थो है । गऊ ऊ धाय दे, अर घाट सू थारा पीपो भरल ।’ कयर फिलिप वी न इस्टूल माथ बठण रो इसारो कर्यो—“इत्ती थोडा उतावळ है, हाल तो सास इ पूत्याडो है ।

“आ बात तो ठीक है ।’ इया कयर अनी इस्टूल माथ बठण लागी, अर फिलिप भट इस्टूल न आपर हाथ सू पूछर घाट री त साफ करा ।

गुलाबी बाळपण री बाता न चीतार न दाना रा चरा इए तर उतरग्या जाण कोई जिनस गममी हुव । बीच बीच म जेद दूजा थायक आवता ता फिलिप वान भट निपटायर पाछा भेजण री चेस्टा करतो, पए थायक भी तो इ तान हा अर इ साना री बारता प्रम बारना, मे वान निलचम्पी ही । फिलिप—अनी म, जवान हुया पछ जनता म, प्रम प्रवासण रो कोई विसेस अवसर नइ आयो, पए लफाफो देवर मजमून मापगिया लोगा सू इत्ती बात भी छानी किया रवती, इए कारण घाटो लवण नै अथवा गऊ देवण न आवण आटा लोग फिलिप र काढण पर भी,

आपरो ढीठाई रं पाए, अरे दो िट वेसी ठर जावता, अर दोना नं तिरछी निजरा देवता, जिना वान खारा जर लागना ।

घोडी ताळ मे अनी ऊमी हुयगी, अर बी गवा र बराबर आपर पीप मे घाटो भर लियो । फिलिप कयो—“अनी, तू हाल ई बिस्ती भोळी है, जिती टाबर पकी ही गवा र बराबर घाट री ऊचाई राग्या सू तोल मे कम पड । पीपो बाढो भर ।”

अनी भर लियो । फिलिप सेर सवा सेर घाटो ऊपर सू घालन पीपो ठसाठस, खू द खू द भर दिया ।

अनी बोली—“फिलिप घाटो वेसी है । इया घारी चकरी कित्ताक दिन चालसी ? घर म घाटो साया बिया पार पडसी ?”

फिलिप बाई बबण लाग्या, का कोई पीपो लेयर आयग्यो । भट पीपो तोलर फिलिप बीन रवान करया । फर कयो—‘अनी । घार पीप म जे पीव भर घाटो वेसी भी घाय जाव, तो इत्त मे म्हारी ह्याळ्या टिक कोनी । जे साची पूछ तो मन घाज इत्ती खुसी हुई है व म्हारो काळजो नव-नव ताळ बूद है । भर देख अनी, म्हारी बात सुण, आग सारू भी घाटो पीसावणा हुवं तो तू ई घाया कर ।”

अनी बोली कोनी ।

‘क्यू सुणीज, अनी ?’

‘‘अरे सुणीज बाबा, सुणीज । ल बोल, पीसा कित्ता हुया ?’

‘पीसा ? काय रा ?’

‘पीसाइ रा ।’

‘‘काई पीसाई रा ?’

‘‘म्हारा गऊ ।’

‘‘घारा गऊ तो हाल अणपीसिया ई पड्या है । मुफ्त रा पीसा किया लेऊ, बोल अनी ।’ कयर फिनिर प्रेम री निजर स अनी सामो भाक्यो ।

अनी पीपो ऊचण लागी । फिलिप कयो—“अनी, रात पडगी है, अकेली बठ जासी ? ल, चाल, हू पीपा पू चाय दू ।’

‘नई फिलिप, तन फोडा को घालू नी ।’ कयर अनी पीपो आपेई ऊच लियो, कारण रात री बेळा हुवता यका भी बीन फिलिप र साथ आपरो गळी म जावण बिच्च अकेलो जावणो बेहतर साम्यो । गळी रा लोग इसा निमाणा है व सचठा रव ई कोनी । बिना बात ई ब वाता बणावता रव, जिको बात हुयां पछ ता पूछणो ई काई ? आगळी देखण जिती जगा लाग्या पछ तो व पग पसारता नाळ को लगाव नी ।

फिलिप देखो—सायद अनी ऊपरन मन सू रकारो करती हुवती पण जद अनी साफ नकारो कर दियो, तो फिलिप र जीव रो सगळो हुसास कपूर बगाम्यो, घर बो फेर, घापरी चट्टी री ठकयोडी वारी मोलर बागी बिचाळ बठग्या, घर जित्त तई अनी दोसती रई, बीन देखतो रयो ।

जद गुफा मे घर बसावता तो ईनक हिय री अन्डाई सू धीगाण बीन बगर बठ जावतो, पण भव अनी र घर बन कर निकळती वेळा भी बिचार भाव क लोग काई समझसी । पण ईनक र मन म अनी खातर प्रेम री प्रवाह इतो तकडो हो, क वो भपण घापन बाबू म नई राग सक्यो, घर एक दिन जद अनी जीम-जूटर घर भाग ताबडो खावती हो, ईनक बठ जाय पुग्यो । अनी माय सू पीडो खँच्यो घर ईनक न बठण खातर कयो । घणा दिना सू मित्यो हो इण कारण ईनक न सस हो क अनी रख मिला-सीक नई, पण अनी कयो— घर ईनक तू तो दीस ई कोनी ! बठई परतेस रवण लाग्यो क अठ ई है । जबरो निरमोई हुयो ।”

अनी री भपणायत-मरी बात सू ईनक घणो राजी हुयो । बोल्थो—“अनी परदेस तो को गयो नी, पण मन मे सको आयग्या ।”

अनी री मा रसोई रा बासण साफ करती ही । बीं पूछ्यो—“अनी, कुण है ?”

अनी कयो—“मा, तू जाण कोनी । ई रो नाव ईनक है, म्हे टावरपण म समदर र बनार घणा ई भेळ रम्भोडा हा । अन् बडो हुयग्या इण सू अठ भावतो अरे सक्, घर समदर-बनार ॥ जाऊ कोनी ।”

मा बोली—“ईनक सक् री काई बात है बटा, भापा कर अठ ।”

फेर मा माय जावर गाभा धोवण लागगी । आवाज आई—“अरे भोगरी कठ गई बेटी ? बाळटी म थोडो पाणी तो पाल ।”

। अनी बाळटी भरन पाछी आयगी अर ईनक सू कोनी—“मा ईनक, भापा ताबड मे वारें बेठर दा मिट वाता करा । कित्ता मइना सू देख्या है आज आए बरसा रा बरस वतीत हुयग्या हुब ज्यू लखाव ।”

ईनक कैयो—“तू बार चाल, हू आऊ” अर वा अनी री मा रे हाथ माय सू लेयर आप कपडा धोवण लाग्यो । माजी मासा पाल्यो पण ईनक ध्यान नई दियो । दस-पंद्र मिट मे सगळा गामा घो धावायार तणी माय सुकोय दिया ।

। मा बोली—“ईनक बार हाथ मे तो फुरती घणी । म्हे पचास बरस, लेय लिया, पण बार जिसो चणक मणक टावर आज तई देख्यो कोनी । तू मन पणो आछो लाग । अठ आवण म सकण रो काम कोनी । बार जब जद ई मायजाया कर ।”

ईनक चार गयो जित्त तो अनी दस हेला मार दिया । मा र मूडें सू ईनक री खुलर बडाई सुएर अनी र हिरद री बळी उळी विगसगी । वो ईनक वास्तु चाय वणाई अर सामन राखती अनी बोली—‘ ले चाय पी । (फर घोर सीक) टावरपण मे तो तन कूडेई-कूडेई चाय पावती, पण आज साचेइ पाऊ ।’

मा आपर प्याल मे मस्त ही, अर अनी री गुपताऊ बात री बीन ठा नई पड़ी ।

जदपी अनी ईनक रें हिरद मे रात दिन बसती पण वो माभी रो वेटा सगळी वाता सू दीन हीन हो । जे कदास भाग जोर देव, अर अनी जिसी रूपाळी छोरी ईनक सू ब्याव रो हकारो भर लेव, तो बम सू बम घर रो घर तो चाईज छोटी मोटी, कोभो भू डो, घाळखो तो हुवणो चाइज । घर विना घरघाळी न राख ई कठ ? भाड रो घर जिको भाडे रो । पारको सो पारको । पारक मौल नू आपरी भू पडी ई चोखी ।

अनी रें प्यार सू प्रेरणा लेयन ईनक अरेक बोपारी नें जाज माथ काम करण लागयो । अरेक गवार छोरो, पण आपरी दिपटी मे इत्तो सावधान क साल भर नाकरी करी जिक मे कटेई अरेक मिट भी मौडो पूगण रो काम कोनी । ना कदेई हाथ माथ हाथ धर्या बठो रया । पण फेर भी जित्ता पीसा बीरा दूजा सगळिया बमावता, जिका क दिन भर म घटा नो घटा काम करता, वित्ता ई पीसा ईनक न मिलता । साल भर मे फालतू री अरेक वाडी भी खरची कोनी, अर ईनक आपरी अरेक धरू नाव खरीद ती ।

ईनक मजरी पूरी सूरी लेवतो, पण दूसर खेवटिया ज्यू बो कम पीसा कयर सारें सू भगडो नइ करतो, इण कारण ईनक री पठ चोखी जमगी अर बेघडक हुयन लोग उणरी नाव माथ टूकता । इणर सिवाय ईनक री काम कुसळता भी सगळें विरयात हुयगी । समदर चाव आभो धूवगी छोळा भरतो हुव, पण ईनक री काळजो तिल भर भी नई हिल । वो आपरो काम निडर हुयन करतो रव । तीन मौका तो इसा हुया क सागर न आपर इण हिमताळू बट माथ रीस आयगी, अर ईनक सायद ठेट समदर र पीद पू चग्यो हुवला । पण इनक घबरायो कोनी, अर फर छाळा साग रमत करण लाग्यो । इण जळ परीधा सू ईनक री काम कुसळता मे जाण सवा सवा लाप रा तीन मोती जडीजम्या, अर लोगा न पक्को भरोसो हुय्यो क ईनक री नाव मे जान माल रो खतरो कोनी ।

आपरी नाव मे ईनक मछल्या पकडण सारू जाळ, जेवडो, काटो अर छवडो तथा थोडो ओसण्योडो आटो भी राखतो । मौको देख-देखर आट री गोळी समदर मे पकतो जावतो अर इण तर दिन भर मे केई छवड्या भर लेवतो ।

अंक साधारण छोरो, जिको बाळपण मे ई, बाप मरण कारण भनाप हुयग्यो हो, घापरी मनत अर ईमानदारी र परताप सगळ ओळखीजण लागग्यो । अळग अळग तई बो चक्कर वाढतो माल पू चावतो अर मळल्या वेवतो । अंक वार जिको सकस ईनक रो शायक हुयग्यो, बो दूज आदमी वन दूवण रो नाव नई लेवतो, इसी ईनक री सादगी ही ।

पण समदर मे पग घर्या पत्नी, जळ देवता न घोब देयर ईनक घापरी नाब खोसतो । समदर माघ पूगण आळो सगळा सू पत्नी खेवटियो ईनक ई हुया करतो । सूरज ऊग्या पत्नी घर सू नीसरयोडो ईनक सूरज विसू ज्या पाछो बावडतो, अर घापरी दिन भर री सफल जात्रा अर कमाई कारण वरुण देवता न फेर घोब देवतो ।

इण तर इक्कीस बरस पूरा करया पत्नी ई ईनक र जीवण री अंक साथ पूरीजगी—अ नी खातर घर ।

साकडी गळी, जिकी कळषक्की कानी चढतो ही, खीर आधीट ईनक घापरो छोटोसोक, साफ सुपरो घर चिणायो । जद चिणाई सम्पूरण हुयगी, जोड्या, खूटया लागगी, तो सोवण र कमर म अंक पिलग सायर विछायो अर सजायो । रसोई खातर नवा बासण बिसाया अर फेर अ नी र घरे गयो ।

‘अरे ईनक रीसाणो हुयग्यो काई ? कदेई भावण रो ई काम कोनी ?’ ईनक न देखतै ई बारण सू धार भायर अ नी बोली ।

रसोई माघ सू अ नी री मा भी बार आई । कथो—“अ नी देव जिको ओळभो हू भी देऊ ।’

अ नी री मा ओळभो दियो जित्त अ नी पसबाडल कमर रो बारणो खोल दियो घर माचो ढाळ दियो ।

ईनक र मूळ माघ चमक, होट खुल नई, अणदीठ रूप मे हिल, पण फेर भी मालम पड क ईनक काई वरणो बाव, पण बीसू वईज कोनी ।

अ नी ईनक रो हाथ फालर कया ‘बठ तो सरी, इत्ता दिना सू तो भायो है अर हाल ऊभो रो ऊभो ई है । कथू ऊभा पणा पाछो जावणो है काई ?’

ईनक वठग्यो ।

अ नी माघ गई अर दो कप चाय न तीन प्याला म घालर तीना सातर लिप्राई ।

‘मठ फाळ जग म्हारो जीव इसो सोरो हुव क काई बताऊ ।’ कयर ईनक अ नी र दुळत रूप हेट बूब माडदी ।

हाथ म उठायोडो कप पसवाडली तिपाई माथै मेलतो अनी बोली—“भूठ, सरासर भूठ । अठ भाव जद तू इया समझै क थारा हीरा पन्ना कोई तोड लेती । कबूतर जाळ सू डर ज्यू तू अठै भावतो डर ।”

अनी री मा बोली, “अरे ईनक, बता तो सरी बता, इत्ता दिन भायो क्यू कोनी लाडी ?”

“भावण री तो सदई सोनू । अनी सू मिलण री अर थार दरसणा री लालसा तो हरदम रव ”

“केर बूड बोल, केर कूड । अरे ईनक, थारी बूड बोलण री भादत हाल गई कोनी ।”

‘हाल’ सबद र मरम न ईनक अर अनी समझर च्यार भाव्या करन मुळवथा । अनी री मा न ठा नई क ईण सबद रो गुफा भाळ दिना सू तालका हो । पण मा इण रो मरम जाणन री चेस्टा भी नई करी ।

केर मास्टर इस्कूल रें छोर न घमकाव ज्यू अनी घमकावणी अवाज मे बोली —“तो बता इत्ता दिन भायो क्यू कोनी । ठीक बता ।”

“इत्ता दिन कमठाणो चालतो हो । काल सम्पूरण हुयो है ।” कयर ईनक सोरप सू छाती ऊची करी ।

“तो तू अजकाल कमठाण लागण लाग्यो ! पत्नी तो म्है सुणी तै घर भाव लेयली अर थारो काम भाछो चालण लाग्यो । खर, कोई बात कोनी । काम करणो चाईज भलेई किसो ई हुबो ।” कयर ईनक रें खातर बीर चर माथै हमदरदी ब्यापगी ।

“तू समझी कोनी ।” ईनक कयो । “नाव सू पीसा कमायर तो म्है घर चिणायो ई है ।”

“हू ईनक,” कयर अनी माच सू उछळी, अर बी उठर ईनक रा दोनू खाधा भाल लिया । हरल इत्तो हुयो जाण अनी रो भापरो घर चिणीज्यो हुव ।

मा बोली—“अ तो घणा मागळिक समाचार सुणाया । जीव सोरो हुय्यो ।” केर चाय रो प्यालो उठायती बोली—“अरे, भा ठडी हुव है नी चाय ।”

अनी बोली—“मा, फर तो ई खुसी म अक चाय और बणा । अच्यया देल, चाय नई, काफी बणा, कढक ।”

मा गई ।

दोनू अक बीज रें सामा भाकता रेंया अर बराबरी रो आणद छूटता रया । छेवट अनी र गाता माय लाज रो तालो छायागी, अर बी नण नीचा कर लिया ।

दोनों अणबोल बठा रया। पण ओ अणबोल वातावरण भी हिरदा नें गुदगुदावण आळो हो। अनी फेर याडी तिरछी आस उठाइ, पण ईनक हाल सामा भाकतो हो, इण कारण अनी पाछी आस हटी बरलो।

ईनक काई बचण रातर मूटो खोलण ई लाग्यो का अनी रो मा आयर बोली— 'बाफी म राठ कम तो वो घलाव नी ?'

बात खाट रो ही, पण अवार ईनक न खारी लागी। तो ई वो बिना दरसाया बोल्यो— 'कम नई पूरी हुवणी चाईज।'।

'तो ठीक है वेटा, भजकात लोग कमती रो फसन थारी लगाव।' कयर बा पाछी माय गई परी।

ईनक बयो— "अनी, म्हारो घर देखण न तो चाल।"

ईत्ती ताळ अणबोल रैवण रो बोझो अनी माय इत्तो पड या जाए हाल ई बा सरम रो तळाई मे ह्म्याडी हुव। यीर मू ड मू इत्तो ई नीसरयो— 'चालसू।'।

'कद चालसी ?'

'जद भेकदम त्यार हुआसी।

'त्यार हे अनी, भेकदम त्यार है।'।

तू अबकाळ आसी जद चालसू। म्हारी मा भी चालसी।'

'हू तो बाल ई भा जाऊ थारो हुकम चाईज।'।

'काल तो नई, आगल हप्त।

'आगल हप्त बयू ?'

'काल घर म मजूर लागसी। मरामत भर पोताई करसी।' कयर अणमावत हरब न चुकावण खातर अनी आपरा दोनों हाथ छाती आडा देयर जॉस बणाय लियो।

मा बाफी लाई, भर ईनक बार साग प्यानो पियो। काई तो फाफी कडक ही काई अनी रो बाता र क म माठास इक्को हुवण कारण बाफी और भी बढवी लागी।

ईनक भूभा हुयो।

'फेर आए ईनक। अनी बोली।

'फर आए ईनक। अनी रो मा बोली। ईनक गयो।

गली र खूण कन मुह या जित्त अनी बी रो पीठ सामा आवती रई।

ऊनी सूटर

अनी आपर कमर म बठी सूटर बुणती ही, का फिलिप आपर लार ऊभग्यो । बीरी छया जद अनी र हाया माथे पडो ता वा लारै भाकी । अनी बोनी—“अरे फिलिप ! तू तो चोरा रो ई उस्ताद है । ठा ई घाली कोनी क वण आपर ऊभग्यो । बठ, आ खुरसी का वास्त है ?”

फिलिप बठग्यो । बोल्यो—“अनी, थारी थारीगरी तो म्हेँ आज देखी । इसा सूटर बुणना आव तन । अक तो म्हार खातर ई बुण सक ।”

“अर थार खातर अक नइ दो । कठई ऊन ई लाव तू ।” बवती गई, घर सझाया चलावती गई ।

“देख अनी, मन तो ऊन री पारख कोनी । अ ल दाम, अर तू यडिया देखर ऊन लिघाए ।” कयर फिलिप दाम बाढ़या ।

अनी बोली—“फिलिप दाम रवण द ।”

“बस अनी नटगी । ‘दाम रवण द’ रो मतलब है—इत्तवार ।’ फिलिप रो मू डा उतरग्यो ।

‘इत्तवार ?’ अनी इचरज सू बोली । मन ठा कोनी क तन इत्तवार ई इत्तवार क्यू सूझै है । हू तो या चाऊ हू क ।”

“वाई चाव, बोल अनी । थारो मैनताना ? बो भी दबणन त्पार हू ।”

अनी रा बरण फुरग्या ।—“वा रे फिलिप, हू मोल सूटर बुणती किम् हू । मजूरी लेऊ, अर पर थार बन ?” कयर अनी थोडो मू डो पार लियो ।

‘अनी तू रुठगी ? आ आदत थार म पली को हो नी । पली तो तू रुठयोडा न प्राप्त म राजी करावती ।’ कयर फिलिप अनी र चर सामो भावयो घर या मुळवगी ।

फिलिप कयो—‘तो अनी, तू वाई बवती ही ।

वा बात गई फिलिप । अब जे हू कय मो हू, तो ई सगलो मठ मरग्यो । कयर अनी निजर नीची करली ।

‘पण अनी, तन कवणी पटसी । फिलिप बोल्यो ।

“ठर, थार खातर चाय वणवाळ ।’ कयर वी माय जायर मा न क्यो—
 “कळचक्की धाळो हे फिलिप । चोगी चाय वणा ।”

अनी वाली— ‘फिलिप”, फर चुप रयगी ।

हा अनी, बोल अनी बोल ।’

‘जे थार पुरो आव ता तू म्हार हाथ मायला सूटर ई पर लिय ।’

हैं अनी ?’ कयर फिलिप रो मू ढो रासणी मू चमकण लागया ।

अनी नस नीची बरन बुणाई करती रई ।

पण म्हारा इसा भाग कठ क थार हाथ रो सूटर पर । अचट्या, तू आ
 तो बता क ओ सूटर कीर खातर बुण है ?”

अनी क्यो— ‘ओ सवाल ना पूछ । हाल ता म्हें पाळायो है । थारो नाप देय
 द, भर उण हिसाय मू त्यार हुजासी ।

अनी नाप लेवण खातर ऊभी हुई । फिलिप बीर हाथ माय मू कीतो सेयर
 आपेई आपरो माप कर लियो । अनी चायती क बा खुद मापर फिलिप न थोडो
 मौको देव पण फिलिप इण मौक न गमाय दियो ।

अनी री मा नवा कप प्लेटा म चाय घालर साई । पण फिलिप आपर हाथ
 मू चाय त्यार कर्या करतो इण कारण भली चोगी नई लागी, फेर भी अनी र
 भर री ही भर अनी र कन बठर पीवणी ही, इण कारण इसी सवाद लागी क
 प्राण जाण इसी कदेई पी ई नई हुव ।

फिलिप क्यो— ‘हा तो अनी, सूटर बंद तई त्यार हुजासी ?”

अनी— पत्नी तू डिजाइन तो बता, हाल ता खाली पट्टी पीळायोडी है ।”

फिलिप— ‘अनी, काल तो हू बार जा रयो हू । आठ दस दिना मू पाछो
 भासू, जद तन डिजाइन देखाळसू । भर नई तो तू बार जच जितो ई कर दियो ।
 थार हाथ रो सूटर ई म्हार खातर रोम री बात है । डिजाइन री तो कोई खास
 बात कोनी ।”

अनी ताना दबती वाली— ‘हा, पास कोनी । अबार तो खास बात कोनी,
 फेर बुणी बुणाई चीज म काण कसर काढीज, बा मन परसन कोनी ।”

फिलिप गयो परे ।

नवी घर

आपर वण माफक ईनक आयो अर अनी तथा वीरी मा नै आपरो घर देखाळण खातर लेयग्यो । नव घर मे पग घरती अनी इण तर हरखी-सरमी जाण नवी बीनणी आपन सासर मे परवेस करती हुवै ।

छोटोसोक घर, डब्बी री जात । थोडो सोक चीजा, पण विडावोपिडावो बिल्कूल नई, सगळी ठोड ठिकाण जघायोडी ।

हवादार रसोईघर, पछेनी माथ बासण, धुमो निकळण खातर बिमनी अर समान राखण खातर अलमारी ।

फेर आगीन गया तो सोवणघर । आछोसाक पिलग, गीवो—सुजनी सगाभाडा । नीच दरी बिछायोडी । हवादार, बडो कमरो । अनी री मा बोली—
'मकान बीत वडिया वणवायो है ।'

अनी भीत माथ सजायोडी तस्वीरा देवण लागगी । मा रसोईघर मे गई परी—“मन तो रसोईघर घणो चोखा साम्यो ।” इसी तई आई जिको थाकेलो आयग्यो । बा सोवणघर री दरी रसोईघर मे बिछायर सोयगी ।

‘फाटुवा मू मालम पड जाण केई जाज र कपतान रा कमरो है ।’ कयर अनी कमर री च्याह भीता माथ, धुमर, अेक निजर फकी ।

‘पिलग माथ बठ अनी ।’ ईनक थयो ।

‘मकान तो म्हार घणो दाय आयो है ।’ अनी मुण्णी घणमुण्णी करती बोली ।

‘पण ऊमी कितीव ताळ रंती ?’ कयर चीनिजरी खातर ईनक सामो भांवयो, पण अनी नई मक्की ।

‘अनी मुण्णी कानी ।’

‘वाई मुण्णी, वाई कवे वाल । अनी इतरापर बाता ।

‘माथ ऊपर बठ जा, ऊमी कितीव ताळ रंती ?’

अनी मू डो फोरती बोली—“भापा बठा-बठावा कौनी ।”

“या बात ?” ईनक सामन फुरता बोल्यो । ‘आपेई नई बठसी, तो लोग हाथ भालर बठाए देसी ।

“इत्ती हीमत है लाग़ा री ? हाथ भालसी जद हू आपेई निवट लेगू । तू बयू फिकर कर ईनक ? बयर अनी मुठबनी ।

‘मन ठा पडगो तू आपेई को बठनी ।’ बयर ईनक ऊपर—नीच नस हिलाई ।

‘अरे ईनक तू तो अ तरजामी बलुगो दीस ।” बयर अनी हसी ।

इनक बयो—मन डर लाग़ा अनी, क जे हू तन हाथ भालर बठाएगू तो तू कोई और तर गई समझन ।

‘और तर तो समझ गू ई । हाथ भालर बठावण रा बायदो धोने ई है ।”

‘पण अनी हू बायदो भण्योडो जानी । जद नाव बेई धार माटी म फम जाय तो लचर पाणी म कर निवा कर । तन भी लचर बठाएनी पडनी ।’

“ठीक है तू मन लकनी री नाव समझ ?”

‘नई अनी या बात कोनी तन तो तू समझू ज्यू ई समझू हू ।’ बयर ईनक आदया मीचर काळज री हूक देगाली । फेर बयो—अनी देख हू आदया मीचू जित्त जे तू स्याणी है तो, पिलग ऊपर बठ जासी, अर ।”

‘अर गली हू तो ऊभी रमू । बयू ? या ई बात है नी ? हू ता गली ई हू । बयर अनी ईनक र सामन भावी क बाल अब माई करसी ।’

“गनी है जद तो हाथ भालर बठावणी पडसी ।’ बयर ईनक अनी रा दोनू खाया भालर पिलग माथ बठाए दी । अनी न ईनक री स्पर्श सुवायो, पण या भाव लुकावती योनी—‘इमा जबरनस्ती करणी ?”

“नई अनी, तन ऊभा किया रामू ?”

‘अच्छया बठगी अब बान काइ कबणो घाय है ?’

‘बताऊ ?’

‘हा बता ।’

‘तू रीस कर लसी ।

‘रीस करण री बात कव बयू ?’

‘रीस करण री तो कोनी ।

‘तो फेर हू तन गली लागी जिका रीस कर लेस ।

‘हू भी ऊमा ऊमो यकग्यो ।’

“इ म रास री बाई बात है ।”

‘तू कव तो बठ जाऊ ?’

“म्हें किसी तन ऊभो रैवण री सजा दी ही ।”

“तू कव तो पिलग ऊपर बैठ जाऊ ।”

“बा रे ईनक ! घर थारो, पिलग थारो, आ कोई मन पूछण री बात है ।
तू बैठसी तो म्हारे पाल्योडो थोडो ई रंसी ।”

“अनी, देख तै रीस करली ।” कँयर दूसरे पासी भाक्यो, तो रसोई रो
किंवाड हिलतो दीस्यो । ईनक पिलग तू अक पावडो अलगो सिरक्यो ।

माजी खलारो करन उठगी । अनी पिलग तू हेटी उतरन मा बन आयगी ।

ईनक कयो—“मन थारी खातरी करणी चाईजती ही, पण हाल बिसावण
पूरी हुई कोनी, इण कारण मन माफ करोना । अनी, भबकाल तू आसी जद चूक
ई पडली ।”

“कोई बात कोनी, कोई बात कोनी, मकान बीत माछो बग्यावो है, घणो
शय आयो है । परमात्मा करै थारो ब्याव बगो हुब, अर तू इण घर म सुख म
बस ।” कँयर भा वेटी वारै निकळगी, अर ईनक थोडो दूर पू चावगन आयर पाछा
मापर घरे गयो परो ।

हेजल-बन में

सरदी रो मौसम । छुट्टी रो दिन । हेजल री झाड़ या फला सू लड़ाखूब । इए तर रा मौका जवान जोडा हाथ सू कद जोबए व ? हेड री हेड हेजल र जगल कानी दूरया हाथा म पेला भयबा छावडूया लियोडा, पळ तोडर भेळा करए खातर ।

इए मीर ईनक न भी जावए रो रळी आई । एए प्रेकलो ईनक जाव तो जावणो भयवारय । सोच्यो—अनी न साथ लेयलू एए वा हालक नई हाल काई ठा । चालर पूछ तो सरी । पूछए मे तो कोई आन कानी ।

अनी र घरे आयो । अनी कपडा बदळर माथ म बागसियो केरती ही ।

‘म्हार आवण री पत्नी सू ठा पढगी काई अनी ?’ ईनक पूछ या ।

‘नई तो ।’ अनी उयलो दियो । ‘क्यू कोई खास बात ?’

‘खास बात तो कोनी, एए इया खास ई हे । हेवल र जगल मे फळ पाकया ।

■ दल, जवान धणी जुगाया रा टोळा जाव । कपर ईनक चक्यो ।

‘आपा काई करा ईनक ?’ अनी पूछ या ।

‘तू म्हार साथ हालमी ?’ ईनक अनिस्व र भाव सू पूछ यो ।

एए तू तां कव नी धणी जुगाया रा टोळा जाव । केर आपा रो हालणो बठ तई ठीक रसी ?’ कवती कवनी आप रा केव मुठभापर बागसियो आळ म मेल दियो, घर फराक री कालर सीधी करी ।

ईनक कयो—‘अनी, तू तां बात भाल धणी । आ काई जल्दरी पोडो ई है क अ सगळा धणी जुगाई ई है । केई आरा दई आर्य जातर प्रेम मृत न व्याव मृत म फोरए आळा हुवला ।

अनी र गाला माथ लनाई पसरयो — तो ईनक चारो बिचार पड़ो है ?’

‘पड़ म कोई कसर है ? चानणो है जद ई तो हू आयो ■ ।

‘अरे नई चारी चकन बीत मोगी है । चालए र बिचार री बात वो पूछ नी । हू पूछ बा बात । कपर अनी सामी माली भई बा’ रा मननव अपेई समझ जा ।

“भर अनी, आ मन पूछण री बात है ? बिचार तो थारा काम देसी । म्हारो बिचार ह्या काई थार पडै ? हू तो आज ई त्यार हू । अचार, इण घडी ।”

अनी आपरा जूता भडवाया । खूटी माथ सू थलो उतार्यो दुरण लागी, इत म मा धायगी । “म्हे हेजल रै जगल म जावा । थार खातर फल लावण साह धेलो लेलियो । तू हालसी काई मा ?” अनी नौरो कादर उबला लिया पली ई बारण धानी बधगी ।

“हू हानू कोनी, तू जा घटी” अ बोल जद ईनक क बाना पड्या तो जीव जम्प्यो ।

दोनू जणा छेकात म, भाडा र भूमका बिचाल बठग्या ।

ईनक पूछ्यो—“अनी म्हार सागै आवण मे थारो जीव दुख तो को पायो नी ?”

अनी बयो—“थार मन मे दुख री भावना उपजी है, इण सू मालम पडै क थार मन मे दुख उपज्या है । ठीक है नी ईनक ?”

“तू आ बता, क दुख न नू तो देयर कोई आपर साग लाव लेजाव ? थारै माया जे मन दुख हुयतो, तो हू तन लेवण न थार धरे क्यू आवतो ? थार बट्या आज मन इतो सुख हुयो है क जिसो आज तई कदेई नई हुयो । इण सुख र ओक पलक माथ हू सगळी ऊमर बारण न त्यार हू ।”

इया कपर ईनक अनी री सायल री तनियो बणावन उण माथ आपरो माया टेकर सोयग्यो । जद दोना रा नण आपस म टकराया तो अनी सरमायगी, भर ईनक उण री इण सरमायोडी छिव सू टपकण आळ रस न पीवनो रयो । कर ईनक बोल्यो—“अनी, तू नाराज तो को हुई नी ?”

ईनक री ठीडी आलती अनी वाली—“ईनक, तन म्हारी नाराजगी रो इतो डर लागै, हू कदेई थार माथ नाराज हुई काई ?”

माथ हट अनी री सायल, ठीडी माथ अनी रो हाथ, आख्या प्राग अनी री मनमोवनी मूरत भर बाना म उण रा मोठा बाल—ईनक सावेई याल हुयग्यो । उण सू बसा सुखी जीव दुनिया मे कोई नई हुयो हुसी । बेसी काई, कोई उण सू भायो सुखी भी नई हुवलो—आ भावा म ईनक आतम बिभोर हो ।

बो बठी हुयो । अनी रा दोनू हाथ आपर हाथा मे आतर प्रेम सू दबाया भर उणी जोस सू अनी भी ईनक रा हाथ दबाया ।

ढील रो नकीटो

फिलिप रो बाप केई दिना सू मादो । मादो काई, राट भात्या पढ्यो हो । फिलिप कलबही जावणो छोड दियो । आपरो घूमणो फिरणो बंद कर दियो । बाप र हीड चाकरी म रात दिन भेक कर दिया पण आराम नई आयो ।

आज फिलिप रो चित की उड्ड उड्ड सत्तायो । बाप माग पाणी तो भत्ताव दारु । माग सत तो भत्ताव पीसा ।

जवान जोडा न हेजल म जावता देखर फिलिप न रली आई—हू भी जाऊ, अनी न साथ लेयर ।

बो अनी र घर गया पण मालम पडी क बा हेजल मे गई है । उणी पगा फिलिप हजल बानी टुरग्यो । बी सोच लिया क आज हू अनी न साफ साफ कय म क अनी हू तन प्यार करू हू ।

अनी न जोबतो-जोबता बो ठीक ठिकाण पूग्यो । पण अरे ईनक घर अनी भेक बीज रो भुजावा म वसीजियोडा आपस म चूमो ले रया है ।

फिलिप रा साळो जास ठडो पढ्यो । गोहा टूटग्या । माथ पाड पढग्या । होल रो सत निकळग्यो । काळजो हूबण लाग्यो । बो भेक मिट खातर माथो टेकर जमो माथ ऊबो पसरग्यो । फेर उणी बगत घायल सिकार ज्यू बिना खडका मडको कर सूना पत्ता अयवा पगा रो अवाज कर्या बिना बठ सू अघर अघर चोर हुब ज्यू सिरनियो । ‘ज कदास अनी न ठा पड जाव, हू दीस जाऊ, ता ई रो सगळो मुख किरकिरो हुजासी ।

घरे आयो । बापर माच बन बठग्यो पण वळो रवण रो ई सरधा नई । बाप पाणी माग्यो पण फिलिप न ठा तक नई पडी । दूसर माग्यो । फिलिप सून दिमाग सू बाप र सामो भावयो, पण उण र हाल घ्यान म नइ आयो क बाप पाणी माग है । बट न गुमसुम दखर बाप समभग्यो क आज ई रो माथो सावळ कोनी । पसवाडली मुराई माय सू जद जाण आपेई पाणी पियो अर पाछी गिलास मज माथ मेली तो गिलास र खडक सू फिलिप रो घ्यान टूटयो । बाप पूछ्यो—‘आज गुमसुम क्यू है बेटा ? तबियत तो ठीक है ?’

‘हा, ठीक है वापू !’ बँयर फिलिप पाछो जागत सपन रो सिवार हुयग्या । रात पडगी ही । बाप कयो—“जा, सो जा, घर वो छोटा होट हिलावता बापर सामन जुठर सोवण र कमर मे गया परो । कमर री वारी खुली ही । वठीन मू हेजल रो जगळ दीगतो हो । ईनक घर अनी ता वण ई आप आप र घरे गया हुसी, पण फिलिप र नणा भाग भोजू वो ई चितराम हा—रूपाळी अनी ईनक र गळ्याखडी घाल्योडी घर ईनक रा होट अनी र हाटा माथे । दखता दखतो थक जाव जद कमर म घूमे, घर फेर पाछा वारी रो थळी माथ पग, घर गोड माव अकूणी देयर ऊभ जाव घर दिमाग नै जोर दव—“अनी म्हारें मू इत्ती हस हसर याता करती, इत्ती अपणायत राखती, पण माथ सू वा ईनक नै चावती । मन साच मन सू प्यार नई करती । म्हार साग घोखो क्यो है ? धोखो ! नइ नई धोख जिसी चीज सार अनी रो भवोष हिरदो समभ ई कोनी । वा निस्छळ छोरी । लुकाव छिपाव, छळ कपट बीर कन कोनी । म्हारा ई भाग फूट्योडा हा, क हू मोडा पूग्या । ईनक री तगदीर सिक्दर ही । वो पैली पूग्यो, घर आपरा काम बणाय लियो । हू जे पैली पूगतो, तो म्हारो काम बण जावतो । अनी पट्टायत म्हार साग हजल र वन मे चालती घर म्हार साग रगरळी करती । अनी रा कसूर कोनी । कसूर अथवा डोल म्हारी तरफ सू हुई ।”

फिलिप सायग्यो, पण नीद उचाट हुवतो रई । हेजल वन रा त्रिस्थ घडी घडी बार उण र नणा भाग आव । फेर समदर री सावडी गुफा म टावरपण आळा दिन याद आव—घरे ईनक, छुटपण मे धार कन बठा हू तरस्या करतो घर आज भी त मन तरसतो राख दिया । तू स्वार्थी है ईनक । पण ईनक न स्वार्थी किया कऊ ? ज म्हार ओ सानलियो अवसर हाथ भागतो, ता हू कद धूकता ? लार रव, जिका आपरी डील रा नबीटा भोग ई है ।

अमोलख वचन

सडक रा फटवाड आया तो ईनक अनी रा हाथ ब्रूमर आपन पर कानी टुरग्यो घर अनी दोर मन सू पारी हुपर गापर घरे आई । केर भी आज उण र चन माथ चमक हो । मूड माथ विसेस ललाई हो ।

मा बोली— बेटी म्हार जच क भव हू थारा ब्याव करदू । म्हारो काई मरोसो । जे आख मीच लेऊ ता मन म रय जासी ।”

पनी मा र सामी सक मरी निजर सू भाकी जाए मा बीन ईनक साग गळवालडी भर्योडी न देखर ई आ बात बवती हुव । अनी वाली—“हू काई कऊ, पार जच तो कर दे ।”

“म्हार ध्यान म फिलिप सू आछा दूसरो कोई टाबर कोनी घर थ आपस म ग्रेक दूज न चावो भी हा ।” कयर मा बटी र सामन भाकी, भई आ कळी दर्ई ग्विल जासी । पण बेटी र चरे माथ हरख री हळकी लकीर भी भलकी कोनी ।

मा बोली— बेटी, अब तू जवान है, सरमावण री कोई बात कोनी । बोल, तन फिलिप आछो लागव नई ?”

‘हा आछो तो लाग ।’ कयर अनी साव म हूबगी ।

‘मन भी फिलिप आछो लाग । आछो काई इत्तो सुबाव क म्हारी लालसा है क म्हारो जवाई फिलिप ई बणनो चाईज । हाल बीरा ब्याव हुया कोनी, परमात्मा पार खातर ई बीन कवारो राख्यो है, नातर इसा घर घराण रा लायक घर फूटरा टाबर खाली रवण न पड या कठ है । अरे दिन फिलिप मन मिल्यो भी हो । म्है थोडी बात करी जद मुळकण लाग्यो । सभाव सकाळू है । पण घर रो घर है बळचक्री है, बाप रो माल है घर आछो ईजत है । इण सू बेसी मोर काई चाईज ?’ कयर मा आपरी बेटी न छाती र चिपयार माचो चूम लियो ।

“पण मा कयर अनी चुप हुयगी ।

‘बयू, तन फिलिप मे कोई कसर लाग ? उणयू इक्कीस बीन कोई दूजो पारी निजर म है ?’ बवती मा अनी रा गोरा रसमो गाल ह्याळा म आलर बीरो मूडो आपर सामन ऊचो कर्यो ।

‘फिलिप तो फिलिप ई है, पण ” कयर फेर अनी अडगी ।

“क्वण रो बात कोनी म्हारी लाडेसर, मर्नै ठा है, थारो आप रो समाव ब्याव र मामल म सकाळू है । थारै सू हकारो भरीज कोनी । पण जे तू नकारो नई कर, तो हू फिलिप सू हकारो भरलू ?”

“पण मा, रात हू ईनक साथै हेजल-वन मे गई ।”

“काई हुव गई तो ? हेजल वन मे गया कोई फिलिप नाराज थाडो ई हुव । तन देखर वो इसो हरस थ आपर गाभा मे भाव कोनी । इस धणी न पाया कोई भी छोरा धन धन हूसकै है ।”

“पण म्है ईनक न म्हारो आपो सू प दियो ।”

मा थोड़ी अलगी सिरकी, अनी रो मू डो सावळ देखण खातर, अर बोली—
“आपो किया सू प दियो ? काई सू प दियो ?”

“म्हा आपम म गळगावडी घालर चमा लिया ।”

“आ तो साधारण बात है बेटी । इण सू कोई ईनक सू थारो ब्याव थोडो ई हुयग्यो ।”

“ब्याव तो को हुयो नी, पण म्है मन सू ईनक नै म्हारो घणी मान लियो, अर आपस म ब्याव रा अेव हूज न वचन भी देय दिया ।” कयर अनी मा र नडी सिरकर छाती र चिगगी ।

मा बोली—‘तो फेर म्हार बालण न ठौड कोनी । वचना सू बसी की शानी । वचन अमोलख हुव । तू थारा वचन निभा, तन म्हारी आसीस है ।”

अनी मा न वाया म भालर काठी लिपटती बोली—‘मा, तू किसीक चोखी है, म्हारी आछी मा ।”

अनी रो व्याव

प्राज अनी रो व्याव । घाळी भव, बीनाली पोसाव । चमचमाट करता कम, लार मू बळ लापोडा । केसा जिसी ई चमकणी आरया, पण आरया म इतो मोळास जाण वरा ई हिरणी रो आरया केप दी हुव । अनी बीनणी बण्योडी है इण मू सकोव भाव मू चाल बठीन धरती न सको भाव क इसी बबळणी खातर म्है मारग म पुनव वयू नी बिछाया । सहनार्द आळो आपरी धुन म मस्त लाग पण मिट मिट छः वो धमै अर पाछो मुड अर अनी र दहन रूप हेट आरया रो बूव माड ।

गाव रा सगळा लोग वाता कर—इसी पण रूपाळी डावडी प्राज पली इण गाव म व्याव सार गिरज जावती देखीजी बोनी । जाण सुरग सोव मू कोई देखी अथवा अपसरा इण धरती न घन घन वरण हेट उतरी है ।

इण र राग लोग फिलिप खातर अपसोस भी करता—बापड न ठोव भाग राव दिया । माभी रो छोरो मीर मारग्यो ।

बठीन गिरजाधर र घेड छः वातावरण निराळो ई हो । बठ इसो प्रचार हुयो क इनक डफोळ है जिव । अनी मू व्याव करणन गिरज आसी । फिलिप पूरी तयारी कर राखी है अर वो जरूरन अनी न परणसी । इसी रूपवती नार न फुण छोड ? इण प्रचार रो अर्थ वारण हो—गिरज र बगोबिया र दोना कानी दो व दूकधारी तनात कट्योडा हा ।

अ समाचार सगळ फलग्या, अर गाव रा लोग तमासा भेगण सार आपरो काम बघी छोड छोडर सगळा हेट री हेड गिरज कानी उलडग्या ।

ईनक र भी आ बात काना पडी, पण वो डरण आळो आदमी नई हो । हालात रो मुकाबलो करण आळा दिलेर जवान हो । जग रो पडो इरादो हो क बटूक रो गोळी आग वो आपरो सीनो ताण देसी पण बटूक मू डरन पीठ पडायत देखाळ बोनी ।

अनो र काना भी अ समाचार पूग्या । बी मन म विचार करयो—फिलिप ता म्हार ऊपर मोवळो न्यान हो, फेर आज वो म्हार व्याव म विघन घालसी ? पण

ईनक धीरो प्रतिद्वंद्वी है। टावरपण म ईनक चीन घणो तरसायो अर सतायो, उण रा बदलो बो आज बळ सू काढै है। हे परमात्मा, तू सगळा न आछी बुद्धि दे।

जद अनी अर ईनक गिरज र नडा पुण्या तो बार इचरज रो ठिकाणो नई रयो। लारलें दस बरसा सू गिरजो अमरामत पड्यो हो। बारली भीता रा जगा-जगा लेवडा उतरण लागण्या हा, रग तो बाकी रेंवतो ई किया। प्रबन्धक लोग आ कयर टाळ देवता क पोसा कोनी। पण गिरजो दमदमाट कर। इसी ठा पड जाएण विश्वकर्मा कोई नवी इमारत ऊभाळम तयार करी हुव। गिरज र पगोथिया माथ मुखमल रो पट्टया बिछायोडी। पगोथिया र दोना कानी गमला रो पगत अर पत्ता रा नकनी भाड बणायोडा। ज्यू ई अनी पगोथिय माथ पग घट्यो क दोनू बटुकधार्या एकै सामें घमाको बोनायो। लारलें लोगा मे खळबळी मचगी, अर केई तेतीसा मनायण्या पण भाग हा जिका देख्यो क फिलिप अनी अर ईनक न आदर-सत्कार सू माथ लेवण्यो। गिरज न माथ सू इसी सिएगारयो जाएण अमरावती उतरन धरती माथ आयगी हुव। गिरज मे वड जिक र ई गळ म पुस्वा रो हार पराय देव। इण सू क्यारुमेर पुस्वा री मैक फूटगी अर सगळा लोग इया मैमूस करण लागण्या जाएण मुरग र वगीच मे उतरण्या हुव।

पादरी साब आया। ईसामसीह र क्राम भाग सगळा अंक सुर सू प्रायना करी। फेर अनी अर ईनक आपस मे वफादारी अर साच प्रेम रा वाचा दिया लिया। दोना आप आप री बीट्या खोली अर आपस मे अदळा बदली करी। गिरज रो घटया बाजी, अर व हरखे कोडे परणीजण्या।

सगळा लोग पत्यर रा हुयोडा रयण्या। केया रो स्थाल हो क अर्बे फिलिप बीच मे कूदती। क्याल साचो निसर्ग्यो, पण सौळ आना साचो नई। फिलिप कूदयो तो सरी, पण अनी ३ बघाई देवण खातर अर हीरा रो हार भेंट करण खातर। अनी रो छाती गदगद हुयगी—“तू कित्ता खोग्यो है फिलिप?” कयर बी फिलिप रा दियोडो हार आपर गळ मे पर लियो।

फिलिप सू और तो बी बोलीज्यो कोनी, बी इत्तो ई कया—‘अनी, पारो सुख ह जिको म्हारा सुख है।’

सुख रा सात वरस

अनी न पाया ईनक घणो पाल हुयोऊ ईनक न पाया अनी पणी पाल हुई, ओ अदाजो उगावणो कठण काम है । हा इत्तो ठा है व दोना न अणमाप आनम् हुयो अर व सुवी घरबारया दई आपरो जीवण वितावण लागम्या ।

ईनक लगन मू आपर वाम माय जाव । निन भर समन्दर री छोटा माय राजस कर । कदेई वाम भगड, कदेई बाम हज कर, हरस मू गीत गाव, पण मन म अनी रा ध्यान रव—सिझ्या पड्या घर जामू । अनी अहीरतो हुवली ।

अर साचेई सिझ्या हुया मू पत्नी ई अनी ईनक र भारण माय आपरी पलवा रा बिछावणा कर देवती । जद भल्लग मू ई ईनक रो भल्लको पडतो, तो बा भागर सामन जावती, अर आपस म हाथा री घागळया मू प्योडा व दोनू जणा बाता करता घरे आवना । ईनक आपरी निन भर री मैनत मजूरी री बाता सुणावता अर अनी आपरी जवानी डायरी रा पाना सुणावती ।

ईनक अदीतवार न आपर काम री ठुट्टी राख । दानू जणा हा घोम, साफ सुयरा ग भा परन गिरज जाव अर भगवान र ध्यान मे सवलीण हुव । सामद व आपरी कृतग्रता भी जाहिर कर क भगवान बाळपण म बिछड योड दो हिरदा न पाछा आपस म भेळा हुवण रो अवसर दियो । दूसरा सगळा लोग प्रायना मू उठ जावता, अर अनी ईनक रो जाडो हाल नख मू दे बठो है । बारो आपसी सनेब देखन गाव रा माफळा धनपती रळी करण लागम्या व म्हारो हज भी ईनक अनी जितो निस्वत् अर निस्छठ हुवतो ।

पण वेइ लोग बात करता - अनी ? अरे आ चलती रक्म है । ईनक मोणे है । आ पत्नी ईनक रो सफायो कर्यो चाव । ईनक रो माल चाटर फेर फिलिप बानी टूकती । नीम तो इसी सूधी है जाण मूड म जोम ई कोनी, पण हकीकत मे ओफ । भगवान ई मू बचाव इसी छाकटी मू । ओक साग दो दो घोडा री असवारी कर । जवरी है आ छोरी ।

अदीतवार न दोनू जणा जोड मू बजार मे सोने खरीदण न जाव, अर कदेई साली हाथ पाछा नई आव । घणोसीक सामान अनी सातर ई आव—कदेई

नवी चाल रा सण्डल, कदेई रेसमी मोजा, कदेई फन्ट कप, कदेई फराक रा टुकडा, कदेई घर री सजावट खातर तस्वीरा, कदेई ऊन, कदेई सळायी । ईनक कोड सू पोसा छरचतो अर उणने इतो आनन्द हुवतो जित्तो साच करमकाण्डी न होम कर्या हुव ।

इण तर ईनक दटर मनत करतो, अर दोनू जणा मज मे रवता ।

अेक दिन जद वै बजार म सीदो खरीदता हा, अर ईनक अेक मुलमली फराक मोलावण लाभ्यो तो अनी रोक दिया—“ईनक, आपा बीत छरचाळू हा । तू लावै जिका माय सू अेक पाई भी बचावा कोनी । आपा रा पाटीमी आपा सू आपो कमाव, पण फर भी व पीसा भेळा कर । सगळा पीसा लाव ज्यू ई उडाव कोनी ।”

“पण थारै आज काई जचगी, अनी ?” इनक आपर जीवण हाथ रो थेलो डाव म भालर जीवण सू अनी री नरम हवाळी अर धागळ्या पोलीसीक ममठना बोल्थो ।

अनी बोली—“ईनक, थार हाथ सू म्हार काळज म गुदगुदी पदा हुवै, अर बजार म कोई देससी तो आपा काभा को लागी नी ?”

“पण तू म्हारी बात क्यू टाळ अनी ? आपानै परखीज्या न छव वरसा तू ऊपर हुयग्या, पण स खरच वरच रो कदेई नाव ई लियो कोनी, आज तन आ कजूसी किया सूनी ?”

‘कजूसी री बात कोनी । बडेरा कयग्या है—सीरख देखर पग पसारणा । मोडी धगत खातर भी तो दो पीसा सचणा चाईज ।’ कयर अनी ईनक र मगरा म हाथ लगावती बोली—अव आपान घर घालणो चाईज ।

दोनू घर वानी दुरग्या । अधारो सरू हुयग्यो, अर ईनक अतो र छेडवानी करण लाग्यो । अनी बोली—‘है तू हाल टावरपणै आळो सागी ईनक । पाच तात मिट म आपा घर पूग जासा, जित्तै थार सू खटाव राखीज कोनी ?’

ईनक कथा—“अनी, मिनख चाव कित्तोई सच्चरित्त क्यूनी हुवो, आपरी लुगाई भाग जे वो मिनग्य है तो बीन निरलज हुवणो ई पड । अर आ ई बात लुगाई री है । चाव वा कित्तो ई मती क्यूनी हुव आपर घणो भाग तो बीन निरलज हुवणो ई पड ।’

अनी आरया धुलावती बोली—“ईनक तू अेक लुगाई री बात कर हैक सगळो लुगाया री ?’

ईनक कथो—ज्यू मुटो धान री वानगी मू बोरी र धान री ठा पड जाय, इणी भात सगळी लुगाया र वाग्रन जाणुन खातर अेक ‘गुगा’ मोवळी है ।

अनी क्यो—“हू थारी आ वात मानू कोनी । भेक लुगाई जे करवसा है, तो तू सगळी लुगाया न करवसा गिए लेसी ? भेक लुगाई जे कवळ हिरद रो ह, तो काई हरेक लुगाई बिसी हुवणी जररी है ?”

ईनक क्यो—‘अनी तू समझ कोनी । म्हारी वाता गभीर ग्यान माध टिवयोडो है । काची वात म्हार मूळ मू कुत्तरतन ई निवळ कोनी । हाटा मू दार भाया पलो म्हारा सबद नप-तुलर भाव ।’

अनी सापरवाई मू बोली—‘भाव नप-तुलर । ॥ निस कालेज म पडाई करी किसी पोथ्यो बाची । तू तो मडफाऊ बेसळा चेप है ।’

भापरी अगिला कारण ईनक र मूळ रो रग तो घडीवळ मातर भाव बदळग्यो, पण अनी न बिना ठा पासे ईनक बोल्हो—“अनी सगळो ग्यान पाध्या म भर्योडो थोडो ई है । असली ग्यान तो सद हासल हुब जद मिनख भापर ग्याह मर री जिनसा न आख्या खोलर सावळ दल । खासी पोथा पड पडर पिडत हुपा जाई को हुवनी । पोथा तो थाथा है ।”

ईनक री बात वाटती अनी बोली—“पोथा न थोथा किया कब ? पोथ्या म तो मिनखा री पीढया रो ग्यान भेळा नर्योडा हुब । ज पोथा थोथा है, तो फर तू बाइबिल न काई कसी ?”

‘तू हाल समझ कोनी ।’ ईनक बोल्हो । ‘बाइबिल न तू पायो गिए ? आ थारी अणसमझी री सनाणी है । बाइबिल म तो भगवान रो सनसो लिप्योडो है । ससार रं उपकार सार भगवान भापरो सनेसी भेज्यो, जिको बाइबिल ग लिप्योडो है ।’ कयर ईनक अनी रो मूळो सावळ देवर उणरा भाव लपण सार पावडो लापो उठायर भेक गज भाग बधग्यो । अनी साचेई प्रभावित हुई । बा बोली—“पण ईनक, त इत्ती बाता कठ सीपसी ? हू तो तन हाल, गळती मू, साकडी गुफा रो, जोरा मदीं थीन बणनियो दनक समझती ही ।’

ईनक हसण लागग्यो । बी अनी रो हाथ प्यार मू दबायो भर चूम लियो । होठ भी नडा करण री चस्टा करी, पण अनी अळगी मिरवगी ।

ईनक क्यो—“अनी, म्हारे करमा मे बिद्या रो जोग तो नई हो कारण भूगत रा ई म्हारा भाईत मरग्या पण कोई भी चीज सीपण कानी म्हारी रचि ठेठ मू ई रड है । तन ठा है हू म्हारी नाव न चमचमाट करती रामू इण कारण म्हारी नाव मिलता धका आछा लोग दूजी नाव क्वल कर कोनी, भर आछ लोगा रो घडी पलक रो सत्सग ई लास रनिया मू बेसी है । म्हारो ग्यान म्हार बिद्वान सला या र सत्सग र परभाव मू ई है नातर हू तो पन्थो लिह्या कोनी आ वात थारी भेरुम साचो है ।

घर उडो आयग्यो । अनी कूची भलाई । ईनक ताळो खोतयो । अनी घर म जायर पिलग माय बठर मुसतावण सागगी ।

“अनी थकगी ?” ईनक पूछयो ।

“नई तो ।” अनी भट बोली । पण बा हापयोडी सास रावती ही इण सू साफ ठा पडती कं उणनं थावेतो आयग्यो हो ।

ईनक कयो—“अनी, तू म्हार सू तीन बरस छोटी है पण बूढापो तन म्हार बिच्चै बगो आसी, इसी ठा पड ।”

अनी मुळकी, अर जवानी र कारण उणरो रातो भूडो वस्मीरी सेव जितो रातो हुयग्यो ।

ईनक कयो—“अनी, म्हारी हरक बात न तू मुळकर उडाय देव । सायद तू मन मूरख समझ । जद इसी बात ही, तो तै जाणती वूझनी अरे मूरख सू पाना क्यू घाल्यो ? देखतो आम्ह्या कूब म क्यू पडो ?”

ईनक री बाता सू अनी री मुळक जोरदार हस मे बढळगी, अर बा निरी ताळ तई हसती रई । ईनक र जचगी कं अनी बीन साचेई मूरख समझ । अर इणी बगत अनी कय दिया—“ईनक, तू मूरख है । तू समझ तो कोनी, अर मन मे सोच क धार जिसी जाणवार कोई है ई कोनी ।”

ईनक रो भूडो फूलग्यो । वो आपरा अूता अर गाभा उतारन गळी कानी टांगा लटकायर, अनी कानी पूठ देखर, धारी मे बठग्यो ।

अनी हेलो करयो—“ईनक, ईनक ।”

पण ईनक अणवोल ।

अनी आपरा कपडा ढीला करती करती ईनक रं सारं जायर झूझगी । राधा माय हाय मेलती—“अरे ईनक, धारी म बठग्यो । सगळी हवा रोक्ती । मन भी तो थोडी हवा लेवण दे ।”

ईनक चुप ।

“तो तू काई रीसाणो हुयग्यो ?”

ईनक चुप ।

“साचेई रीसाणो हुयग्यो । ईनक, तू धारी लाडली अनी सू अणूठो हुयर बठग्यो । रुठग्यो ?”

ईनक हाल चुप ।

अनी ईनक र माय सू आपरो माल अडायर खावा माय झुनयोडी बोली—“ईनक, भगवान ईसू री सौगन मन आज ठा पडो है कं तन रीसाणो हुवणो आव ।”

ईनक अनी रा हाथ आपर गाधा मू भळगा करतो बान्धा— क्यू भूठ वोन ? आज ठा पडो है ? घर फर भगवान रो सौगन साव ? फिलिप माय हू रीसा बळनो जद तू किसी आन्या मोच्योडो राखती ही ?”

अनी आपरा हाथ पाछा भघरसीव ईनक र गाधा माव टेकनी बोली— फिलिप मू तू लडाई करतो जिकी तो म्हार मातर करतो, पण आज भव म्हार मू लडाई की र सातर कर है ?”

ईनक प्राधी नस सामन मोडर बोन्यो— ‘साव माव बनाऊ ?”

आ ई कोई पूछण री बात है ? मिनग लुगाई म भी फर काई वूड रा पडदो बिचाळ रया कर ? म्हार ह्याल मू तो रव बोनी । दो ‘यारा-यारा सरीर येक आत्मा ह्युर रव, घर बार इणी बात रवण म जीवण री सायकता है ।”

अनी तो प्राग बात चात्र राखी चावती, पण इनक बात काटता बोल्यो— ‘पूछण री बात तो बोनी, पण पूछण री बात है भी ।”

अनी आपरी छाती रो भार ईनक र मगरा ऊपर राखती सुळगी, घर ईनक पाटो प्राग सिरक्यो ।

अनी बोली— प्रागै कठ सिरक है ? जे तिगह्यो तो हू कठ हाथ घालमू ? आपा बाळपण रा साथी रयोडा हा, इण कारण पार मू बात करता हू सकू बोनी । ज म्हारी केई बात मू तन ठेस पूगी हुव, सो हू सात बार माफी मागू, दस बार मागू, सो बार माफी मागू । कव तो जमी माथ नाक रगडलू ।”

इनक बोयो— अनी, त म्हारो कोई बसूर तो बट्पा है बोनी, फर माफी काई बात री माग ? जिका रा मन आपस म नई रळ, ब भेळप रो दलापो फरण खातर माफी रो ढाग रच्या कर । पारी ‘माफी मू भी मन हिरव रो भळगाव भळकतो लाग ।”

अनी काठी लिपटगी— अरे ईनक, तू इसी बात कव, मन, पारी अनी न, पारी, घर फकत पारी अनी न ?”

“पण अनी इण बात मू सुखी कानी क बा म्हारी बणगी घक सूरख री लुगाई वणगी ।” बीर जिसी लुगाई न ता येक समझार री बळ बणनो चाईजतो हो । पण ”

ईनक आम भी की कवणो चावता, पण अनी बीर मूड झाडो हाथ देय दिया — ईनक, म्हारो काळजो इत्तो करडो बोनी क इसा वज्जर जडा बाला री मार बरदास कर सक । मन इण बात रो इचरज हुव क तू आज निरदयी ह्यन इण तर री मार किया मारण लाग्यो ।

“नई अनी, थारो म्हारो ब्याव तो अक सजोग हो, नातर हिरनू सू तो तू फिलिप न चावती अर उणसू ई ब्याव करणो चावती ही ।”

अनी इनक रो हाथ भालर बारी सू मायल कानी लियो अर उणरी बगल म हाथ घालन पिलग भाय बठाण्यो । अनी कर्न बैठगी तो इनक अळगो सिरकतो बोल्हो—“अनी आज थारो परस मन सुगर्व कोनी । तू म्हार सू बात भलेई कर, पण अड मत । म्हारो माथो अबार ठोक कोनी ।”

अनी बोली—‘इनक, तू कब तो हू पिलग सू हेट वठ जाऊ, तू कब तो कमर सू बार ऊभ जाऊ । परमात्मा म्हार सू इसो कोई काम नई करावै जिए सू तू नाराज हुव । तू मन खाली इती बात बतायदे कै आज म्हारी किसी बूक हुई जिए कारण तू रीसाणो हुयग्यो ।’ इया कयर अनी पिलग सू हेट, इनक र पचा म बठगी ।

इनक पिलग सू हट उनरन उणरी बगल मे दोनू हाथ घालर ऊंची बठाणी, अर आप धराबरी म बठग्यो ।

अनी आपरो माथो इनक री छाती मे घाल दियो । बीर निर्मल कपोळा माथ आसुवा री धारा बिलबल लागगी । इनक आपरा करडा हाथ गरसीक अनी र गाला माथ फेरन आभू पूछया, अर क्यो—‘अनी, थारा आभू मन निरुपट लाग अर हू सोचू क म्हैं तन म्हारी मूरखता र कारण ई दुख दियो । त ठोक क्यो । हू साचेई मूरख हू ।’

अर अनी न याद आया क उण र ‘मूरख’ सबद माथ इनक रीसाणो हुयो हो । बा बोली—“इनक, तू रीस ना करे । जे तू मूरख नई, तो भोळो पक्कायत है—गळी-गवाड री सगळी छोरया अर जुबत्या म्हार अणमाप जोवन अर अजोड रूप रो ईसको कर, अर तू मन बूढी बतावण लागग्यो । आ भोळप री बात तो है ई । है तो मूरखाई री, पण मूरखाई कया तू रीस कर लेव, इण कारण हू वऊ क भाळप री बात है ।”

इनक क्यो—“देख अनी, फेर तू इसी बात करे जिएमू मालम पडै क तू मन ई, फिलिप न चाव । त मन अबार फेर गुडलपेटी वाता म मूरख री पदवी देप दी है । आ बात ठीक है क थार डीन माथ जोवन अर रूप दीस पण थारी सगती घटती हुव ज्यू लखाव, नई तो बजार तई धूमर आया सू पाकेनो घोडो ई भावै ।’

अनी हसी । जोर सू हसी । इनक गू गो हुव ज्यू बीर सामो जोवतो रंघो ।

इनक क्यो—“केई आदमी री बात माथ हसण रो मतलब है बीन मूरख गिणनो ।”

अनी सरम सू आख्या हेटी करली । ईनक बीरी ठोडी भालर प्रापर सामन मू डो करतो बोल्तो—“क्यू ठीक है म्हारी बात ?”

अनी बोली—“जि कोई दूसरो भादमी हुवतो तो अबार तई आपेई सभ्र जावतो, पण तन तो हू खुद बसू जद ई तू लारो छोडसी । आपा ”

ईनक री आख्या म इचरज भरीजग्यो । बी क्यो—“आपा, काई अनी ?”

अनी सरम सू माथो नीचो करती बोली—“आपा दो मू तीन ।”

“हैं अनी, साबेई ? अनी साच बता ।” कयर अनी न आपरी तू ठी भुजावा म घालर उणरा हेटे चूम लिया ।

‘हा, भव ठा पडो । ता अनी, तू ‘मा’ हुवण आळी है ।” कयर इनक अनी रा गुदगुदा खाधा आपर हाथा मू दाव्या ।

ईनक री बात सुणर अनी आख्या हेटी करली । ईनक केर बोल्तो—“साधी बात म सरम काई बात री ?”

अनी आख्या जमी मू उठायर ईनक र सामी करी, पण लाज र कारण वा की बोल नई सकी । जद ईनक अनी रो मू डो आपरी हवाळ या मे भालर बीन उचळो देवण खातर मजबूर करी तो वा बोली—“अर तू वाप हुवणआळी कोनी काई ?”

जुणजुण दिन नडा आव, अनी रो पन भारी पडतो जाव । जिण काम न वा फूक मू कर लेवती अब उण मे भी खेचळ री जरूरत सत्वावण लागगी । घोर तो घोर उठण-बठण म भी जमी माथ हाथ टेकण री जरूरत पडण लागगी । ईनक भात भात री जिनसा अर रसाल अनी खातर लाव, पण जीव दोरो अर उलटी हुवण रें डर मू वा भूख हुवत थका भी थोडी भूखी इ रव ।

एक दिन अनी क्यो—“ईनक तू तो रात पड या घरे आव, इत तई हू घर म अकेली रऊ म्हारो सरीर नरम है (कयर आख्या नीची करली) तन ठा है । म्हारी मा री देखरेल तो है ई, पण आर बिना मा अजकाल आवड कोनी । तू जे दिन आपण्मा पल पल आवड जाव तो कोई हरज तो कोनी ।”

दूज दिन भार मे जद ईनक कमरे मे बडण लाग्यो, ता उणरी सामू बारण र कल ई रोक लियो । माय न दाई गयोडी ही । पन्द्र बीस मिट मे छोट टावरिय री च्याय भ्याय मुणीजी । ईनक रो काळजो उछळतो हो । उणरी सामू बार माई अर समाचार सुणाम्या—छोरी हुई है ।”

छोरी री चीचाड जाण ईनक खातर अरे सनेसो लाई । बी मन म सोच्यो ईनक, तू गरीब रो जायो है, पण पारा खरचा इत्ता वचग्या व गाव रा रईस भादमी

भी थार सामा भाकण लागम्या । ठीक है, ब्याव रो जोस हुया कर । ओक बार जोस मे होस गायब हुया ई कर है, पण अब गाढी न सागी रस्त लावणी पडसी । मन कमाई माय स थोडी बचत भी करणी चाईज । आज आ छोरी जलमी है, काल बडी हुसी, ई न पढावणी है, परणावणी है अर ई रा सगळा ओढा काढणा है । इणी तर, जद टावरा रो लोक सरु हुई है, तो परवार बघता ई लेखो । दो पीसा बचायोडा हुसी तो टावरा रो पाळण पोसण मिनखाचार रो करीज सकसी, नई तो हू अर अनी रया, ज्यू ई अ रय जासी । पण नई, म्हार खरब म हू किती ई कटोती करहू, म्हे भलेई कितो ई कसालो भुगतला, टावरा न अणघड भाट ज्यू तो राखू कोनी ।

ईनक थोडी ताळ विचारा मे गम्योडो रया । फेर उण रो सामू आयर कयो—‘अब अनो स मिलीज सक है ।’

ईनक कोड स आी र कमर मे गयो, पण अनी पलका हेटी करली । ईनक पूछ यो “तदियत तो ठीक है, अनी ?”

“हू ।’ अनी नाक स अवाज करी ।

करता । इए कारण ईनक बठ पढ़ायत पूगती, भर व ईनक र छत्र माथ सू आपरी रची माफक छाट छाटर मछल्या लेवण री कोसीस करता, पण ईनक री माल इतो सिरंकार हुवतो कँ उएण छत्र म पाछी सेजावण खातर घेक भी मछली नई खती ।

इए तर दिन रात सोरस म जुठ्योडो रयन ईनक पीसा भेळा वरण मे लाग्योडो खती । पण छोरी र हुवण उपरायत भी अनी रा मूनापणो मिठ्यो कोनी । जद छोरी दो बरसा री हुई, तो घर मे भेक और टावर भायो-धेनड । जाण ईनक री मू डो तोडर चेप्यो हुव । पण टावर री बाची डील हुवण कारण नानडिये रा गाल ईनक दई तावडँ मू बल याडा नई गुलाबी हा, भर घरे ईनक री गरहाजरी म इए छोर री मौजूदगी जाण ईनक री छाटो सकल वणर अनी न थावस देवण जोग वणगी । अनी र माथ म जिवा ऊधा ऊधा मोट उठ्या करता हा बारी मात्रा कम पढगी ।

इए नानडिय र जलम पछ ईनक आपर घघ म पैली बिचरे भी बेसी व्यस्त खण लाग्या । ज्यू रात री वगत म धू तारो समदर म चालती हू गी नँ मारण देलाळ, उणी तर टावरा री सावळ, मिनखाचार री पाळण पोसण ईनक रा भेकमात्र उहेस्य हुयाडो हा ।

ईनक न जद मालम पटी क उएरँ साकडँ बदरगाह सू आठ दस मील र आतरँ भेक बडो बदरगाह खुल्यो है, तो बा बठ काम करणिया म सगळा सू आगली पगत म ऊभग्या । जळ पळ दोनू मारया सू वो बठ जावतो और आपर बोपार न फलावण मे पूरो सचेस्ट खती । उण बदरगाह मू अळगी अळगी जगावा तई मछल्या पूगावण री ईनक ठको लेय लियो भर अरोसो हो क भव उण रा आछा दिन घणा आघा वो रया नी ।

पण उयळ-पुवळ कुदरत री नम है । सगळी जिनसा म फर बाल आब उणी तर इनक र जीवण माथ भी अतर पड या । भेक बार वो पाल रा रस्तो सावळ बाधण खातर जद मस्तूल माथ चढतो हो तो अकाशेक उएरो पग फिसळ्यो भर हाथ डीलो पडग्या । उणी वगत वो आयन हट पड यो भर बेहोस हुयग्यो । जद लागा साम्या भर उठायो, तां ठा पडी क पग री हाड बडग्या । पाटापोळी करया भर ईनक न केई दिना तई खाट माथ खणो पड यो ।

जद ईनक इए तर नाकामल हुयोडो पड यो हो, तो अनी र भेक टावर और हुयो—भेक छोरी पण वो सतमासियो होक ठा नई उण र सरीर मे जलम सू ई चिएपिए खती भर इणी कारण उण र जलम सू माईता न हरख री जगा सोच फिर ई हुया ।

ईनक मन मे सोचतो क हू वगो साबल हू, वगो हाड सध तो पाछो वगो पध मे लागू, कारण अक अक दिन मे मुट्ठी मुट्ठी रुपिया रो घर मे घाटो पडतो हो । इए दरम्यान अक बीज आदमी ईनक रो ठेको बिचाळ पडन हथिया लियो, अर ईनक रा सत सिरसा मीठा सपना जाए तू ब रं रस मे हुबोईज्या ।

उणी वगत ईनक अक जागतो सुपनो देरयो—“उणरी अनी, लाडली अनी, जिए खातर वो आपरी भुजावा रो तकिया दिया करतो, जिकी आपर घर मे रईस लोग जू रबतो, टावरा नै पाळती, उणरो घणी मरग्यो अर इए तर कमाई रो साधन बढ हूग्यो । बजार रा पीसा माथ हूग्या अर आखर अनी न घर खाली करण खातर लाचार हुवणो पड यो । छोटा छोटा टाबरिया न भाल भाल बावळिया अर घर सू बार बढाए दिया । अब अनी दर दर री ठोकरा खावण लागनी । छोरी भागळी भाल्या चाल है । अक छोरो खबोल चढ योडा है, अक बगल न लटक है । मौसम ठडा है, मा टावर सरदी सू बाप है अर भील मागता फिर है । कोई भील घाल, कोई दुतकार, कोई फाटयोड भाभा माथ कर ऊभो ऊभो अनी र डील न निरख है, पण देवण न रामजी रो नाव । अनी न घरा री सुगाया बन जर बुभायोड तीरा सिरसा तीखा बोल भी सुणना पडै, पण बा जाए फटकार प्रूफ हुयोडी है, उणर चैर माथ निरसा या रीस रो लवलेस ई दरस कोनी ।’ ईनक रो हाथ छाती सू हट आयो, अर अकामेक उणरो ध्यान पळटयो ।

जदपी इनक न सरब सगतीवान भगवान मे पूरण बिस्वास हो क सगळा काम उणरी मरजी सू हुब उणरी मनस्या बिना पीपळ रो पान ई हिल कोनी सगळा सुन दुन उण री इछा रा रं अचीन है, पण जद ईनक इए तर नाकामल पट यो रयो अर उणर हाथ रो घघो, रोटी रो साधन, खुसग्यो, तो ईनक री भगवान मावली ब्रिड आस्था टंगमगावण लागनी । ईनक न सत्तायो जाए उण रा माडा न्न नडा आयग्या, अर बी आपर टावरा र ऊजळ भविस्य रा जिका सोनलिया मपना दम्या हा, य सगळा निरासा रूपी मगरमछणी गिटयो । अर ईनक सोच्यो— ‘म्हारा ॥ इए तर खाट माथ सिडता सिडता सरीर छूट जासी । अनी अर टावरा री सुप-बुप लेबणियो कोई है नई । अनाया रा टावर पळ जू म्हारा टावर पळती । अस्तहाय बिधवा जू अनी न आखी जूण पूरी करणो पडती । ह भगवान ! तू तो गरीबा रो भाई है । दीना माथ थारो काळजो पसीज है, केर त म्हारी आ हालत क्यू करी ? हे नाथ ! हे म्हारा मालक ! तू म्हार माथ मले ई आफता रो पाड पटक द मन मौन र सागर म ‘हाथ दे हू डर’ कानी, मूड मू ‘उफ’ तब बाडू कोनी पण ह दयाल हे विरपासागर तू म्हारी इत्ती प्राथना कबूल कर क अनी अर उणर टावरा रो ह ई साडो न हूवे ।

अ अनी अर ईनक सातर माडा दिन हा । ईनक रो रजगार बद, छोटकियो टावर ताबलो, उणरी टाव टेव । आफत र इण सागर म अनी अर ईनक भङ्गभोरीजग्या, पण ररम पिता ताई बा आपरी सरघा गमणदी कानी ।

निरासा रो हूवती जाज न आसा रो पोत मिलग्यो । जिण वीपारी रँ अठ ईनक सलू मे माभी रो हुमर हासल कर्यो हो, वो ईनक रो ईमानदारी सू सागीडो प्रभावित हो । उणरो अेव जाज चीण जावण भाळो हो, अर अेव विस्वासी भिनल रो जहरत हो । ची ईनक न याद कइया, अर कवायो क जे तू चात, तो पार सातर नोवरी त्पार है ।

ज्यू तोफान पछ समदर रो तरा हसण लाग जावँ, भतूळिय पछ लोग सागी चाक आपर घघ म जुट जाव, बादळ र छेड़ हुया आभ म भाण पळपळाटा करण लाग जावँ, उणी तर इण नूत सू ईनक रो अघारी रान रो जाण अत आयग्यो अर उणर जीवण रा सोनलिया परभात जाण अडीक है ।

ईनक हकारो भर लिया, कारण जाज र भासक आ भी कवाई क हाल जाज दुरण म जेज है मइनो, दो मइना लाग सक है । ईनक न भरोसो हो क इत्त तई धीर पग रो हड्डी पक्कायत सध जासी ।

भगवान माय ईनक रो आस्था पैली बिच्च बधगी—“परमात्मा म्हारी प्रायना सुणली अर कबूल करली, नई तो इसी आस्था अर ऊची नोवरी घर बठा आवण न बठ पडी हो ? म्हारे मन रो कमजारी कारण ई म्है अनी अर टावरा वाबत ऊची तबडली हो । अेव पार चीण जाऊ परो तो ई माली हालत मे मोकळो फरक पड जासी । जे तीन च्यार चक्कर काढलू, फेर तो कवणो ई काई ?” धोर धोर हू आप अक जाज रो मालक बण जाऊ अर इण छोट घर रो जगा अेक आलीस्मान बगलो धिणवाऊ, टावरा साट ऊची जगा मे पढण रा परवष कर हू, घर मे नोकर चाकर राख तू । अनी खाली दख रेख कर लेव अर बासण भाड, पूस बुझारी भाट भङ्गवाव रो काम अनी न नई करणो पड । पण जे हू गयो परो तो सारे सू अनी रो सायता कुण करसी ? टावरा रो निग कुण राखसी ? आन कीर भरोस छोडर जाऊ ? मुसाफरी करन आया पछ तो सुख रा साज-बाज जुटण लाग जासी, पण अवार वान अेकलपा छोडण भाळो ई तो अेक सासो है ।”

इनक जावण सातर योजनावा बणावण लाग्यो—“म्हारी नाव रो काई हुसी ? फालतू पडी रख अर टूट भाग, उण सू तो बेचणी ई ठीक है । पण बचू किया ? म्हारी नाव, हू तन बेचू किया ? सागर रो उफणती सू पार छोळा माय पार पाण ई हू राजस करता रयो । थारे परताप ई बदेई घबरायो कोनी, कारण

मनं ठा ही य थार म अगवार हुया पढ़े मन खतरो कोनी । म्हारी नाव, ज्यू थ्रेक घुडसवार आपर घुडल न जाण पिछाण, रास ढीलो दिया घोडो किण चाल चाल, रास सार्या किसी चाल पखड, लगाम काठी बरया वाई फरक पड अर भेड लगाया किता कमाल हुव, उणी तर म्हारी नाव, म्है तन मात भात सू जाणी, अर थार कारण ई माझ्या म अर छोटल छेडल गावा अर बनार माथ म्हारी चतराई अर बादरी रो डको पीटीज्यो है । पण अनी अर टावरा रा लार गू आघो किया धिक्सी ? म्हारी नाव तन वचण र बिचार सू ई म्हारी छाती पाठ, पण म्हारी गरीबी अर अमीरी रो रळी, टावरा रो खुसाली रो लालस्या मन थार सू अळगो हुवण न मजबूर कर हं ।

फर ईनक सोच्यो—नाव वचर अनी खातर चाईजतो समान मोलाय लसु अर अनी अर टावर आपरो कामडो चलावता रसी ।

ईनक रो पग जद सावळ हुय्यो, अर बी घरे आया, तो अनी मागती सामी आई— अर ईनक, बंद घर छोडयो हो हूं, पग र काई हुय्यो ? निरी लागे दीसती ही अय तो पीड कानो ? ' फेर अनी मात नानडिय न ईनक र सामो कर दियो । बी हाथ पसारया अर बट रो वजन कूतर बीरा होळ होळ बुझा लिया । बीर हाथा पगा अर डील रो बणावट निरखी, अर बाप लडाव ज्यू बीन लडायो ।

फर इनक आपरो पग दूट्यो उणरी सगळी बंधा सुणाइ । अनी रो आह्या आग तिरवाळा आवण लाग्या । बी दो-तीन वार ईनक र अहमी हुया हो जिक् पग न पपाळयो अर ईनक न आपर बाळज र चिपायो । इत्ता दिना सू आया, पण आखर ईनक आय तो गयो, आ सोबर अनी सतोस रो सास लियो ।

ईनक न चीण ता जावणो है पण अनी जद इत्ता दिना उण न नीठ निरावळ पायर 'माल हुई ही तो उणर आग अेकाअेक चीण री जात्रा री वात छेडण री ईनक म होमत नई ही । रात अर किणी तर ईनक आपर मनसोब न मसासण राख्यो, पण अय दरसाया बिना पार किया पडती ।

दिन उग्या पण आन अनी न ईनक र चरै माथ अवीठ भाव दीसता हा । बा काम बाज सार घर म फिर अर घडी घडी वार मुड मुड न ईनक र मूड सामी जोब पण काइ पूछण री होमत नई पड ।

छेवट इनक कयो— अनी, अठ आ म्हार वन वठ ।'

अनी लक्की क अय कोठ आळी होट आवण आळी है । वा डरू फरू हिरणी ज्यू आपर ईनक र वन वठगी ।

ईनक कयो— 'अनी अेक बीत बलिया वात नऊ पायद रो वात मुख रो वात, आराम री वात ।'

अनी बोली—“इत्ती जिनसा अेक सागै बठ सू आयगी ? ईनक, तू जलदी कयदे म्हारो काळजो कएकलो धार चैर रै हावभावा मू उयळ पुयळ हुय रयो है।”

ईनक कयो—“अनी थारो सभाव बौत डरोक है। तन सावळ म ई कावळ सूभ। तू टावरा री मा हुयगी पण है हाल तू टावर री टावर।” ईनक आ बात अनी न हसावण खातर कई ही, पण बा मुळकी तक कोनी।

ईनक अनी रै सामन गोडा सू गाडा अढायर बठग्यो। अनी माथो हेटो कर लियो। ईनक आपरी हथाळ या मे अनी रो मूडो आत्तर ऊचो कर्या, पण अनी रा नए तो झुबयोडा ई रैया।

ईनक कयो—“अच्छा अनी, जे तू म्हारी बात सुणनी ई चाथ कोनी तो फेर हू की खातर यसू ? मनै बात कवणी ई कोनी।”

थाडी ताळ तई दोनू चुप रया। छोटा टावरिया गूगा हुव ज्यू मा बाप सामो जोवता रया। फेर अनी कयो—“ईनक, तू बोल, थारी मन री बात सुणा, राक ना।

“हा, अनी, म्हारी बात डरावणी कोनी, हरसावणी ह साचेई अनी।” कयर ईनक अनी रै चर पासी भाकयो।

अन। थोडसीक आस उपाडी, पण ईनक री निजर मू रिबर मिलता ई, भट आल पाछी हेटो करली।

ईनक आपरी चीण जाना अर बठ सू घन सावण री अर वा तीन केरा म जाज रो मालथ हुयन परवार री माली हालत सुधरण री सोनलिया तसबीर अनी र भाग माडी।

ध्याव री बीटी पर्या पछ अनी आज तई कटेई ईनक मू लडी कोनी। लडी छोड, बदेई अकरी ई बोली कानी। पण आज जद साव विजोग री थान सुणी, तो घबराहट मू उण रा काळजियो बापग्यो। आज अनी पनडी बार ईनक मू लडी। पण अनी री लटाई मे नाराजी, बरडाई, तीखाई जिसो कोई चीज बठ ही ? वा बोली—“इनक, म्हारा जीवण घन ईनक, म्हारो अर टावरा रो जीवण थारी टेक माथ टिवयोडो है। थारो विजोग म्हार मू अेक पळ छिन खातर ई सईज कोनी। जे भाग म लिख्योडो है, ता घरे बठा ई घन मिल जासी नई तो भलेई कित्ता ई तडफा तोडो बरमा मे आधी रोटी लिख्योडो है, तो सापती दवण सिमरथ कोई कोनी। आपान तो भगवान दाळ रोटी आछी तर देव। पणा लोभ बाई काम रो ? सतोस म सार है। लाभ मिनत रो गळा बटाव। परदस मू सापती कमायर लाव, उण मू घरे कमायोडो आधी लाव आछी।”

‘पण धनी, अ टाबर’

अनी बात काटर कयो—‘ईनक, टाबरा र भाग मे जे आधी लिखी है, तो आनं सापती कुण देसी ? ईनक, ह धार पया पडू, थारी दासी ह, थारी चाकर ह, थारी चरणसेविका ह, मन थार चरणा मे रखण दे, थारा चरण म्हारें सँ अलगा ना कर ।’

आरया अर नाव पूछता पूछता अनी रो हमाल तर हुयग्यो । वा आपरी फराक सँ आरया पूछनी बोली—‘ईनक, सायद म्हारो कोई कसूर हुयग्यो इणी कारण मन सजा देखण न तू बिदेस जाव है । ह म्हार कसूर खातर धार सँ ग्रेक बार नई, सौ बार, सास्र बार, माफी मागू, तू कब तो जमी सँ नाक रगडलू, पण म्हारा प्राण-बल्लभ ईनक, म्हार जीव रा जीव, हिरा रा हिरदा, तू मन भर टाबरा न छोडर जा ना । म्हारी आत्मा कब—थारी इण जात्रा रो फल आछो को नीसर नी । ईनक म्हारी बात मान । म्हारी दसा रा विचार कर, टाबरा पासी ध्यान दे, निरमोई ना बण ।’

ईनक कयो—‘अनी, थारी बाता अककारी तो कानी, थार ग्रेक ग्रेक सबद मे सार है पण म्हार चीण जावण री पक्की जाच्योडी है, तू मन पाल ना, तो जासू तो सरी ।’

ईनक आपरी नाव बेच दी । पीसा बट्या, बासू अनी खातर दुकानदारी रो समान लामो फेर कमर र ग्रेक खूण मे लकड़ी री पाटकड्या खसोलर खण बणाया अर सगळो समान ठसाठस जचायर इया घर दियो ज्यू मटर री फली म मटर हुव अथवा ज्यू बीज रें माय बुदरत र हाथ सँ पीघो, पेड फल फूल सगळा भरयोडा हुव ।

इण तर बसोली सँ हयोडी सँ, ईनक दिन भर खटाखट खटाखट करी जद सगळो समान सावळ जचाईजियो । पण ईनक री आ खटाखट अनी र माथ मे बटोड उपाडती ही । बीन इया लखामो जाण ईनक अनी खातर फासी रो चबूतरो चिण है । अनी न वा खटाखट इसी लागी जाण अनी मरगी, अर बीर लार सोग म कोई बाजो बज है ।

अनी की दुकानदारी जचावण र विचार सँ ईनक आधी रात सँ परवार भी काम करतो रयो । छेवट काम पूरो हुयो, अर ईनक न घापर धाकेलो घायग्यो । बिद्यावणा म गुडग्यो अर भट आख लागगी, जिकी फेर दिन ऊग्या म ई खुली ।

कमावरा खातर

आज ईनक री बिदाई रो दिन आगयो । अनी रात भर मन मे माळा केरी क ईनक री जातरा टल जावै, पण ईनक धुन रो पक्को, हिमताळू आदमी । आपन खातर उण र मन मे रती भर भी डर नई हो, हा जद मनी रा ध्यान आवतो क लारै सू ई मे फोडा नई पडै, तो केर बिचार मे पड जावता । पण वो तो परवार रो दाळद दूर करण मार्य सुत्योडो हो । मन मे अनी री हालत रो बिचार आवता इ बी भगवान न याद कर्मो—'हे भगवान । तू मिनखा म है अर धार मे मानखो है । जद तू केई री सायता कर, तो केई न केई मे प्रवेश करन ई कर है, केई-न केई मिनख र घट म ई बडै है । थारी आस, थारै भरोस मार्य ई हू अनी अर टाबरा न अठ छोडर जाऊ ह । इण तर प्रायना करतो ईनक भगवान र ध्यान मे डडोत करतो रयो । हे भगवान, म्हार माय मलेई तू वज्जर पटव द तो ई हू पबराऊ कोनी, पण म्हागे अनी, म्हारा टाबर, थारी भोळावण तन है । तू सगळी दुनिया रो मालक है, सगळै ससार रो बाप है ।'

ईनक क्यो—'अनी, भगवान री किरपा सू आ जातरा आपा रा सोयोडा भाग जगाणसी, तगदीर खोलसी । अर देख, तू म्हार सामा भाक, आख्या गळगळी ना कर, म्हारी दात ध्यान सू सुण । म्हार खातर चूल सू राख हदायोडी राखे अर बास्ते जगायोडो राखे । अरे, तू निस्कारो क्यू हास ? हू आसू, पक्कायत आसू । अरे गली, तन ठा पडमी जिक मू पली ई आय जासू । वा मे अनी, थार सू तो अ टाबर ई खोखा जिका रोव तो कोनी । तू स्याणी समझणी हुयर इया नणा री जोत घटाव । तू थारा नण सावळ राखे । हू पाछो आयर केर थारा नण कवळ जिया विगम्पोडा देखणा चासू । आ नई हुवै क तू रो रोयर आरो नास कर लेवै ।'

अ नी जद बोलती तो हवामडळ मे बीण राज जिसा मीठा सुर बिखरता । पण आज अ नी री बीण रा तार दोला हुयोडा, डीला ढबळ, कँ भक्भोर्या मू पणखणाट भी नई नीसर ।

केर ईनक पालण न होळ मीक हीडो दियो जिण मे निमळो नानडियो सोयाडो हो । ईनक री यो—'अ नी, जितो ई ओ छोटी अर दूगळा है, जितो ई मन

घणो वालो लाग । हू जातरा सू पाछो आसू जित्त ओ भी वडो हुजासी । म्हार सामो भागर आसी, हू उठायर गोदी लेस् बुक्का लेसू, केर म्हारी साधल माथ बठाएर विदेसा री बाता वसू । वान मुण मुणर ओ इचरज करसी घर राजी हुसी । वसू, हुसीक नी अ नी ? '

पण अ नी र मू ड म आज जीम को हो नी ।

ईनक कयो—'अ नी, हू जावण सू पली थारू सू अँक चीज चाळ हू—तू अँक बार, साली अँक बार ई, म्हार सामन मुळव द ।''

जद इण तर आसावा सू भरपूर सोनलिया सपना लेवता अ नी ईनक न देह्या तो बीन आपन विस्वास बघण सामग्यो, अर ईनक री बाता साची लखावण लागगी । पण बात करता करता जद ईनक मल्लावा दई समदर री अर भगवान माथ मरोस री बाता करण सामग्यो, तो अ नी चकराघोडी सीक ईनक र सामो भाकण सामगी । बीन आ ठा नइ पडी क वा काई कव अर काई नई, ठीक उणी तर जिया गाय री अँक छोरी भरण मू पाणी भरण न आई । घडियो तो भरीजग्या पण वा सदेई घडियो भरण आळ अँभी वावत सोच, जिको आज घायो केनी । घडियो भरीजर पाणी बार बवण सामग्यो, इण री बीन ठा नई ।

छेवट विछडण री वेळा नडी आई देखर अँनी हीमत करी, सरधा बटोरी अर घोली—'ईनक, हू जाणू हू तू स्याणो है, सगळा तन समभदार बताण पण तो ई म्हारी अतरात्मा कव, म्हारा ईनक, आ नणा न थारी इण सोवणी सूरत रा दरसण आज विछडिया पछे केर हुवण रा कोनी ।''

ईनक कयो—'अ नी जे तन भरोसो नई है, तो आ बात थारी है, म्हारी तो आरमा कव क हू थारो मू डो पक्कायत देखमू ।''

'देख अ नी' ईनक कयो, म्हारो जाज अठीन मू मगळवार न गुजरसी । तू पाडोस माथ मू अँक दुरवणी मागर निआअे, जिको तू मन देत सफ । मन राजी राजी, हरलील न जावता देखर तू थारो सोच फिर त्याग देसी इसो मन भरोसो है ।'

पण जद वा छेकडी घड या माथ मू भी छेकडसी घणी आई, तो ईनक अ नी न टावरा री भोळावण दी—'अ नी, आन सोरा राये । दुकान रो ध्यान राये । दो पीसा कमावण री चेस्टा करे तिव मू घर रो आघो धिकगो रव । ल देख म्हारी सोगन अर तो मुळक राजी रईजे मलो । म्हारो फिर ना करे । अर जे मन मे टर व्याप भी जाव, तो बीन भगवान र ह्वास कर देईजे । और सगळा पळट जाव, पण भगवान तो आप्त माथ मू उबारन वार काढ़ । अर देख, हू जाऊ हू, तो

वठ किता भगवान कोनी ? अठ है, जिको वठ ई है । जे हू अठ सू जाऊ हू, ता भगवान सू थोडो ई गया परो । अर ओ समदर भी ता भगवन् रो है । भगवान रो है समदर । भगवान ई उण रो सिरजणहार है ।”

अनी अणवोल, पण उण र उणा सू चोसरा भर । मू डो रोय रोपर रातो अर आख्या जळजळी करली । ईनक ऊभो हुयो । बिलखती अनी न आपरी साबी अर जोरावर भुजावा र घेर म बाधली । इचरज सू चमगू गा हुमोडा टावर रा बुक्का लिया । सगळा सू छोटकियो रातभर ताव म दडादोट पड्यो हो । अनी बीन बघेडर जगाएण लागी, पण ईनक बीन पाल दी— ‘अनी, ई न ना जाण । इत्त छोटें टावर नै काई याद रसी ?”

ईनक बीर पालण र नडो गयो । अघर सोब बुक्को लियो । होटा री अवाज भी नई करी बीर जागण र डर सू । पण अनी माय सू अेक कतियो लाई अर छोटोई छोर र लिलाड कनै सू केमा री अेक सट कतरनै ईनक न सनाणी खातर देयदी । ईनक कयो— ‘हू पाछो आम्, जद ई न कसू देख, हू बिदेस गयो जद तू अणसमभ हो, छोटो हो । हू पार वेसा री लट लेयग्यो, आ देख । अर आपरी लट देखर पछ ओ कित्तो राजी हुसी, अनी ?”

इत्ती बात कई अर ईनक आपरी मुसाफरी र समान री पाट उठाई, हाथ हिलायो अर आपर मारग दुरग्यो, जाणै घरमसाळा नै छोडर बटाऊ निरमोई ज्यू दुर जाया करै ।

अनी पाडोस माय सू अेक दुरवैणी मागर लाई, अर ईनक बतायो जिव दिन अनी ईनक न देखण री कोसीस करी । कीन ठा बीन दुरवैणी सावळ जचावैणी नई आवती ही, अथवा दुरवैणी घणी तज नई ही अथवा रोवण र कारण अनी री आरपा कमजोर पडगी ही, अथवा बीरो हाथ धूजग्या हा । चाव काई हुयो ईनक जिको दिन अर जिकी बेळा बताई उण माफक बीरो जाज यठ सू गुजरग्यो । ईनक घणो ई हाथ हिलायो, पण अनी, सावण अनी, बीन देख नई सकी ।

ईनक र गायब हुवत जाज री आखरी डुक्की तई अनी कोमीस करती रई पण ईनक दीस्यो कोनी, अर वा रावती बळखती घरे आयगी, जाण ईनक न दकणाय भाई हुव ।

पण अब परे आयर जे मू डो लेयन पड जाव, तो बिमा पार पडै । लार सू काम चलावण खातर ईनक दुकानगारी रो परब घ करन गयो हो । पण बोपार रा काम अनो जिती सीधी सादी चुगाई सू कद पार पडता ? जद काई आयर समान मालावण न आवतो तो अनी सागी दाम बतावती । आयब आपरी आदत र कारण दर मोलायी करता, अर सागी दाम सू घगयोटी रीगन माय देव्या सू अनी न

पोसावतो कोनी, कारण वा पत्नी घणा, भर पछ थोडा दाम नई वतावनी । इण कारण ग्रायक अनी बन सू माल नीठ निरावळ परोदता अथवा जद कोई दूजी दुकान खुल्ली नई लावती, तो अनी र दूकता । इण रो पळ भो हुयो व थोडा दिना मे बिनी बटटा बंद हुयग्या । आसुर किणी तर घर रो काम चलावण खातर अनी दुकान रो समान घाटो खाय खाय न बंचणो सुरू कर दियो । मन मे घरणो ई विचार आया व ईनक आयोडो ओळभो दसी, दुकान न वेई तरें चालू राखू, पण अना रो सैनत पार पडी कोनी ।

पर पारचा चलावण खातर पीसा चाईज, पण धन आवण रा कारण जडीज्या आमदनी रो रस्तो रक्क्यो । अनी टावर रो दूध बंद कर दियो । खाली छोटकिय न दूध पावती कारण बो मादो तातो हा भर हाल धन खाव जितो हुयो भी कोनी । आप दो टम रो जानगा ग्रेक टम सू काम चला लेवती । कदेई कदेई तो निराहार ई टक टाळ देवती । पण मन म आसा रो दिवलो सजायोडो हो-ईनक आसी भर उण व दरसन सू ई म्हारा सगळा कस्ट कट जासी ।

अनी पावती व ईनक आव जित वा आपरें तीनू टावर न जीवता राख लेव, पण मादोड टावर री हालत दिनोदिन बिगडती गई । बीरा हीडा चाकरी कारण मे अनी पाछ का राखी नी । मा न टावर रो हीडो जिए तर करणो चाईज, उण सू किणी भात कम ध्यान अनी नई दियो, पण फेर भी दुकानदारी र कारण बीन ई वार टावर न छोडर बिच मे उठर ग्रायक न सौदो देवणो पडतो । आ भी हसक क बीन दलाळण खातर खोल डाक्टर न फीसा देवण जित्ता पीस रो बीर बन टोटो हो अथवा रागी खातर जिकी जिकी दवाया री जरूरत पड, व खरीदण म वा असमथ ही । कारण काई हुया, आ ता भगवान न ठा है, पण पूरो ध्यान देवना यका भी लावी मादगी पछ अक दिन जद अनी न ठा ई नई पडी इण छोट टावर री निरदोस आत्मा निवळगी वय पीजर माय सू पछी उड जाया कर ।

अनासुरती मौकारा

११
 आराम सू रँवण आली अनी अब भगता जिसे जूए पूरी करण लागगी, आ बात फिलिप सू किमी छानी ही ? परा लोव लाज र कारण वो मन न मसासर रय जावतो । केई बार सोचतो—अबार अनी न ओडी बगत है वीन सायता री जहरत है, जे हू बीरी सायता करू 'तो वाई आट है ? इसा विचार फिलिप र मन मे उठता, पण फेर सायता देवण रा परणाम बाड-वाई निकल सकै, आ सोचर वो पग पाछा मल देवतो । छेवट वी मन नै पक्को कर्यो—अरे फिलिप । तू मिनल नाव धरावै अर अनी रो हेतूला, अर अनी इत्ता रोभा देखै । ओक पीसो बीर खातर मीर जित्ती कीमत राख । आज जे तू ई बीर ग्राडो नई आसी तो थारो पीसो फेर फद काम आसी ?—इए तर आपरा विचार बिर करन फिलिप अनी र घर बानी टुरयो ।

फिलिप घर मे गयो । बडत ई कमरा खाली पडयो हो । उए माय सू मायलै कमर मे गयो, अर ओक छिन खातर बारण कनै थय्यो । बारण कन ऊभो रयो । बारणो जडनायो, पण पाछो उथळा नई । बोडी ताळ अडीवयो, पण कोई जबाब नई । तीसर और बडी खडकाइ, पण बारणो खालण न कोई को आयो नी ।

जद मोकली ताळ तई अडीनए र उपरायत भी रोइ बारणो खोलणन नई आयो, तो फिलिप अघर सीव आपई बारणो खोल्हो, पण बीरा पग बट ई हग्या । लूगा बेस, कागसिया फेर्या नै हप्तो भर हुयग्यो हुसी । गामलिया मैला कुचैला अर भर भर कथा हुयोडा । नाड नीची अनी बढी ही, दुन म तळतळीग्योडी अवार छोटो छोर न दफणायर पाधरी आई ही । दोन बढोडा टावर कन बठा बठा रोव । आपर दुव मे वा इत्ती हूब्योडी क अवार चाव कोई आय जावो, वा बीर सामो तक नई आकती । जद वीन बम पड या वँ काई आयो है, तो वी आपरो मू डा भीत बानी कर लियो, अर वा बमका फाट फाटर रोवण लागगी ।

अनी न इए हानत म दसर फिलिप रँ जीव म बाइ बाकी नई रयो । वो बोल्हो—“अन, अनी, हू मे ओव बात ।”

अनी इए तर बढो रई जाए वी फिलिप री बात मुणो ई बानी ।

बो फेर बोल्यो—“अनी, हू फिलिप हू, तू म्हारी बात सुण कोनी ?”

अनी बोली कोनी, पण बी आपरी नस थोड़ी सीक घुमायो, जदपी फिलिप र सामन नई ।

फिलिप दो पावठा आग सिरक्यो, अर गळगळ सुर मे कयो—“अनी, अनी, आ आज हू था अर वन मगतो व एर आ आयो हू । थारी कि किरपा रो भिरपारी बणार ।”

अनी बोली—“आव फिलिप, घणा दिना सू आयो । तँ म्हारी किरपा री कोई बात करो ? मन भगवान किरपा करण जोगी राखी ई कोनी । हू इसी गरीबणी, अनाथणी, तू सिमरथ, म्हारी काई खिमता क हू थार ऊपर किरपा करू ?”

अनी रा वेदना भर्या सबद सुणर फिलिप सजखाणो पढग्यो, भेकाभेक पाछो काई उथळो भी झूकळ्यो कोनी, पण सो ई अनी सू थोड़ी ताळबात करण र ख्याल सू, वो बिना अनी र क्या ई, अनी र पसवाई बढग्यो । थोड़ी ताळ छुपचाप बढो रयो । भटपट बात सरू करणी भी आवतो, कारण छुपचाप वन बढ जावणो भी भेक अतरणी बात है ।

फिलिप पूछ्यो—“अनी, अठ सू गया पछ ईनक रा कोई समाचार आया ? कद तई आसी ? मज मे तो हुवल्लो ? समाचार जरूर भेज्या हुसी ?”

अनी कँयो—‘ नई । ’

फिलिप— गया पछ अेकर इ को आया नी ? आ काई बात हुई ?’

अनी—‘ हू काई बताऊ फिलिप । परमात्मा जाए । ’

फिलिप—‘ पण वा हत्तो निरमोई किया हुयग्यो ? परमात्मा बीन राजी राज, वो इसी भूल करण आछो तो कोनी । ’

अनी— ईनक मन अर टावरा न अकप ळ खातर ई बिसराव कोनी । जठ भी है, वो म्हान पक्कायत याद करतो हुसी । वा निरमोई कोनी फिलिप ईनक निरमोई कोनी । ईनक घणा आछो आदमी है, बीत खरो मिनस है ।”

‘अनी’ फिलिप क्या—“थारी बात सौळ आना ठीक है । म्हा दोना न आछो तर परखने कर तँ साच समझर दोना माय सू जिको इक्कीस हो, बीन छोट लियो । हू कबुल करू, ईनक म्हार सू नू ठो पडतो हो अर जिको चीज धीर मन भाप जावती बीन पावण यातर वो घरती आकास भेक कर नाखतो अर जित बीरो रळो नई पूरीजती वो आराम सू सास नई लेवता ।”

“हा, फिलिप, तू ईनक र गुणा सू वाक्ब है।” कयर अनी थोड़ी सीक आपरी नस और घुमायो। हाल भी बीरो मू डो फिलिप र सामनं तो को हुयो ना, पण अब फिलिप न मू ड रो पसवाडो दीसण लाग्यो। वो बोल्थो—“अनो, विदेस-जातरा कोई मामूली बात थोड़ी ई है, अर आडो आदमी तो विदेस जातरा र नाव मू ई घमक जाव। पण ईनक री छाती देख कै वो टुरग्यो, अर हाल पाछो आयो कोनी।”

“हा, फिलिप।” कयर अनो आपरी आख्या पूछी जिकी घडी घडी दार माली हुवती ही।

“पण अनो,” फिलिप कयो—“अेक बात सोचण री है, ध्यान दवण री है। ईनक तन छोडर गयो है, नाना टाबरा न छोडर गयो है, ये बीन खारा तो लागता को हा नी। ये प्यारा लागता, इत्ता प्यारा, क थासू बेसी प्यारो, अथवा पार बराबर प्यारो उणरै खातर इण घरती भाय और कोई कोनी। पण फेर भी वो छोडर गयो परो। म्हार क्याल सू बीन कोई बूबी तो आई काती, अेवाअेव सईड तो उपड्यो कोनी। आखर गयो तो सोच समभर, धार विचारन है।”

“हा फिलिप।” कयर अनो पाछो थोडो मू डो भीत कानी घुमायो अर आपरी माली आख्या पूछी।

फिलिप कयो—“अनी, आ भी हू जाणू क लोग सब सपाटा खातर भी विदेसा जाया कर, पण लुगाई-टाबरा न सार छोडर सैल सपाटा करण आलो आदमी ईनक कोनी।”

“हा, फिलिप।” कयर अनी रोवण लागगी।

“अरे अनो, इया कोई रोवण लागगी?”

“फिलिप, अबार म्हारो जीव उठ्योडो है। म्हारो छोटे छोरो गुजरग्यो, बीन दफणायर हू धार आग-आग आई हू। म्हारी आख्या आग बीरो प्यारो प्यारो मू डो चक्कर काट। फिलिप, वो इतो मादो रैयो, पण वदेई रोवण रो काम कोनी।”

“अनी, मनं भाफ बरे, हू तो अनासुरती ई घर मे आयग्यो। जे नानडियं री मन ठा हुवती, तो हू बतलावण बर्या बिना थोडो ई रवतो। धारा टाबर जिता ई म्हारा टाबर। टाबर तो सगळा न आछा लागे।”

“फिलिप, जद इनक गयो, तो मन नानडियं री भोलावण देयर गयो। हू नाकामल मा सिद्ध हुई कै बीन जीवतो को राख सबी नी। जद ईनक आसी, तो हू बीन कोई कसू।”

फिलिप कयो—“अनी, दुख री घडी म धीरज धारण बर्या ई पार पड। जे आदमी दुख सू घबरायर रोवणो सरू कर देव, तो रोज री कोई छेडो ई कोनी,

वधाच जित्तो ई बघ जाव । गयोडी चीज पाछी आव कानी, आ सोवर समभरण लोग मन न पाछो जमाव ।”

अनी बोली— फिलिप, जीव न घणो ई जमाऊ पण जमै कोनी । थोडी सीक सपत सू ज्यू वरफ गळ्ळण लाग जाव, इणी तर नानडिय री थोडी सीक याद आवते ई कोसीसा सू जमायोडो मन पाछो उखड जाव ।”

अनी री आट्या म फेर पाणी आयग्यो, अर बी छान सीक पू छ सियो ।

फिलिप अनी र दोनू टाबरा रा मूडा चनयपाया, अर फर अनी सू छुटटी लेयर बो फेर आवण रो वण करतो—करतो उठग्यो अर गयो परो ।

अरज

एक दिन आडो घासर फिलिप फेर अनी र घरे आयो । अबकाळ बिना सकं वो मायल कमर मे गयो परो । अनी वीन देखर आपरा गामा भडकाया अर थोडी सावळ बठती बोली—“आव फिलिप । बी दिन तू आयो, पण हू म्हार दुल सू इत्ती मारेल हुयोडी ही क यारी बात तो सुणनी वाकी रयगी, अर हू म्हारा ई रोवणा रोवती रई । हा, आज बता, तू काई काम आयो हो बी दिन ?”

फिलिप कैयो—“अनी, हू यारी किरपा रो वरदान लेवणनं आयो हू । बस और म्हारी कोई घायना कोनी ।”

“पण फिलिप, तैं बी दिन आळी सागण बात आज फेर दुसराय दी । म्हारी, अभागण री किरपा चीज काई है ? बीरो मोल काई है ? बीसू काई वण विगड है ? तू चाव काई है, म्हारी समझ म आ को आई नी ।” कयर अनी आपरी खुरसी माथलो गीदो फिलिप री खुरसी माथ विछावण न हाथ बघायो । फिलिप ‘नई नई’ कयर अनी रो झलायोडो गीदो आपरें हेट विछाय लियो ।

फिलिप पूछ यो—‘अनी आज भी इनक रा समाचार तो नई आया हुवना ?’ नाड हेटी करती अनी बोली—“नई फिलिप ।”

“अनी ” फिलिप कयो, “म्हारें विचार सू इनक टावरा रो अर थारो धणो सोच करतो ।”

‘पण फिलिप, सोच करण री तो इनक री आदत ई कोनी । वो तो मन भा सोच करण देवतो कोनी ।’ कयर अनी आज निरा बरसा सू फिलिप र सामन आल सू आल मिलायर भाकी ।

“तू कब जिकी बात तो ठीक है अनी, क वा सोच फिर री बाता नई करतो, पण आखर बी री जातरा रो उद्देस्य काई हो ? ओ ई नी, कं टावरा न सावळ पडा लिखायर मिनसाचारें बणावणा जिएण सू कैं व बीर विच्च अर थार विच्च आछो अर सोरा जीवण बिताय सकं । क्यू, म्हारी बात कूडी है ? जे कठई फरक लागतो हुव, तो तू चुप ना रये ।” कयर फिलिप अनी र सामन भाँकयो ।

अनी सामन भावया विना ई बोली—“फिलिप, थारी बात अवेकदम ठीक है । वो सदेई टावर न पढावण री बात क्या करतो ।’

फिलिप पूछ्यो— टावर पढएन जाव अनी ?” अनी बोली कोनी ।

“म्हार ख्याल सू जावता को हुसी नी । अर फर जे जाव है, तो पणो भाछो बात । क्यू जाव काई अनी ?

अनी फर चुप ।

थारी चुप्पी सू मन ठा पड क टावर हात पडणा सरु हुया कोनी । अनी, जिको बाप आपर टावर न भाछा अर ऊचा बणावण र बिचार सू परनेसा मे राख छाएन न गयो है वो जे पाछा आपर देगसी क बीरा टावर सफा ठोठ रगया, अर जगल म बछेडा कुन्डरा मारता फिर ज्यू टप्पा टाव, तो सी बरस पूरपा पत्र बन्धर म भी बीरो आत्मा कळानी रैसी ।’

‘ फिलिप थारी बात बराबर है ।” अनी बोली ।

फिलिप क्यो— अनी, बाळपणो भिनवाजून री सगळा सू धणमोली भीस्था है । टावर रो माया गोली मिरमट र सोध ज्यू है । जित्त तई सिरमट नीनी हुय चत्तर कळाकार उण सू भूड बोल जडी मूरत बणापर कळा रो नमूनो पेश कर सा । आडा कारीगर बूडी—दरणा बणापर ई सतोस कर लेव । पण जे वो लोवो पडयो पडयो भूव जाव, तो बीरो कारीगरी अर कळा ग्रहण करण री सगती जावती रव । फेर जे बीन पाछो कूटर सिरमट बणाप लेव, तो ई बी मे लोव तो भाव ई नई सगती ता सबर ई नई ।’

अनी बिच मे ई पूछ लियो— इण सू थारो प्रयोजन ?”

फिलिप उवळा दियो— ‘टावरपण म निमाग री पक्क सबळी हुव । अवेक सावळ माद कर मोडी बात फेर सजा-ई बिसरीज कोनी । निमाग म लवक भी हुव निण भू करन भात भात री वाता रो भडार बडा या छोगा समाबण री उण म जिनता हुव । उजू उजू ऊमर अनी अर फेर ढळनी नाच, दिमाग री आ सगती घटती जाव अर अवेक वगत इसी भाव, क आदमी न खुद आप र दिमाग माय जू मळ भावण लाग जाव हुआ न भाव जिक म तो इचरज ई काई । अनी, जद ओ बाळपण रो गुलाबी भोर वीत जाव फर भलेई कितो ई आख्या फाडो बा परमान वेळा तो हाथ भाव ई कानी ।

पण फिलिप, तू कवणो काई चाव है ? अनी अमूमर पूछयो ।

अनी , भूओ उतारया फिलिप क्यो ‘भगवान तब दो टावर दिया है दोनू हसियाद लाग । पण जे अबार आर दिमाग म काम नई लेईज्यो तो ब साद कागद ज्यू कोरा-ग-कोरा रय जासी । जद ईनक आसी, अर आन जगली

जानवरा ज्यू डील में पागुर्योडा, पण अणभण्या दखसी, तो घीरी लाख बोसीसा रं उपरायत भी ये टावर की सीख नई सबला । इण खातर, अनी, म्हारी येक अरज है, जिकी हू थारै आग करण न आया हू ।”

‘फिलिप, तू मन लजग्याणी ना घाल । हू काई जोगा हू जिको तू मन अरज करे । म्हारो नादारी री हालत म तू म्हार भू वात कर है, ‘आ ई येक थारी मरवानी है, नई तो दुख री वळा म नडा ई कुण अड ?’ कयर अनी जमी कुचरण लागी ।

“अनी, देख आपा टाररण में सागर म्योडा हा, अर येक चीज न ठेट सू ई साबळ जाणता आया हा । हू तन येक वात करू । देख अनी, तू नटे ना । जे नटगी तो तने ईनक र प्यार री सौगन है । हू चाऊ क दोनू टावरा नै इस्कूल म भरती करावय हू । अनी, आ इत्ती सीक भीख अर आ ई मरवानी है जिकी हू थार सू चाऊ हू । कँयर फिलिप अनी र सामा भावयो ।

अनी चुप ।

‘दख अनी, आ इसी गर सोच म पड जिसी तो कोई वात ई कोनी । टावरा री पढाई सू ईनक नराज तो पडायत को हुव नी । उलटो वो तो मोकळो राजी हुती । अनी, येक वात तो आ है क म्हारै पीस टक्क री कमी बोनी जिसी तने ठा है । थार टावरा खातर जे हू दो पीसा लगाय हू, तो म्हार की फरक पडै कोनी । इण र उपरायत ई जे थारै मन में की बिचार आयतो हुव, तो ईनक र आया सू भले ई तू मन, थार जच तो पीसा पाछा देय दिए । पण अनी, तू मन अब टावरा नै भरती करावण दे ।” कयर फिलिप अनी र घेट वाल्टर माथ हाथ करण लागयो । वाल्टर री बँन मेरी भी फिलिप रँ कन आयर झूमगी, अर वी लाड सू मेरी न आपर लाळ म बठाणी ।

अनी हाल उथळो नई दियो ।

फिलिप कयो—“अनी, देख, अ किताब सोवणा टावर है । हा, तो वोल, तू अब मन काई कव ?”

अनी आपरा नैण भीत कानी बरवा धोली— हू आन म्हारी गरीबी अर साकड भीड र कारण इसी सुगली अर फुगड लागू हू क थार सामो झुंझो करण री म्हारी छाती को पडैनी । ईनक र विजोग, अर ऊपर सू नादारी म्हारी कमर भाग नाली । जद तू घर में आयो, तो म्हार दुख रो दगियाव उमडगयो अर वी म्हारी सरघा तोड दी । फिलिप, अब थारी वात सुण्या सू म्हारै सरीर रो रयो सया सत ई नीसरग्यो । पण फिलिप, थो मन पडो भरोसो है क ईनक जीव है । जद वा पाछा आसी, तो तू थार गरब री बिन ईनक न भनाय गिये । ईना

वेइ रो भोसाप मार्ये राखण आळो कानी । वो थारी पाई-पाई उतार देसी । धन रो करजो पाछो उतारीज सक, पण फिलिप जिवी दया, जिकी उदारता तें देखाळी है वा उतरण रो कोनी । जे हू म्हारी चाम री थार पगरस्था बणवाय दू, तो भी इणरो बढळा नई उतरें ।”

फिलिप क्यो—“तां अनी, हू आ समभलू क ता म्हारी अरज कबूल करली, अर हू टाबरा न मदरस घाल दू ?”

अनी अब आपरो मूडो भीत कानी सू घुमायर फिलिप कानी क्यो । नणा मू नीर भरतो हो जिए सू अनी रा गोरा गोरा गाल चिपचिपा हुमग्या हा । दोठो सावळ जमती नई हो, पण तो ई अनी फिलिप रें सामी भाकी, घूभी हुई अर बोली—“फिलिप, म्हारी ओडी बगत मे सँ म्हार टाबरा री बाब भाली है आन हूबता न उबार्या है, तो तन भगवान बघासी ठाकुरजी तन सुखी रावसी ।” फर अनी फिलिप रें नैडी आई, अर फिलिप रो हाथ आपर हाथ मे भाल्यो अर आपरी त्रिगयता जतावण खातर दोना हाथा सू फिलिप र हाथ न प्यार सू मसळयो । प्रेकाप्रेक अनी री आस्था भीचीजगी, सास ऊचो चढ्यो अर वा फिलिप रो हाथ छोडर लारल कानी, छाट सीक बगेच भ गई परी ।

अनी र स्पश सू फिलिप र सरीर मे हळकौ-सीक बीजळी रो करट दोडग्यो हुव ज्यू ललायो । बी सोच्यो क हू सफळ हुयग्यो, अर म्हारो मनोरथ पूरण हुयग्यो । धीर डोल मे धोगणी फुरती आयगी, अर वो अकास मे उडतो हुव ज्यू आपर घर कानी दुरग्यो ।

स्याणा टावर

दूजें दिन भैनी र घर धागें सू निकळती बगत टावरा न फिलिप हेतो करयो । भट वाल्टर बारें आयो । फिलिप कागद मे लपटयोडो कपडा रो भेक बडळ भलावतो बोल्यो—“घार घर मेरी खातर है । भनी माय सू आई, उणसू पैली तो फिलिप गळो ई लाघयो । भनी लार भाकी, पण फिलिप मुडर देखण री चेस्टा करी कोनी । कपडा सेवतो भनी सवी जरूर, पण टावरा न भनाया रा हुव ज्यू कित्ताक दिन राखती ? नवा गाभा पर्या सू टावरा रें चरा माय गम्योडी नर पाछो बावड्यो, घर दोनू रत्तो आळा टावर दीसण लागम्या ।

वाल्टर पूछ्यो—“मा फिलिप म्हारें काई लागें ?”

मेरी बोली—“मा, फिलिप म्हार काई लाग ?”

दोना र मू डा सू सागी सवाल सुणर भनी पली तो सरमीजगी फेर मुळकी, घर बोली—“फिलिप साव कित्ता चोखा भादमो है ।”

‘हा, मा, चोखा तो है, पण म्हारें काई लाग ?” वाल्टर फेर पूछ्यो ।

मेरी बोली—“हू बताऊ काई लागें । आपारें लाग फिलिप चाचाजी ।”

वाल्टर कयो—“लाग चाचाजी, ठा घणी, हा मा, तू बता । आ मेरी तो भट बिचाळ बोलण लाग जावें ।”

भनी बँयो—“बैन री बात ठीक है बेटा । अ घार चाचाजी लाग ।”

वाल्टर नई तो कबूल कर सेवतो पण पली मेरी बताय दियो, इण सू वाल्टर र कबूलण री कम जची । बी कयो—“मा, तू तो हरेक बात मे मेरी री हां मे हू रलाय देव । मनै साच बताव, फिलिप साव म्हार काई लाग ।”

“अच्छया, जोजफ साव घार काई लाग ?” भनी वाल्टर कन सू ई याव करावण खातर पूछ्यो ।

“जोजफ साव ? ब तो चाचाजी लाग ।” वाल्टर कयो ।

तो फिलिप साव भी चाचाजी लाग ।” मेरी बोलगी ।

‘अरे तू ना बोल म्हारी बडी वन । चार जित्ती अक्कल ता म्हार म ई है ।

थार सू वसी भले ई हुवो घाटू कोनी ।' कयर वाल्टर मेरी र सामन आपर नवा गाभा ॥ अकडर अूमय्यो ।

अनी पूछयो—'जोजफ साब थार बाबा काई हिसाब सू लाग ?'

'क्यू मा, तन किसी ठा कोनी ? जोजफ साब तो बापू रा भायला है । वाल्टर मेरी र सामन भाक्यो क भई इसा इसा सवाला रो उयळा तो मन ई देवणा आव है ।

मेरी बोली—'म्हार सामा क्यू अकड है, बाह भई बाह, तू आछो भाई हुयो । बन र आग कोई भाई इया आपरी सान दखाल या कर ?'

अ नी कयो—'आछा बन भाई आपस मे जिद कर कोनी, भगड कोनी । ये तो दोनू स्थाणा हो फर आ काई बात ?'

वाल्टर की बोलण आळो ही, पण अ नी बिचाळ बोलर कयो—'जू जोजफ साब थार बापू रा भायला है नी, बिया ई फिलिप साब थार बापू रा भायला है । अब बताव, फिलिप साब थार काई लाग्या । थारी अकल री पारख कह, बोल देलाण ।

फिलिप सात्र चाचजी लाग्या, और काई लाग्या । कयर फर वाल्टर गरब सू मेरी सामो भाक्यो ।

इत म मेरी बोली— चुप, फिलिप बाबाजी आव है । वाल्टर सामन भाक्यो, अ नी आपरा कपडा भडवाया, जित फिलिप माय घाययो ।

वाल्टर कयो—'बाबाजी ये देयग्या जिना कपडा इत्ता चोखा है इत्ता चोखा क काई बताऊ ?'

फिलिप वाल्टर न गादी मे उठायर बीरा लाड करण लाग्यो ।

वाल्टर रा लाड हुवता देखर अकेर-सीक अ नी र गाला माथ याडो सोक सतोस भळक्यो, पण सतोस री रेखावा इत्ती खीण ही क फिलिप न वारो पतो पड्या पली ई व बिताइजगी ।

फिलिप पिलग माथ बठायो । अडे-छेड मेरी अर वाल्टर बठग्या । सामन मूड माथ अ नी पसवाडो देयर बठगी ।

फिलिप खुज माथ सू दो बिस्कुट काडर पूछ्यो 'बोली, बिस्कुट कुण लेसी ?'

फिलिप रो सवाल पूरो हुया पळी ई वाल्टर बिस्कुट भपटर लेय लियो अर मटकावण लाग्यो । मेरी ना ता बोली अर ना बीन वाल्टर री मगताई आछी लागी । बा फिलिप सू निजर बचायर वाल्टर सामी करडी करडो भाकी पण 'वाल्टर वीरा परवा करया बिना बिस्कुट खावतो रयो ।

फिलिप मेरी सामो बिस्कुट कर्यो । धी आख्या हेटी करली । वाल्टर कँयो—
“चाचाजी, आ नई लेव, तो मन देय दो । नई लेव जिक रा नोरा नई करणा ।”

फिलिप हसण लाग्यो अर बी खुज माय सू दूजो बिस्कुट काडर वाल्टर न केर दियो । केर मेरी न कँयो ‘लेवल बेटी ।’ मेरी दबो आख्या भा सामी भाकी, अर बठिन सू जद हकारे री सन मिलगी, तो मेरी बिस्कुट लेयर आपर हाथ मे राख लियो । फिलिप कँयो—“खा ले बेटी, हाथ मे बिस्कुट खराब हुजासी ।” मेरी बात मानलो, अर थोडो थोडो बिस्कुट तोडण लागगी ।

अनी माय गई, पाणी री गिलास साई, फिलिप न धामो अर बी पूणी गिलास पीयग्यो । गिलास न धोयर अनी ठोड ठिकाण मेलर पाछी आपरी जगा आपर बठगी ।

“बे आ बतावो कै था दोना माय सू पणो स्याणा कुण है ?” फिलिप पूछ्यो जिक सू पली वाल्टर उयलो देय दियो—“हू ।”

इत मे तो बारी माय सू केई टावर दोस्पा जिका बस्ता लेयर पणन जावता हा । फिलिप कँयो—“स्याणा तो अ टावर है ।”

वाल्टर पूछ्यो, “किया चाचाजी ?”

“अरे भई, अ पढणन इस्कूल जाव ।” कँयर फिलिप वाल्टर रा हाट चूम लिया ।

“इस्कूल जाव जिका स्याणा हुव ? ता मा मन ई इस्कूल भेज, हू ई पढण न जामू, स्याणो बणसू ।” केर वाल्टर मेरी न कँयो—“मेरी, जे स्याणी हुवणी चाव, तो तन भी इस्कूल जावणो पडसी ।”

“हा, मा,” मेरी कँयो—“हू आप इस्कूल जामू ।”

फिलिप बापू

दोनू टाबरा न मदरस घाल दिया, भर मास्टरा न घोली तर मोळावण देय दी कै हाल नवानवा है जित्त थोडी हिंयाळी सू पठाव । पढएन जावण सू पली टाबर शेवर फिलिप री चड्डी घाव । हसी-तमासा करन केर मदरस जाव । दोपार री छुट्टी मे केर फिलिप री चड्डी घाव । मन भावतो दोपारो करन केर पाछा इस्कूल जाव । जद घर री छुट्टी हुव तो केर पाछा कळचड्डी मांयकर घाव । फिलिप काम मे लाग्योडो हुव भर अनी री राजी खुसी रा समाचार पूछ ।

अनी सू मिलण खातर फिलिप री मन छपपटावतो, पण अनी न लोग हुळकी नई कवण लाग जाव इण डर सू बो अनी र घरे नई जावतो, भर टाबरा सू समाचार जाणर ई जीव नै थावस देय लेवतो । किती ई बार बीनै अनी सू बाता करण री, बीर वन बठण री, रळी भावतो, पण लोक-लाज र कारण बो मन भाष कबजो राखतो भर घर म बढणो तो भळगो रयो, अनी री गळी मे ई पग मेलतो कोनी ।

पण अनी खातर बीरो जीव झडतो रवता । अनी री सायता करणी चावतो, पण कर नई सवतो । कठई अनी आ नई सोच न फिलिप मन गरीब जाणर म्हाारी सायता कर—इण बात रो बडो ध्यान राखतो । बीनै ठा ही कै अनी रै घर मे रोटी रो जुगाड कोनी पण केर भी खुल्ल रूप मे बो सायता करणी चावतो कोनी । जद टाबर घरे जावता तो बार साग दो दो तीन-तीन सेर भाट री पोटळी बाप देवतो । मेरी न कवता—“तू अनी नै कय दिए क नवी फसल रा गऊ भाया है, भारी रोटी घणी सवाद हुव इण कारण फिलिप चाचाजो भाटो भेज्यो है ।” इणी तर घर री गाय रा कयर भाखण भेज दिया करतो । ‘बीत फाइन’ कयर कपडो भेज दिया करतो । कदेई मुलाव रा पुसव भेजतो—इण बसत रा अ पलडा पुसव है । कदेई कवतो—अ जावती बसत रा पुसव है । केई बार सुसिया भेजतो—इण जात रा सुसिया कठ-सीकई लाव ।

टाळता थका भी कदेई सीक तो फिलिप अनी सू मिलण नै पूग ई जावतो । फिलिप न अरोसो हो क अनी अब बीसू भुळ मिलर बाता करसी, हससी, बोलसी पण आ बात नई हुई । फिलिप र उपकार भर सनेव रै बोळ सू अनी रो हिरदो

इत्तो मदगद घर दब्योडो हो क जद फिलिप मिलण न आवतो, तो अनः उण सू पुरी बात ई नई कर सकती । वो जद कोई बान पूछनो, तो 'हा' अथवा 'ना' मे उयळो देय देवती अथवा जे सरतो हुवनो तो टिचकारी अथवा नस सू ई काम काड लवती ।

अनो बाव फिलिप सू बात करो या ना करो, अनो रै टाबरा खातर इण धरती भाय फिलिप सू बालो दूओ कोई सकस नई-हो । जद क आपर घर मे हुवता, तो फिलिप कने जावण न सोडावण लाग जावता । जद फिलिप कन जावता, तो जोर सू हावा करता, दहबड दहबड अडोदडी घोर भाय पड जावता अर आपरी भीठी बाणी सू फिलिप र घर न आणव सू भरपूर कर देवता । फिलिप रै घर मे क करता ज्यू हुवतो, बारी इ छया रै खिलाफ अेक पत्ता ई नई हिसती । घर-घरणी जाण टाबर ई हा, फिलिप तो बारो मुनीम हो । फिलिप र किरपाळू बरताब टाबरा र हिरदा न इण भात जीत लिया क बाने फिलिप बिना पळ-छिन खातर आवडनो भोगो हुयग्यो, अर आप र भरपूर प्रेम र कारण, काई ठा कद सू, बा 'फिलिप बाबाजी' कवणो छोड दियो अर 'फिलिप बापजी अर 'बापजी तथा 'बापू' कवणो सरू कर दियो । फिलिप मी इण बात रो पूरो ध्यान राखतो जे उण रै बाप-पण मे रिणी भात री कसर अथवा कमी नई रव । टाबरा री छोटी-मू-छोटी सिवायत भाय भी वो कान ढेर देवतो, अर धीन अळगी करण री कोसीस करतो । वो टाबरा साग टावर बण जावतो । बासू कूडेई-कूडेई रीसाणो हुवतो, फर पाछो राजी हुवतो, अर जोर-जार सू हसतो तथा हसावतो ।

अब ईनक न गमै नै दस, पूरा दस बरस गुजरग्या, पण कोई पुरजोक समाचार आवण रो काम कोनी । टाबरा अब मा न पूछणो छोड दियो क कद आसी, अर बै पा ई समझण लागग्या के फिलिप ई बा रो बाप है ।

टावरा री रली

सरदी री हत । बढतो दिन । टावर हेजल र जगळ म फळ तोडण न जाव । टावरा न जावता देव, मेरी घर वाल्टर भी जावण रो मनसोबो बांधर मा बन गया । वाल्टर कयो—'मा आज तो सगळा टावर फळ तोडण ग्यातर हेजल न्या र जगळा म जाव ।"

मेलिय री निवार खावती-खावती भनी कयो—'॥ । मेरी कयो— 'घापा ई चाला मा ।

भनी केर कयो— हू ।"

'तो कपडा परन त्पार हु जावा ?' वाल्टर पूछया ।

भव भनी रो ध्यान पळटयो । बा सामन भंवर बोली— 'बाई बान है ?"

वाल्टर कयो—'हेजन वन हालो ।

भनी—'नई बेटा ।"

मेरी—'सगळा जाव, मा ।"

भनी—'सगळा न जावण दे । घापा र सगळा री होड घोडी है ।"

वाल्टर— पण मा, चाल तो काई हुव ? घापा तो कर्न चाला ई कोनी । रूजा टावर तो ई मौसम मे छुट्टी घाल हरेक दिन जाव ।'

मरी—'मा भे तो हाल हेजल-वन देख्यो कोनी । इस्कूल म म्हारी सहेल्या कवती क ब तो सुपार्या रा भोळ भर भरन लाव ।'

भनी बोली कोनी घर दोलियो बिचाळ छोडर बा अर्धबिच्य दोलिये माप गुडगी ।

वयू चालसी नी मा ?" वाल्टर पूछयो ।

भनी चुप ।

मेरी वाल्टर न मन वरी— हा, हा हालसी, हालो कपडा परा ।

दोनू जणा कपडा पर-परायर भनी र दोलिय कन भायर ऊमर्या ।

मेरी—'भे त्पार हुयम्या । तू थारा गामा बदळ ॥ ।'

टावरी रो इत्ता मन देखर अनी सू नटीज्या कोनी । बा कपडा परण लागगी ।

जद कपडा परन त्यार हुयगी तो वाल्टर कैयो—“बापू न साथ त्ति लेवा ?”

“क्यू, फिलिप बाई करसी ?” अनी पूछ यो ।

वाल्टर कैयो—“मा, फिलिप बापू म्हाने चोखा घणा लागे । म्हांसु तमासा कर । बे साथे हुसी तो घणा मत्रा आसी ।”

अनी बोली बोनी ।

मेरी कयो—“म्हे बुलायर लावा ।”

अनी पाल्था कोनी, अर ब दोनू सैपूर धान सू हाफता-हाफता फिलिप री बबकी पूग्या जठे घाट सू घोळो घप्प हुयोडो सतमाखी ज्यू फिलिप आपर काम म जुटयोडो हो ।

आप र कपडा रें घाट री खे लागण री परधा करया बिना ई वाल्टर फिलिप र मगरा र बारकर आपरा हाथ पूग्या जितो घेरी घाल दिया ।

‘अरे अबार कपडा-सत्ता परन कियां आया ? कठई जावण री त्यारी है काई ?’ कयर फिलिप आपरा हाथ झडकाया, अर वाल्टर र गाभा माथ लाग्योड घाटे न उतारयो ।

वाल्टर फर फिलिप र बिपग्यो, अर कैयो—‘हा, चालणा है, भट काम छोडो, कपडा परा ।’

फिलिप वाल्टर रा गाल हाथा मे दबामर, थोडो मुळकर फर बबकी रें काम मे लाग्यो ।

मेरी कयो—‘बापू फुरती करो, आपा न हेजल बन म हालणो है ।’

क्यू—आज काई है हेजल-बन म ? केर कदेई हानसा ।’ फिलिप कयो ।

“नई, बापू, आज हालणो पढसी ।” मेरी सामने ऊभर बोली ।

“पण आज म्हार काम घणो है । लोगा रो पीसणो आयोडो है । टेम माथ आटो नई दीरीजसी तो ओळमो आसी ।” कयर फिलिप आटो सोलण मे लाग्यो ।

वाल्टर कयो—“हा, बापू, हू जाणू । थान हालणो नई हुब जद थे काम घणा, रो मिस कर लिया करो हो ।”

फिलिप हसर वाल्टर र मगरा मे अेक देखावटी, कस्योडो, पण चोट करण मे पोला-सोक मुक्को लगायो । वाल्टर हसर मगरा मे खाडो कर लिया ।

मेरी कयो—“बापू, काम तो थोमस कर है, ये हातो परा तो काई हुब ?”

मेरी अब बढी हुवण लागगी । फिलिप न बिचार आयो क नकारो करया ई री कवळी मावनावा त्ति ठेस पूगसी । इण करण मेरी न समभायर कैयो—“देख बेटी,

या दिना काम की बेसी है, घर में कल भादमी सू घाटो पीसणो, रुक्का काटणो घाटो तोलणो, अ सगळ काम सावळ ताव घाव कोनी । घर देख बेटी, जद नोकरा र भरोस काम छोड देऊ तो तार सू ओळभो ई भाव । नोकर भाव्या भाग तो फेर ई भाव्या रो सरम सू, आपरो काम करता रव, घर ज्यू ई बान पोत लाध, ब गडबड गोटाळा कर ई देव ।

बापू, नीठ तो म्हा भा न हालण खातर तयार करी, घर जद म हकारो भर लियो, तो घर ये भडग्या । 'कयर मेरी आपरी परेसानी देखाळी ।

भनी रो नाव सुणता ई फिलिप र हाथ मायली कुडछी घाट र डोल म ई छूटगी । "तो भनी भी हालसी ?" बी इचरज घर फोड सू पूछयो ।

"हा हालसी बापू ये फुरती करो । वाल्टर ताकीद करो ।

हण म्हारो हालणो ठीक को रव नी । सायद भनी र म्हारी जव नई जव । ये दोनू ई भनी र माथ जावो परा ।" कयर पाछ उयळ खातर दोनू टाबरा सामो भाषयो ।

'घरे बापू भा न पूछर तो म्हे भठ भाषा ई हा । बा तो कपडा परयोडी धान भडीक घर ये टाळमटोळ करो । बापू, थ चोवा भादमी कोनी । कयर वाल्टर फेर फिलिप सू लिपटभ्यो ।

फिलिप आपरो डील भडकायो । दूजा कपडा परया । नोकर न भौळावण दी— हू धबार भाळ । पीसणो बराबर करतो रये । घट्टी खाली नई रगडीज हण रो घ्यान राखे । पीसा टक्का भिणार गल्ल म घाल दिये ।"

मेरी घर वाल्टर बोना फिलिप रो भेक-भेक हाथ भाल लियो घर करण भाष्या—"हालो बापू हासो हालो बापू, हालो ।"

फेर हेजल-वन में

भाज किता ई बरसा पछ अनी नवा गाभा परया हा, इस कारण बीनै प्रापन अपरोगा सा लाग्या । बा काच र सामन ऊभी, तो हाल बीर चर सू जवानी रो नूर बुलबी दीसतो हो, पण ईनक री गैरहाजरी मे सजधजर निकळण म बीनै भरम लखाई । जद वाल्टर भागतो भागतो आयर बोल्थो — ‘मा ताळो ढक, बाप् प्राय्या’, तो अनी कथो — ये तीनू भाग चालो, हू आऊ हू ।”

फळ ताडण खानर धेला घर गडा लेयर टाबर फिलिप साग दुरग्या । व घाळीस पचास पावडा गया जित्त अनी ताळो ढकर हेजल वन कानी रवाना हुयगी ।

फिलिप लार भावयो । वाल्टर कथो—‘बा देगो बा घावै मा, मुखमली फराक घर लाल भोजा परयोडी । बाप् मा भाज किती फूटरी साग । म्हे तो इना कपडा मे कन्हेई मा न देखी ई कोनी । घा तो बादा पुराणा गाभा राखै ।’

फिलिप चाल थोडी मधरी करणी । अनी तो पण खाया धरती ई ही । बा खान पुगगी ।

वाल्टर कथो—‘देख मेरी हू म्हारै फळा माय सू तम अक ई नई देऊलो । तू धार धारा तोडे, घर भेळा करे ।

मेरी बोली—‘भाई तू भले ई मन न दिए पण हू तोडधू जिका माय सू तू धार जवै जिता ले लिये । तू म्हारो भाई है नी ।’

वाल्टर कथो—‘वन हू तो तमासा करतो हो, भापा दोनू रळर ई तोडसा घर भाग ई भेळा करसा घर खासा ।’

फिलिप वाल्टर रो हाथ भाल लियो—‘देख बेटा पण रपठ जावलो गोडा भाग जावला, म्हारी भांगळी भाल ल ।”

वाल्टर अक बार तो भांगळी भाल ली, पण फेर पाछी मट दंणी छोडदी घर आपरी भरजी सू भाग भागर पाड माय चढणो सरु कर दियो । अनी लार सू हेला कर—‘वाल्टर, धीरै चाल ।” वाल्टर लार भाकर मुळक दियो—‘भई मा, भव हू बडो हुययो तू हरे जिती कोई बात कोनी ।’

जद पाइ रो घाथीटा घायो, तो घनी हाँफगी घर पूरी बोलीस र उपरायत भी बीरा पग उठणा बंद हुयग्या । बा बोली— फिलिप, म्हार होल मांयबर घेकापेक सण्णाटो नीसरग्यो घर म्हारा सरघा टूटगी । हू भठ ई घमी पाऊ ।'

“हा, हा, कोई घाट बोनी । जगा चाखी है, घराराम कर घनी ।” कयर फिलिप घनी र साथ बठई ठरग्या । छोटो टाबर बठ मू डाळ म उतरग्या ।

वाल्टर कयो—‘मरी, जेव, ओ भाइ किन्तो सबाकुम हुयाडा है । पण म्हारो ता हाय इतो ऊचो पूग बोनी, तू तोड तोडर म्हार पल म घासबो कर ।

मरी बोली—‘ला तू, मन गडो द । फळ तोडण खातर तो घापां गडो लाया ई हा । हू भा डाळी गेठ मे घडावर घघुणी देऊ पर तू देख भजा ।’

मरी घघुणी लगाई घर भडाभड पळीं रा बिरला हुवणी लगाई । वाल्टर घर मरी पूब फळ भाव घर पलां म मर । ओब पेठ मूत सेव, तो दूजोड माय दूक, दूजोडो साफ कर सेव तो तीजोड माय पूग ।

वाल्टर घर मेरी जियो घीर भी घणा ई टाबर फळ तोडण खातर घर भेळा करण मे जुटयोडा हा । व घापस मे बातां कर ओब दूसर न हैला कर, भीड भगडो भी कर इण तर टाबरों री बोली मू सगळा हेजल-बन मू जण लागयो ।

घनी न याद घाया क घाज मू बेई बरसां पसी, हेजल-बन र पाड री इणी जगा, बा ईनक र साथ भठ घराराम घर भाणद म बठी ही । ईनक र साथ सुज मू काटुयोडा व फळ याद भावण र कारण ई घनी र पग घाग उठणा बंद हुयग्या हा ।

फिलिप घनी र बन तो बठग्यो, पण वो भा बात बीसरग्यो क बारें कन घनी बठी है । बीन वो दिन याद घायो जन्, घाज मू बेई बरसां पसी माद बाप री चाकरी र कारण, हेजल बन म मोडा पूग्यो, घर घाग भायर देख तो उण री प्रेयसी घनी ईनक र साथ गळबासही घाल्वा इणी जगां बठी है घर ईनक रो मूडो घनी र सासचुट्ट होठ चूमण खातर भुजयोडो है । फिलिप न याद घायो क उणर काळज म किन्ती करवी चोट पूगी ही, घर उण चोट रो बार छाती में लिया लिया वो चोर जू किण तर चुपचाप बठ मू सिरक्यो हो । उणी बगत मू ईनक घाग भाग्यो घर वो ईनक मू सार रयग्यो हो ।

घनी आपर बिचारा में दूयोडो रई घर फिलिप आपरो उण काळी घडी में ।

फर फिलिप माथो उठायर बोल्पो 'देव, भनी, व किता रमे खेल है ।
 प्रवाज सुणीज है नी बा री । ओ देख, वाल्टर बोल । भा देव, मेरी री
 प्रवाज आई ।'

भनी बोली कोनी, सायद बी सू बोलीज्यो ई कोनी ।

'इत्तो यक्की भनी ?' फिलिप पूछ्यो ।

भनी प्रबोल ।

'हा यक्की भनी ।' फिलिप क्यो ।

भनी बोली कोनी बी आपरो मूडो हेडो कर लियो भर हयाळयो मे
 धान लियो ।

फिलिप क्यो— 'ठोक हैं भनी, थार जच ज्यू कर । तू थारी मरजी री
 मालकण है पण ईत्तो म्हारी कयोडी ध्यान म राखल क तू ओ काम आछो को
 परनी । आ बात मानू कै थारो ईनक नई अयाग सनेव हो, भर ईनक भी तन
 भरपूर मुख दियो भर ओर सवायो सुख देवण खातर ई लाई बिदेसा गयो, पण
 हाण लाभ किमा मिनगा र काबू म छोडा ई रव । जे ईनक रो सरीर कायम हुवतो,
 तो वो भवार तई अठ भाया बिना, थारे सू भर थार टावरा सू मिल्या बिना कोई
 भाव को रवतो नी । पण जद वो आयो कोनी इण रा अरय आपेई समझ म आय
 आवणो आईज ।'

"मन टावरा सू ओ मालम पडी है क तू हरदम ईनक न याद करती रव
 भर उण री याद मे कैई थार कास ई बठ कोनी । कित्ती ई बार तू जाज देखण
 खातर समदर र कनार जाव । पण भनी, कोई तो अकूल यू काम ल । परमात्मा
 की तो तन अकूल दी हुवली वा थारी खोपडी सफा खाली है ? 'जाज, जाज !
 कठ है जाज ? दस बरस गुजरग्या । जाज तो डूबग्यो ! हू कैऊ भनी क जाज
 डूबग्यो । जे ईनक रो जाज नई डूबतो, तो वो अठ भाया बिना किणी हालत नई
 मानतो ।'

'भनी, अ टावर दीस तो मन तगदीरधारी है पण कोई न कोई पुन्याई
 माडी भी नाग । ऊगता ई तो बापडा बाप सू बिछडर अनाथ हुयग्या, पर तै जे
 ईनक र बिजोग म भुरभुर नै सरीर छोड दियो, तो अ आवक अनाथ हुआसी । भनी,
 'त्ती निरदयो ना बण, थार जायोडा भाथ तो दया राख । साच तो सरी जे तै आख
 मोचली तो फेर ओरो घणी घोरी कुण है ।'

भनी बोली— 'भवार मन ईनक रो ध्यान को आयो नी पण टावरा री
 प्रवाज म्हार भाना मे पडता ई हू बिचार मे पड्यो—अक बगल तो वा ही जद

आरो बाप भान रुपिय कवा करावना । इत्त मे भी बीन सतोंस नई हुयो, जद वा विदेसा कमावण न गयो, मन म अ सपना नेयर क पाछो मालोमाल हुयर भासू भर म्हार टाबरा न मिनख बणासू । फिलिप वित्त निरथक घर कूटा हुव मिनख रा सपना । ईनक रा साठला भाज पारका री दया माथ पळ ।—मन मे इए बिचार र सारो ई म्हार मन म मूनवाड लखावण लागी ।”

अ नी री बात सुणर फिलिप अ नी र नडो सिरकग्यो भर बोल्थो—“अ नी, हू तौ अक बात कवणी चाऊ । म्हार दिमाग मे आ कद सु है, आ भी मन ठा कोनी । हू निरी बार सोचू क तौ कऊ, पण म्हार तू कँईजे कोनी । भाज म्हार जखै है क म्हारै मन री बात बार निवळी चाव । अ नी, जे तू ट डँ दिमाग तू सोचसी, तो थारी समझ मे आपेई आय जासी क जिको सबस दस बरसा पसी गयो, भर गया पछ जिक री कोई सनेसो या समाचार ई आवण री काम कोनी, वा जीवनी हू सक ? की भाव ई हू सब कोनी । हां तो अ नी हू म्हार मन री बात कवणी चाऊ । अब तू मन कँवण दे—

“अ नी म्हार की रुपिया है, पीसा है, नोकर है चाकर है । आछ सू आछा गामा परणन भर आछ सू आछो भोजन मी जीमण न मिल । इसी कोई भी जिनस कोनी जिकी अक आछ ईमानदार मिनख बन हुव घर म्हार बन नई हुव । अठौनै तू थार बानी देख । ना मिनखाचार री राटी, ना गाभा । ईनक गया पछ तू जूए सीक पूरी करे । सगळा लोग घूमण फिरणन, सब सपाटै मे जावै, पण थार खातर जाणै अ चीजा मना है । थारी इसी हालत मन बरदास को हुव नी, पण दुनिया री डर भी लागै । मन म हुवता थका भी हू थारी सायता, करणी चाऊ ज्यू कर को सकू नी । हू थार सू मिलणो चाऊ, थारो म डो देखणो चाऊ, थार सू बात करणी चाऊ, पण थार घरे आ सकू कोनी । लोग कवै, लुगाया हुति थार हुबै, भर मिनख र मन रा भाव लख जावै । सोचू, तू ताडगी हुवैली क काई कवणो चाऊ । आ ई बात, क अ काम हुव कोनी जित्त तई आपा ब्याव नई कर सेवा ।

‘अर अ नी, देख—वाल्टर अर मेरी मन बापू अर बापजी कव । पण जिते तई आपा म अळगाव रवै, अर आपा ब्याव र डोर म बंधर अक नई हू जावा बारो मन बापू कवणो अर म्हारो बान बटा-बेटा कवणो सरासर फालतू अर निर थक है । हू जाणू हू अर समझू हू क वै मन बाप न कर ज्यू ई प्यार कर, अर अर हू भी बान इसा ई समझू जाण ब म्हारा आप रा हुव । आज तई म्हार मन मे कदे ई इसो भेद को आयो नी क अ म्हारा नई, पारका है ।

‘अनी, जुदाई घर अनिस्च रा अ दोरा घरस वीतग्या जिका तो वीतग्या, पण मन पक्को भरोसो है क धर्ब, इण ऊमर म भी जे तू भटपट म्हार सू परणीज जाव, तो हाल भी आपा बिता ई सुखी घर भागमाळी प्राणी बण सका हा जित्ता मगवान आपरो दुनिया मे बणाया है। आपा सू वेसी भागमाळी दूजो कुण हू सक ? जठ मिनख लुगाई न चाव, घर लुगाई मिनख न चाव बठ खिस्ती रा मगळा सुख पगा म हळै।

“तू पूछ सकं है—‘किया ?’, तो स सुण। पलडी बात तो आ है क म्हार वन लिछमी रो मुकळायत है। केई चीज रो ताडो कोनी। मन म उठण आळी इच्छावा न घन रें अभाव मे मारण रो जरूरत कोनी। घर म भाव ज्यू खावो, सुवाव जिमा बढिया सू बढिया कपडा परो घर नोकरा माय हुत्तम हलावो।

‘दूसरी बात आ, क हू पली सू परणीज्योडो कोनी। जे श्रेक लुगाई पली सू ई हुव तो घन दोलत हुवता थका भी दूजो लुगाई घर म आपा सू राड ई पलन पडै। दो जुगामा न राजी राखणो किसो सज काम है ? घर दोना माय सू जे श्रेक विराजी रव तो घर रो सायती भग हू जाव।

‘तीसरी बात आ क जे पलडी लुगाई घर जाव, पण तार नाना नाना टावरिया छोड जाव तो घान पाळण पोसण आळा घर वा सू छातीकूटो बरण आळो भी बडा भारी सासो है। सौक रें टावर न पाळणा तरवार रो धार म थै चालणो है। तू जाण, म्हारै ना तो लुगाई, घर ना टावर।

‘चौथी बात आ क जे अबार धणी तूडो हुबै, तो भी हाड गळ बध जाव, उलटो कमार पालणो पड अर हीडा चाकरा बरणा पड। अनी आ जात भी म्हार म कोनी। हू पार सातर भारसरूप कोनी।

‘पाचवी बात आ है क मन केई तर रो सोच फिकर भी कोनी। जे सोच है तो पारो है, अर पार टावरा रो है—तू सुमी बिया बरणे, पारा टावर सुखी बिया बण आ ई बात रात दिन म्हार माथे म चक्कर काड।

‘आखरी बात आ है क ब्याव सगाई मे लोग बोम्बा भी खाय जाव। आपस मे श्रेक वीज न जाए कोनी, अर सगण कर लेव। सगण करती बगत तो लोग मूठ म मिमरी मेलर बात कर, पण जद काम पक्का हू जाव, तो जर रा तीर छाडण लाग जाव। अनी, आपा तो आपस म श्रेक वीज। ठेठ सू ई जाएता आपा हा। अनी, हू तन आज बताऊ हू कै तन ठा है जिक मू, भी पनी म्ह तन प्यार करणा सरू कर दियो हो।

‘अब ई जे अनी, तू म्हार सँ छाटा लेवँ तो आ फेर म्हाङ माग रो बात ।’
कयर फिलिप अनी तँ सामो उषळ सातर भावयो ।

अनी र चर मायँ दीनता छावणी, अर बा भघरी बाणी म भघर सीक बोली—‘फिलिप, यारँ गुणा रो वखाण करण म आ सायण जीम तो किणी भात सिमरय कोनी । सण र आग सण री वडाई करणी भी नई चाईज, पण कदेई इसा मौका भी भाव जद मू डामूड साबो बात कवणी पड । फिलिप, हू तन मिनत नई म्हार घर न उबारण आळो अेक देवदूत समझू हू । थारा उपकार विसरण जोग कोनी । म्हार हूबत घर न तँ बार काठयो है । थार जित्ता दयालू अर कवळ हिरद रा मिनत धरती माथ जोया मू गिणती रा साथ । थारी दया भूलीजण जित्ती कोनी । आपर ऊपर कर्योड उपकार न विसरणो पाप है अर हू पाप री मागण वणी चाऊ कोनी । हू आ चाऊ क म्हार मू बण जितो हू थारो पाछो बढळो उताह ।’

‘अनी, तँ म्हारी वडाइ रा पळ बाप दिया । हू ता की लायक ई कोनी ।’
कयर फिलिप आपरी चुलताई देलाळी ।

अनी कयो—‘फिलिप अेक सिरकार बीन म जिका गुण हुबणा चाईज, क सगळा थार मे है अर थार मू व्याव करणआळी लुगाई राजस करसी । फिलिप, भगवान थारो भलो कर गर म्हार बिब्व घणामोनी जिनस तन इनाम म वगस पण ॥ अेक बात पूछू — ‘अेक लुगाई दूसर प्यार कर सक ? तू आ साथ क म्है ईनक न प्यार कर्यो, ज्यू ई ॥ तन प्यार कर सकू सी ?’

फिलिप रो सास ऊचो चढयो । बी सास छोडण र बाग मे अेक लावो सास लियो, अर फेर गुमसुम हुयग्या ।

अनी कयो—‘फिलिप मन जबाब तो दे । आ इसी बात त फाई सोचर मूड मू थार काढी ? थार मू मन इसी आस तो को ही नी । बाह रे फिलिप, भली फूटरी बात करी त ।’

फिलिप दो तीन मिट तई गूयो हुव ज्यू अनी र सामो भाक्तो रैयो अर बीनँ दया लखायो जाण पुरस्पोडी आळी कण ई खोसली हुव । पर धीर धीर बी कयो—‘अेनी, आ ता मन ठा है क ॥ ईनक री बरोबरी का कर सकू नी । ईनक आज मू सतर अठार बरसां पली थार मू व्याव करयो जद थारी उमर वालपणो छोडर जवानी मे नीठ गई हुवली । थारी बा चित चोरणी सूरत हाल भी म्हार हिरद रो परता माथ मढयोदी है । वो थारा रग, वो रूप वो जोवन, बा चवळाई अर बा

नाज—इसा गुण देवतावा री खुशाया म किता लाव । पण ईनक बडभागी हा क पारं जिती रूप किरण बी र ऊपर निछावर हुयगी । अनी, थार कारण म्है म्हार वापू न भी नाराज करया । व सदेई कवता—‘तू ब्याव कर ल, ब्याव कर ल ।’ पण म्हार मन मे तन टाळर कोई दूजी सनल दाथ ई नई आव । वापू मरग्या, थर म्हार ब्याव री व मन म इ लेयग्या । सस्कार री बात अनी । पण म्हार खातर तो थारो थवार री रूप जोवन भी मद र प्याल रो काम कर । ईनक सू इत्ता बरसा पछं भी जे मन थारा प्यार मिल जाती, तो हू सतोस कर मानमू । मन वितो प्यार नई, बीसू कम करसी, तो ई काई घाट कोनी, हू इण न वितो ई कर मानमू ।”

अनी री भाव्या डर सू भरीजगी थर बा चिरलायी—“म्हारा प्यारा फिलिप, थमजा । थोडो सोच—जे वदास ईनक भायग्यो, तो फेर ?—पण ईनक भाव कोनी, ईनक भाव कोनी । म्हारो मन कव क ईनक भाव कोनी, पण तो ई फिलिप, थेक थरस ठैर जा । थेक बरस तो कोई थणो कोनी । बगत जावता काई बार लाग, काल थेक साल बीत जाती । थर साल भर मे हू तो बी स्याणी हूजासू, थवार जिको अनिश्च म्हार भाथं म भर्योडो है, व ईनक भायग्यो तो काई थरसू, बी अनिश्च मिट जाती, थर फेर कोई तर री रफावट नई रंसी । फिलिप, इत्तो तू म्हारो क्यो मान ल—थोडो ठर, थोड सोक थमजा ।”

फिलिप री गळो रुक्यो । नणा म उदासी छावगी, थर थारया थरम सू झुकण लागगी । बी कयो ‘अनी, इया तो ईनक थर हू दोनू ई थेक ई बगत सू थारा चावण घाळा थर प्रमी हा, पण थारी किरपा ईनक माथ थणी, थर म्हार माथ थोडो ही, इण वारण तै मन छोडर ईनक सू ब्याव कर्यो । उण जर र गुटक न म्ह इमरत कर न पीयो थर हू थार ब्याव मे सरीक भी हुयो । इनक न गय न दस बरस हुयग्या, पण इणी भास मे होक वदे न वदे तो अनी म्हार सामो भाकसी । भाज थार सू गुलर बात रो मोको बिल्यो जद तै थेक बरस री मौलत घाल दी । अनी, तन ठा है, हू तो ताजि दगी ठरतो ई भायो हू, म्हार खानर ठरणो कोई अनोखी बात कोनी, हू थार सातर थोडो थोर ठर जासू ।”

अनी फर चिरलायी— फिलिप, थव हू वचना म वधगी । मन सिरकण न ठोड कोनी । अनिश्च री थवारो भाघो हुयग्यो । थव साल रो वण कर्यो है, उण म फरक नई पट । थेक साल हुया मू हू तन म्हारो वण पुरो वरन दयाळमू । फिलिप, थेक बरस जाना तो कोनी ? जादा काथरो है ? मन भी तो थेक साल वाढणो है । हू काढमू ज्यू थार मू निवळ कानी ?”

फिलिप कथो—‘अनी थ व थेक थरस थ्या मू हू फेर थार मू मिलमू ।’

घोडो ताळ तई दोनू भेक-बीज र सामो जोवता रया । फेर जद भाडबियां माय सू सूरज री लारली किरणा भी पगेलागणा करती दीखी, तो फिलिप बिचार करयो व रात घालणी अनी र हक मे ठीक कोनी—बाल न लोग ऊधी सू धी बाता बणावणी सरु कर देव । इण र सिबाय रात न सरदी भी इत्ती पडण लाग जाव व बा अनी र निमळ डील सू भल कोनी । फिलिप ऊभो हुयो । अनी भी उठनी । ‘वाल्टर, वाल्टर, मेरी, ओ मेरी’ फिलिप हेला वरया, अर टावर आपरा येला फळा सू लालद कर्या ऊपर आयग्या ।

‘बापू देखो ’ वाल्टर कयो—‘म्हें तो येला काठो भर लियो, अर मेरी तो की लाई ई कोनी ।’

‘वाल्टर वदमासी ना कर’ मेरी येला कानी भपटती बोली—‘बापू सगळा फळ तोडया तो म्हें ई है, वाल्टर तो चाली येला म घाल्या है । किता धन्मास है ओ ।’

‘बापू’ वाल्टर कयो—‘म्हारा खु जा तो हाल खाली है जे पाच मिट और ठरो, ता हू अवार म्हारा खु जा भर लाळ ।’

अनी धानी—‘वस वेटा इत्ता घणा सिभया पड है । रात री सरदी सू वषणो चाईज । चालो, भटपट धरे चालो ।’

ता मा, अब फेर आपा अठ पाछा कद आसा ?’ वाल्टर मा रा हाथ झालर पूछ या ।

मेरी बोनी—‘मा अकेली तो आपान लाव कोनी, कदेई बापू न त्पार कर लेसा अर साथ मा न भी लेय लेसा अर आपा आय जासा ।’

हा वन ’ वाल्टर कयो, ‘तो फेर आपा ता बाल ई आसा ।’

अनी वाल्टर रो हाथ झाल लियो, अर व पाछा पाड सू उतरण लागग्या ।

जद अनी रा घर नडो आयो, तो दानू टावर ताळ री कूची अनी वन सू लेयर आग गया परा अर माय जायर फळा री पाती करण मे रुधीजग्या ।

जद फिलिप अर अनी घर र आग आया, तो बा पग रोक लिया । फिलिप आपरो हाथ आग वरयो अर अनी उणसू हाथ मिलायो । फिलिप धीर सीक कयो — ‘हेजल वन म जिनी बात म्हार मूड सू निवळगी ही बा ठीक का हो नो । वा चागे निमळाई री घडी ही अरम् हैं चारी निमळाई रो नाजायज फायगे उठायर तन बचना मे बापली । अब हू सोचू व आ सरासर म्हारी भून ही । मन धार साग इसा वस्ताव नई करणा चाईज हो । पण कोई बात कानी । भून रो सुगर मी तो

करीज सब है । भूत ता बीर ना कर सक, बग मिलाउ बा १, त्रिना भूत । मुषार
 सक । अनी, हू दिनस हू, एा बारण भारी भूत ग मुषार तरणा धाऊ । दग १
 तो पार प्र म बघए में सग-भरग गातर बघाहा १, दग धार गातर काई बघाग
 कानी । तू पनी निरख हा, जू ई है । तू धाखा १, पार १, तर काई बघाग
 काना ।

अनी री घाव्या मू टपाग धाऊ १, १, १ । बा बा १ — 'रिनिप, तू
 तो मन बघाए मू मुउ राग, पार भारी १, १, १ पान करणा १, १, १ तो ता पार
 है । भव हू निरख कोना । बघाए म घावाणी १ ।

अ'क बरस बीतगयो

अनी धर धायर काम काज म लागगा । टाबरा री पढाई चामू ही । फिलिप री तरफ सू टाबरा र मिस अयवा दुज मिस कोई न कोई सायता पूगती रबती जिए सू अनी रो काम चलतो रबतो । आपरो दुप बिसरण खातर अनी दिन भर बिलम लाग्योडी रबती ।

अेक दिन बास्टर कयो- मा तू बापू सू यारी ब्यू रब । और तो सगळा रा मा बाप अेब घर म भेळा रब, पण तू अर बापू दोनू 'यारा यारा रबो' । ह अर मेरी पारै फन भी रैबणो चागा अर बापू कन भी रैबणो चागा पण थ तो दोनू 'यारा यारा रबो, जद म्हे अब कीर साग रवा, बापू सामब' अर साग ?

अनी कयो- बटा तन पूरी भाजादी है, तू यार जब जिक र साग रह, तन सुवाव जिक र साग रह ।"

"मा ई तो आफत है मा । मन तू तो इती सुवाव क यार लाळ म सूया पछ मन रोटी जीमणी भी याद को आव नी । पण बापू (फिलिप)? बापू तो म्हान इत्ता चोखा लाग इत्ता चोखा लाग क तन काई बतावा । जे तू रीस नइ कर तो बापू म्हान यार सू ई चोखा लाग । देख, अबब म्हार कपडा किसान कूटरा सीझाया है ।

मरी, जिकी कन ऊमी ऊमी बास्टर री बाता सुणती ही बोली- मा मन बापू लाग तो घणाइ चोगा घणा ई चोला है पण सगळा सू बसी चाखी ता तू लाग । पार सू घाछा और कोई बोनी ।

टाबरा री दाता सू अनी रा मनारजन हुवतो हा अर जीव लराब भी हुवता हो । बाता सुण्या पछ वा गुमगुम हुयर गरा चित्या म इवगी । फिलिप रा लबज याद आया- 'ह तन आा बताऊ क तन ठा है जिक सू भी पली म्हे तन प्यार करणो सम् कर दिवो हा ।

अनी मन मे क्या- फिलिप, ज्यू ह निरभागण ह, अर बिस रा दिन तोडू ह, इणी भात यार ई करमा म बिपों भोगणो ई लिखाणे दीस । 'अनी गाडा म मायो धारवा कुर हाला बठी ही ।

इए तर जद अनी चघेड-बुए मे लग्योही ही, उए री मा आयगी । मा बोली—
 “अनी, तू जे इया गुमसुम रसी तो थारी छोपडी गराब हू जासी अर फर आ टाउरा
 न कुए साभसी ? बूड वार म्हार गळें वध जागी । म्हारी अब मेवा गावण री अर
 हाजरी भरण री ऊमर योडी ई है । अर हू अब कित्ताव वरसा री ? पाक पान रो
 काई भरोसो, आज भड अर अबार ई भड जाव ।”

“पण मा हू काई करू ? जद ईनक याद आव बीरा छू ठा मुजदह याद
 आव, बीरी निस्कपट बाता याद आव, अर बीरा प्रमपूरण वरताव याद आव तो
 हिरद मे उयळ पुथळ मच जाव । हू जीव न जमावण री कासीम करू, पण ओ
 चित्त अडबी घोड दई लगाम तोडावण लाग जाव ।”

मा बयो— ‘हू थारी सगळी बाता मानू । ईनक रा गुण आपा ई नई, सगळो
 गाव गाबें पण मरयोड लार मरीज तो कोनी । जीव जिका न सरीर राखण खातर
 मगळा ई काम करणा पड ।”

अनी— मा तू सोच है क ईनक कायम कोनी ?

मा— ‘बेटी, जद दस बरस बीतग्या अर हाल बीरा की समाचार ई कोनी,
 फेर तो हार छायर मानणो पड क बीरो सरीर ।”

अनी— “मा, ईनक म्हार खातर विदेस गयो म्हार टावरा खातर गयो ।
 म्हांन सोरा करण खातर गयो नातर कमाद रो तो अठ ई घानो को हो नी ।”

इया कयर अनी आपरी आदया पू छए लागगी । मा अनी न आपरी छाती
 र लगायर धीरज बघावती वाली— देग, फिलिप तन ठेठ सू जाण अर तू फिलिप न
 जाण । फिलिप हाल ब्याव भी करयो कोनी, कवारो है । म्हे सुणी क बो थार
 खातर कवारो है, अर थार सू ब्याव करणो चाव भी है । क्यू ठीक है आ बात ?

अनी बोली कोनी ।

‘म्हार रयाल सू तो फिलिप सू ब्याव करण मे ई सार हैं । आखर अडीकण
 री भी तो अ्रेक हद हुव । आवण आळ रो सनमो ई कोनी अर तू दस बरस
 बातग्या, हाल बावळी हुयाडी बठी है । आ बात ठीक कोनी । अनी, थोडो समझ सू
 काम न । कयर मा बेटी र गाल सू आपरो गाल चिपाया ।

अनी बयो— मा, थारी बात म्हारी ममझ म आव, पण तू मन आ बता क
 जे कदास ईनक रो सरीर कायम हुयो, अर जो पाळो आयग्यो, अर वो मन आप-
 घर म नई, केई दूज र घर म देवा, तो बीरी हालत रो तू अन्जो लगा सक ? जिक
 सपस म्हार खातर घर-वार छाड समदर म मायो दियो, बीन हू दगो देऊ, तो आ
 बात थार जच ? बोल म्हारी मा ।”

“जब कोनी ।’ मा कयो पण ऊर भी अनिश्चित र कारण निश्चित न ठुकरावण म स्थाणु कोनी । ईतक अनिश्चित है, फिलिप निश्चित है । सम री खाई निश्चित न भी अनिश्चित कर देवै । अर जोर काई करा ? वगत तैवर चालणो पड ।”

इए तर ईतक री बात चालतो रवती, अर फिलिप रा वोल् क बो अनी न ठा पडया पत्नी सू ई बीन प्यार करतो आयो है अनी र काना मे बराबर भू जता रवता ।

वाल्टर अर मरी इम्ब्ल जायता वगत फिलिप कन जावता पाछा आयती वळा भी मिलता अर आपस म हसता तथा तमासा करता । वाल्टर केई बार कैवतो—
बापूजी थे आजकल घरे आयो कोनी, मा सु रीसाणा हुयोडा हा ?’

फिलिप हसण लाग जावतो अर साड म वाल्टर र मगरा म जोरदार मुकरो जमा देवतो पण उए री चोट हलकी हुवती इए कारण वाल्टर जोर जोर भू हसतो ।

आज जद अनी आपर टावरा न पढाई जावत बाता पूछनी ही— कित्ता मे कित्ता टावर है, कित्ता कच्चा है कित्ता हुसियार है ‘मस्थान कद हुसी—’ उणी वगत फिलिप आयगयो । अनी फिलिप खातर मूठो सिरकावती बाली— ल वठ फिलिप । फिलिप चुपचाप वठग्या ।

मरी अर वाल्टर न फिलिप पीसा दयर कयो— जावो वजार सू भेक मजबूत धेलो खरीद लावो वडो सारो, आज केर आपा हेजल बन चालसा, अर वठ भू फल घालर धेलो भर सामा ।

दोनू टावर बार गया परा ।

अनी पूछयो— अठैन कठ गयो फिलिप ?’

फिलिप—‘मार कन ई आयो ।’

अनी—‘कोई सास काम ?’

फिलिप—‘काम बतावगो बाकी रयगयो ?’

अनी—‘फिलिप, माफ कर, मन मा कोनी ।’

फिलिप—‘आ भूलण री बात है अनी ।’

अनी—‘जद ई ता ह माफी मागू हू ।’

फिलिप—‘याद कर अनी ! आपा री बात याद कर ।’

अनी—‘पण आपा रो तो साल भर रो वण हो ?’

फिलिप—‘तू ठीक नव अनी ।’

अनी—‘तो केर वण माय कायम रवगो चाईज । ऊतवाळ म बावळो नई वणतो चाईज ।’

फिलिप—“ऊतावळ ? किसी ऊतावळ ? कुण कर ऊतावळ ?”

अनी—“तो किसो अेक वरस पूरो हुयग्या ?”

फिलिप—“तनें सव लागे अनी ?”

अनी—“मनें तो काल रीसी बात लाग ।”

फिलिप—“लाग है, पण साल तो पूरो हुयग्यो ।”

अनी—“साल हुयग्यो ? बडो भारी इचरज है ।”

फिलिप—“इचरज री बात कोनी । जे सुपारया फेर पकगी है, तो पक्कायत साल हुयग्यो । भाव बार भा, म्हार साथ हालर देखलै, जे भरोमो नई हुव तो ।”

अनी बोली—“फिलिप सुपारया रो काई देखू ? धणी ई चीजा देपणी है, किसी देखू ? तू आप समझदार है क फसलो करतो बगत मन किर्त सोच बिचार री जरूरत है । पण फिलिप, तू डर मत, फसलो तो म्हार पत्नी मू ई करयोडो है, फेर भी तू मन, फिलिप, तू मन अेक मईन री मौलत और देय द ।”

जद अनी र घरे भायो हो, तो फिलिप रो मू डो आसा री लाली मू पळ पळाट करतो हो, पण मौनन मागर अनी बीरो आसावा नै जाणै थाड मे बूर दी । बी कयो—“अनी, जिया तू राजी है, हू तो बिया ई राजी हू । थार जच जित्ती टेम तू लेय ल । तू थारी मरजी री राणी है, मन उजर करण रो कोई हक कोनी । जे मईनें री जगा तू दो मईना कवती तो भी हू तो मजूर कर लेवतो । मजूर करण सिवाय म्हार कन हूजो कोई उपाव भी तो कोनी ।” अै सबद कवती बगत सराबी रै दाई फिलिप री जवान सडखडावण लागी ।

फिलिप रो धृजती भर गळगळाती वाली मे इसो दरद हो क उण न सुण्या पलाण हिरदो भी पिपळ या बिा नई रव । अनी जद फिलिप रा धीरज भरया बोल सुण्या, तो दया रै कारण बीरा नण जळ मू छलीजग्या, पण बी मू डो फोरन भाव्यां मू छली भर फिलिप न ठा नई घाली ।

“कोई बात कोनी, अेक मईनो और सई ।” इया कैयर फिलिप हाथ लटकाया पग धींसतो धीसतो गयो परो ।

अेक मईनो बीतग्यो पण फिलिप पाछो भायो कोती । अेक और बीतग्यो तद अनी र वारण भाग भायर फेर ऊमग्यो ।

‘अेक मईनो हुयग्यो फिलिप ?’ अनी इचरज मू पूछयो ।

‘अेक नई, दो ।’ फिलिप मयर मुर म कथा ।

‘म्हारी सोणन, फिलिप ?’

‘तू कबे जिव री, अनी ।’

“देख फिलिप म्हार बैण मे तो फरक पड कोनी, पण तू म्हारी बात ठेठ सू मानतो आयो है, चोडी-सीक और मानल ।”

“बोच, भनी ।” फिलिप कैयो ।

“फिलिप, धारै घर मे हू पली बार पम घरसू । हू चासू क हरस कोठ सू जाऊ । पण हाल म्हारो मन हरस कोठ री हालत मे आयो कोनी । फिलिप, तू मन धेक मईन री मौलत और दे सक काई ?” कयर भनी सरम सू नैण नीचा कर लिया ।

‘धारी जे मरजी भा ई है, तो फर म्हारी इनकारी रो सवाल ई कोनी । पण अक बात हू कऊ—तू भले ई म्हार घर मे चालती हरखा ना, म्हारै घर री ई ट ई ट, म्हारै बाग रो पत्तो पत्तो पार घावण री झडीक में आख्या बिद्याया ऊभा है । वो सोनळियो मूरज कद ऊगसी जद कं तू बारी इ छया पूरसी ?”

“फिलिप तू स्याणो है अक मईनो । वस अब कवेई मागू कोनी, घालरी माग है—अक मईनो ।”

“म्हार घणो ई खटाव है । जित्ता बरस काढ्या है अबै तो बित्ता मईना ई कानी । काल आय जाती अक मईनो ।”

जद अक री जगा दो मईना बीतग्या, तो फेर अक दिन भनी र भागणै मे फिलिप भायर ऊभयो । ज्यू बीर नै दसर करजायत भेलो भेलो हुव भर निजर बचाव, इणी तर भनी फिलिप न देख्यो अदेख्यो नरण री कोसीस करी । फिलिप बिना क्या ई तिपाई माथे बठग्यो ।

भनी सामन आई, बोली—‘फिलिप, तू अक कूडी लुगाई नै धारी बऊ बणावणी चाव काई ? ॥ पार भाग किती बार कूडी पडी हू ।”

“कोई बात कोनी’ फिलिप कयो ‘अब तो भळगाव रो समो बढग्यो, भर मुख री बेछा भायगी, भापा न भगवान रा आभारी हुवणा चाईजै ।

“फिलिप, तू म्हारो है, हू धारी हू ।”

‘भनी हू तो धारो हू ठेठ सू ई धारो हू, पण तू हाल भी म्हारी कोनी । कयर फिलिप हमाल सू आपरी आख्या पूछी भर गळ मे खरखराट आयग्यो, इण कारण गळो साफ क्यो ।’

“नई, फिलिप, तू आ बात ना कह, धार सू डे सू जद इसी सुणू, तो म्हारै काळज रा टुकडा-टुकडा हुवण लाग जाव । पण तन ठा है—म्हार माथ अब दोलडी जिम्मवारी है—अक तो आ क हाल हू ईनक रो घर समाळया बठी हू, भर दूजी भा क तन म्हार ब्याव करण रो बचन दियोठो है । फिलिप तू म्हारो है, हू धारै भाग पल्लो बिद्यायर भीग मागू क अक मईन री मौलत तू मन फेर देय दे । भर

જે તૂ મન મ પાયા જાય, તા હુ અવાર દે ધારો થયો કરણ ન સ્વાર ॥ ૧' સંવતાં
કથતા ધેની રે મૂઠ માથ પસીનો ધાયમ્બો ।

ફિલિપ ઘુપ ।

“ફિલિપ”, ધેની થયો—“રીત ધાયગો, મ્હાર ઢોઠપણે માથે ?”

‘ધની’, ફિલિપ થયા—‘ધારો યાત માથે મન ધાજ તદે તો જદદે રીત
ધાઈ જોનો, ધર હુ સોઘુ જ વેર ધાય મો જોનો ।”

‘તો વેર મ્હારો ધરદાત, ફિલિપ ?” ધની પૂછયો ।

‘મેજ નદે, તૂ દો મદના સ, ધની, તૂ સાવલ સોચ વિષાર ને જદમ રાશે ।
હાલ મી ધારે માથે જોઈ જમાણ જોનો । તૂ જુલ્હો દે ।”

पाटा गजट

अनी रा टावर फिलिप री कलचकूी जावें । फिलिप बार्न इस्कूल भेज बारी खरबा मोड-अ बाता बंदरगाह रा सगळा मिनख लुगाईं जाएन लागया । फिलिप अनी र घरे कदमकाळ ईं जावतां पण आ सबर भी दान लोगा र नाना मे पूग जावती । ब हेजल वन मे गया इण बात री भी सगळें चरचा हुयगी ही । आ भी लोगा न ठा ही क अनी र घर रो खरबो फिलिप चलावतो हो । 'अ नी घर 'फिलिप' गाव र लोगा रो चरचा खातर अक बोखो विस हाथ आयोडा हा । जद कदेईं चौपाळ म च्यार मिनख भेळा हुवता, तो इणी बात री चरचा चालती, अर सगळा जणा आप आपरी भक्कल सारु बिचार परगट करता ।

अक दिन री बात जद घणासारा लोग भेळा हुयोडा हा, अक जण बात छडी—'ईनव साईं कितोव भतो आठमी हो । आपार गाव रो नाव हो । अळगीं अळगीं जगावा में भोळखीजतो हो ।'

दूसरो बोल्हो—'अरे भाई, पीसो गळो कटावै । ईनक सोच्या-लखपती बण जाऊ—इणी लोभ मे घर सू निकळग्यो हो, पण घर आळी लुगाईं अर टावर ईं हाथ माप सू निकळ गया । लागा कबजो कर लिया ।'

तीजा—'इया कबजो कर लियो जिका कोई तमासो हे ? लुगाईं रो मन हुया बिना मिनख री बापड री आकात ईं वाई है ?

चौथो—'धारी बात सफा साची है । जे लुगाईं रो मन नईं हुव, तो मिनख भल ईं कितो ईं माथो पटककर रय जावो बा बीर जाळ म फस ईं कानी । पण जे लुगाईं आप गईं-चीती हुव तो फर काईं कवण-सुएन री बात कोनी ।'

पलो—'भाई, अनी बापडो लुगाईं तो चोखी ईं है । कदेईं नाळ ऊंची करया चालती देखी कोनी ।'

दूजा—'बस बस रवण दे भाया म्हार वन सू नयू पोथी बचवाव है ?

ती—'हा भायला, पार स वाई छानो है ।

दूजो—'म्हार सू कोई आ छानी न बोईं फिलिप छानो । पण आपा रा वाई नियो ? छान ईं बापडा न जीव राजो करण दो । आपा र घर सू वाई जाव ?'

तई ईनक नई आमी, फिलिप नै भासापट्टी मे राखसी, अर जन् बा आय जागी, तो फिलिप न घर रो मारग बताय देसी ।”

चौथो—“इत्ता बरस बीतग्या अब ईनक रै आवण री आस राखणी तो मूरखता है । म्हार स्थान सू तो दोना री पट्टी हाल बढी कानी, नातर आज तई मे कदेई रो ब्याव हु जावतो ।”

पत्नी—“अरे भाया, ब्याव मे वो मजो थाडो ई है जिको प्रम करण मे हुब । ब्याव तो म्हारा हुयोडा है, पण देखू ब ब्याव काई छातीकूटो मोल लय लियो । टाबरा री मा हुयगी, काडू ता ई बढ काडू ?”

तीजो—“आ ई बात है । फिलिप आप बडो रगवाज आदमी है । वो बागा रो भबरो है, आछा आछा पुसब देखर मन-रली-पूर । औस्या आयगी, पण अ नी न जोवन हाल ताजो ह । जित्त तई आ ताजगी रैसी, फिलिप अनी रो लारो छाड कोनी ।”

चौथो—“इत्ता इत्ता बरसा तई कोई फालतू लगवाड रो कापदो थोडो ई हुया कर । म्हार विचार सू तो आन पाब बरसा पत्नी ई ब्याव कर लेवणी चाई-जतो हो पण परमात्मा मान इत्ती अकल ई दीबी कोनी ज्यू मालम पड ।”

दूजो—‘म्हार स्थाल सू तो आरौ ब्याव दस बरसा पत्नी जावणो चाईजतो हो, पण हाल ई अ तो पालपट्टी मई काम चलाय रया है । अजीब खोपड्या है घारी भी । अजीब काई गसी खोपड्या है । घर री अकल नई हुब, तो केर दुखा रा किसा तोटा ?”

पत्नी—‘तू मूरख है । दस बरसा पत्नी कोई हुया करे ? इया काई ईनक र जावत ई ब्याव कर लेवती काई अनी ?’

तीजो—‘मन तो केई बार विचार धावे ब आ बात काइ है । रात री इग्यार बार सोचता सोचता बज जाव, पण अ नी फिलिप री आडी रो हल हाल ममभ मे आयो कोनी ।”

दूजो—‘फिलिप अनी सू प्रेम तो करै, पण अनी ता लगणा री लाडी है नी । फिलिप न अ नी र आचरण मे डबको लाग है । वा पूरी तपास कर्या पछे ब्याव भले ई करा, इया तो अनी रै चक्कर मे चढण आलो कोनी ।

तीजो—‘चक्कर मे तो है ई ।’

इए तर री वाता चौखल म हुवती ई रवती । केई तो एसा हा बं फिलिप अथवा अ नी या छण र टाबरा न दखर भट चुप हू जावता अथवा दबी जवान म बालता या वात फोर दवता पण केई किरपासू सज्जन इसा भी हा बं अनी या फिलिप अथवा टाबरा न देगर बार वात म वात पू चावण री भी चेस्टा करता ।

चीथो —“ऊँ चा चढ चढ देखो, धर धर आ इ सखो । इन ता सगळी सरीसा ई साथ । ॥ गया बीता है तो दूजा भी कोई मला आदमी म्हारें ध्यान म तो आव कोनी ।”

दूजो —“तैं तो म्हार मूठ रो बात खोस ती ।”

दूजो —“सास ती, धार म है इत्ती उक्त जिको धार मूठ रो बात खोस ती । म्हारी पाळटी म बठण जोगो हुवण मे हाल बरस लागसी ।”

पलो —‘पण म्हार ह्यास स फिलिप रो दोस तो नीनी ।’

तीजो —‘तो दोस म नी रो भी कोनी ।’

दूजो —“हू कळ दोनू अखरें अखरें दोसो हे ।’

पेलो —‘धारी बात ठीक हुवणी चाईजै ।’

चीथो —(पल न) ‘तू ह्या गुडवण सोटे दइ किया कर, कण ई मठीन, धर कणई वठीन ?’

पलो —“अवार टेम इसी ई है । जद इनक हो, ता नी इनक री हुयोडी रई, वो गयो परो, अवे फिलिप नै अणवा लियो ।”

चीथो — पण हाल रो पडी अणवावण में ई की चूण-सकलण तो कोनी ।

तीजो —‘जुग लवण किया कोनी ? टावरा ७ इस्कूल पाल दिया, धर म नी आप ई ता फिलिप साण बठी मीज कर है । किसी कमावण न थोडी जाव है मयवा इनक पीसा थोडा ई भेज है ।”

पेलो —‘अर ये काई समझो, मनी री खाल समझणी धारी बुद्धि मू वार रो बात है । सुणो, हू बताऊ —ईनक स ब्याव ता कर लिया पण वो अज्जड मिनल ई र दाय आयो वाली इण कारण बीन तो बिदस र मिस धर मू काड दियो अर अब आपरें चित रा चाया कर ।”

चीथो —‘जे चिन रा चाया करती, तो इण तर म्भारण भिह्यारणी दई को रवती नी ।”

पलो —‘अरे भाई, आ ई तो बात है जिकी ये लोग समझो कोनी, पण हू समझू हू । जे अवार फनाफन रवण लाग जाव, लोग आगळ था मू बतावण लाग जाव नई जद इत्ता बरस हुम्या आपरो काम भी बणाय रई है, अर कोई टोकण रो हीमत करण आळो भी कोनी ।’

दूजो —“बात तो धारी ठीक लाग ।’

तीजो —‘ये मखे ई मन रा गोठ जच ज्यू उठावो, इनक सातर तो आ अंडी मू चाटी तई वफादार है । जादू रो ढहो तो फिलिप माथ पर राख्यो है । जित

आ टीका टीपणी सुएर अ नी तो नाह हेठी कर्या सडक दणी भाग निकल जावती । फिलिप उदारता सू हसर दात काढ देवतो । वाल्टर न लोभा माथ रीस जावती, अर मेरी री तो केई बार आख्या भरीज जावती ।

अनी अर फिलिप तथा टावर तो इण चरचा सू तग आया ई, पण नित-हमेस सागी दळियो दळता दळता दळारा न आप न अळखत लागण लागी, अर ब जावता क जे ब्याव बर-बराय लेव, तो रोजीन र गागीरय सू पिढो छुट्टे ।

जद फिलिप अनी र घरे जावतो, तो वाल्टर बीसू घणो राजी रवतो, जीमण खातर फिलिप रा नीरा करतो, आपर हाथ सू मूढो ढाळतो अथवा पाणा या चाय री गिलास जावतो । जदपी वाल्टर आपरी मा रै सामो रुदेई प्रस्ताव तो राख्यो कोनी, पण उण र नणा सू इसी झळक मिलती हो क फिलिप अ ती रो जे ब्याव हू जाव, तो वो राजी है ।

पण मेरी वाल्टर सू दो पावडा भाग रई । आ बोली—“मा, आपू म्हारो कित्तो लाड राख । आ तो मन ठा है कैं ब म्हार चाचा लाग, पण हू देखू क गळी गुवाड मे दूजै टाबरा रो लाड बारा बापू राख, जिकैं सू फिलिप चाचाजी म्हारो लाड कित्तो ई बेसी राखै । म्हार बिना ब जीम कोनी, म्हार बिना वान जावड कोनी । अर सगळा सू अखरण री बात तो आ है कैं म्हे तो रँवा इस आछ कपडा मे, अर तू रबै इसी कोनी । म्हारो जीव इण बात सू आपर दोरो है ।” कवतो-कवती मेरी रोवण लागी ।

अनी उण न छाती र लगाई अर बोली—“तो हू काई करू वेटी, म्हार भाग इसा ई है । परमा मे जे सुख लिख्योडो हुवतो, तो थारा आपरा बापूजी, म्हार पालता पालता, आपा न छोडर क्यू तो जावता, अर क्यू इण तरै आपा अनाथ बणता ?”

“पण मा, अब बरस कित्ता बीतग्या ? मन तो याद ई कोनी कैं बापू वद गया । मर्न वारो चरो ई याद कोनी । अर फिलिप बापजी निसाव चोला है । तन चोला को लाग नी ?” मेरी पूछयो ।

‘चोला तो लागै ।’ अ नी कयो । “फिलिप तो सगळा न आछो लागै । वो गुणा रो घर है ।”

“तो फेर मा, आ काई बात है ?” मेरी पूछया ।

‘तू काई कवणो चाव वेटी ? तू बडी सारी है, समझणी है । थारं मन री बात न खुलासा करन कह ।’

‘मा’, मेरी बानी, [तू फिलिप बापजी सू ब्याव बो कर सक नी ? करले मा, हू पारै पगा मे पड । ‘कय’ मेरी अनी र पगा मे भावो नाचण लागी । अनी बेटी नै छाती र चिपायनी अर टळै टळै आमुडा दळनावती रई ।

मेरी बोडो ताळ म उठर गई परी । अनी उठी । आख्या घोई, अर तारल वगीच मे टलण लागी । टलती टलती र माय माय सू फटकार आई—अनी फिलिप पार खातर आपगे डील गाळ दियो, अर तू बीग आग सू आग टरबाव है आ बात कठ सई मिनखण री है ? मन म सोच्या वित्ती बार म्ह बीम् यण वर्यो है अर जद बो आयर ऊभो हुयो, तो हू बूडो पडो हू, ब दरगाह री चक्कव सू तो म्हार काना रा पडदा फाटग्या । आ निरुमा मिनगा र जाण कोई दूजो वाम ई बोनी । पण आरी भी गळती बोनी । मन दूजा र दोस कानो नई, म्हारै आपर दास कानी देखणो चाईज । अठोन म्हारा आपरा टाउर फिलिप न आपर प्राणा सू प्यारो समझ, अर व आ चावै व हू फिलिप सू ब्याव करसू । पण अ सगळा आ को सोच नी व जे कदास ईनक जीवतो आयग्या—हाथ । आवणनै तो गठ पडयो है, बरसा रा बरस बीतग्या—तो हू चाई करसू ।

ईनक कठै रैयग्यो ?

पण ईनक कठ रैयग्यो ? अनी सू साबळ मिलर, टाबरा रा लाड कोड करन “बडभागण” नाव र जळ जाज मे राजी खुसी दुर्यो हो । आ वात तो ठीक है कँ जातरा सरू हुवती बेळा, जद जळ पोत बिस्वे री खाडी मे हो, तो जळ देवता मिनख री सगती तोलण खातर भायग्या । आज रा सगळा मुसाफर धबरायग्या, पण जाज चलारा हीमत घर चतराइ सू काम सियो । माथसूणी सैरा सू “बड भागण” मोरघो लेवती रई । पण मिनख री सगती कुदरत र आग वाई मोल राख ? पाणी म उफाण माथ उफाण घर हबोळ माथ हबोळो उठण लाग्यो घर सगळा जणा बचण री घास छोड दी, कारण इण हलचल सू जाज वागद री नू गी ज्यू अधिर हालत म पडग्यो घर मुसाफर मिट सिक्क गिएता हा व अथ जाज हूव्यो, अथ जाज हूव्यो । इण तर रँ डरावण तोफान मे नू गी लेयर उतरणो ता चलायर मौत र मू ड म जावणो हो, इण कारण सगळा जणा सकट काळ मे भेळा हुयोडा घाप घाप र इस्टदेव रो सिवरण करण लाग्या ।

कुदरत रो गोप हळको हुयो घर जाज र डगमगाट म कमी आयगी । बड भागण’ आफत माथ सू साबत निकळगी घर मुसाफरा रँ जीव मे जीव आयो ।

अथ जाज ठट उन भाग म आयग्यो जठै मौसम सुवावणो घर समदर सुसीन हा । लारम खतर र बारण ममदर री आ सामती मुसाफरा न बड भाग री सैनाली लयाई ।

भाग गया सू पली ई पोत चलारा आपरी कमर कसली, कारण भागै “ताफान डमरूमध्य” मायकर गुजरणो हो । जिंसा गुण बिसा नाव । तोफाना री मुकळीयत र कारण ई इण डमरूमध्य रो नाव इसो थरपीज्यो हो । आज तो लोग ई न “घास बघावणो, अथवा “केप आफ गुड होप” कव है । हा, तो जद “बडभागण” इण डमरूमध्य मायकर निकळण लागी तो घेब बार बीर नाव री पारस करण खातर जळ-देवता फेर बभरबघो कस लियो । नोगा नै “बडभागण” नाव कूडो लागण लाग्यो, घर बा सोच्यो के ब सगळा निरभागी है । पाणी रा फटीड घाय गायर ‘बडभागण’ अघमरी हुयगी । मुसाफरा फेर इस्टदेवा रो सिवरण कर्या, पण आज

सिवरण घनवारण लगावण लाग्यो, फेर भी हात तगतीर सिकंदर हो, घर समझ सिलामी लेयर मघरो पढ्यो ।

इए तर कदेई मौसम आछो घर कदेई मौसम माडो, एए मुकावलो करता करता छवट गन मे पुमव बिछ्या, घर 'बडभागण लारल बिख न भूतर, सोनलिया टापुभा र एमवाड कर हमतो मूळकती आपरं धान मुकाम पूचगी, घर बठ जायर सुख रो सांस लियो ।

आज चीए देस र बनार आय लाग्यो, घर ईनक भी आपरो काम जी तोडन करणो सरू करयो । मारग री घबळो बेळा मे जे ईनक जिता हिमताळू चलार तई हुबता ता जाज ठिकारो लागणो मुसकल हो । आज र कपटन इए घरय री भेक बागद जाज मालक न लिख भेज्यो, जिण म ईनक री चतराई घर हीमित री मोकळो बहार करी हो । कप्तान आपरो मरजी सू ई ईनक री तिनखा बघापर पली बिच्च दूणी करदी । इए मू ईनक रो उरसाह बघ्या, घर वा आपरो काम भीर भी साव धानी सू वरण रो ध्यान राखतो ।

दिपटी सू फुरमत मित्या ईनक बजार म जायत भात नात री जिनसा रा भाव ताव भी मालम कर लेवतो । बठ रमतिया री बजार घणो जोरदार हो । ईनक बठ माल री खरीद परोएत भी करण लाग्यो । जद जाज पाछो दुरण लाग्यो, तो बी घणालासारा रमतिया मोल लेय लिया । मन मे बिचार करयो—कितो फरक है भठ घर बठ र भाव मे । भठे जिको रमतिया भेक पीस म भाव, म्हारै भठ उणी रा दो भाना लाग तीन भाना लाग । भठ गुणो फरक बार गुणो फरक । इए तर जे हू दो तीन चक्रर बाढ लेमू फेर तो दळदर दूर है । पछ म्हार भाव मे ई दुकान कर लेमू । बीपार बघ आसी घर गरीबी भाय सू निकळर घर ऊँचो उठ जासी । भनी भिनखाचार रबण लाग आसी । टाबरा री सावळ पढाई रो परबघ हू जासी । म्हारी तो कोई बात कोनी । हू तो जे घरार रऊ ज्यू ई खलवो कर, तो भी कोई बात कोनी ।

बिकरी-बट्ट गो ममान टाळर बी सोन र भौळ री भेक भूरत भी टाबरा र रमण खातर भाव नीवी । जद टाबर भागता-भागता 'बापू-बापू' कवता मामन आसी तो हू भट भा भूरत बाग भाग कर देमू—ईनक मन मे सोच्यो, घर तद टाबर कित्ता राजी हुसी ।

अब 'बडभागण' री घर कानली जातरा सरू हुई । रोभा तो पलडी जातरा म थोडा नई देख्यो हू एए घबळल गली बिच्च ई दधकाई रई । मारग मे समदरी मवर् आय्यो घर बार भाय नाज फस्यो एए हू सियार चलारी बीन मवर सू बार काड लियो । आज र भागन भाग भाय भेक लुगाई री सीन तई री भूरत कोरयोडी

ही । लरा आव भर इण मूरत सू टकराव भर पाछी बिलीण हू जाव । मूरत जाग बराबर लरा रो गरब गळतो देख रई हे भर सामी आवती परबड लरा कानी भेरु-टव निजर मू जोय रई हे ।

इण तर भोवळी ताळ तई 'लरा मू सग्राम करया पछे फर 'बडभागण' न सायन्ती मू सास लेवण न मिल्यो । पण इसी ठा पडी क 'बडभागण' रै नसीब मे टिकाळ सायन्ती लिह्योडो नई हो । भाग जावते ई आधी सरु हुयगी—कदेई उतराद मू दिखणाद, तो कदेई दिखणाद मू उतराद । इणी तर उगूण सू आयूण, भर भायूण मू उगूण । पळ पळ छेड आधी रा रुख पळट, भर चलारा रै नाक मे दम आयग्यो । इण र साग-साग लरा भी आपरो जग सरु कर दियो भर व बडभागण' री छाती म यपडा मारण लागगी । 'बडभागण' काळमे मोटो राख्यो, भयाग जरणा राखी भर आपरो छे नई दियो पण भगवान न उण रो छे लेवणो हो । उणी बगत मीत ह्यारसो डरावणो रूप धारण करन तोफान फूफायो, भर चानणी चट्ट रात न घोर भमारवी ज्यू वणावदी । चलारा आपरी जाण मे की पाछ नई राखी पण अब तो हाथ न हाथ सूभणो ई बढ हुयग्यो, गेलो दीखणो तो छेड रयो । जाज गेल मू भटकग्यो, पण चलारा न अधार र कारण ना तो ठा पडी भर ना व तोफान र कारण जाज माय की कबजो राख सक्या । अधार मे सगळा हाथ-बोय करण लागग्या । कप्तान जाज री बाल न ब्रेकदम रोकण री कोसीस करी । पण जाज तो तोफान र अधीण हो कप्तान रै हाथ री बात नई रई । लरा टकरावण री आवाज आई । कप्तान सगळा र सावधान हुयता थका भी फेर सावधानी सारु घटी बजवाई । आ घटी खतर भयवा भीत री ही । देखता देखता जाज जायर चटटान मू टकरायग्या । टक्कर इत्ती लूठी लागी क जाज रा फूतरा-फूतरा बिखरग्या । भोय हाय होय, भोय हाय री करळाट उठी, भर सगळा मुसाफर पाणी र पेट मे गया । पण वा माय मू भी जीवतो रयग्यो ईनक, भर दो जणा दूजा । बार हाथ बोई दूटा मागा लट्टा भयवा पाटिया आयग्या हा, भर व बार सायेर आधीक रात तई बवता रैया । आ तीना र सरीरा री सगती तो सोळ धाना दूटगी हो, पण प्राण वाला लागै, इणी कारण भ सकडी र सबळ मू भटकयोडा रया । बीन डील नई दी । काळी रात रो छेडो आयो, भर तडको हुयो जित्त व तीनू भेक टापू रै वनार लायर 'हाखीजग्या । वा माय मू भेक रो नाव हो हटर, जिक री भूमर ईनक र लगे टगे ई हो । तीसरोडो तो हाल छोरो सीक ई हो । कद मे तो पूरो बध कर लियो हो, पण हाल होठा माय मू छ ई पूरो फूटी नई हो ।

जद दिन री दो बजगी, तो ईनक थोडो हाथ हिलायो, भर पसवाडो फोरयो । वठण न खसै तो सगळो डील भकडोज्योडो हुवण रै कारण बठयो ई ह्यीज कोनी ।

छेवट तीन घ्यार बार हाथ पग ऊचा-नीचा पटकर बी कोसीस करो, घर ऊमो हुयग्यो । प्राण बचग्या इण रो हरख तो हो पण भबें कोई जगली जिनावर भख लेसी, इण डर सू ईनक बिचार म पडग्यो । चालणनं वसैं, तो पगा रो सत निसरयोडो । पीडया न थोडी दाबी मसली, घर बीनाली चाल मे भागै गयो । ईनक र हरख रा पार नई रयो, जण बी हटर न तावड मे गरा सास खाचते देखयो । नडा गयो, जायर बचेहियो, छाती घर मगरा र हाथ फेरयो, हाथ-पग चीयया तद हटर भास खोली । ईनक हटर री छाती माथ पडर बीसू लिपटग्यो, घर दोना री आख्या मे पाणी घायग्यो । ईनक भट आख्या पूछर कयो—“अर हटर, भक घर भैक इग्यारै हुव । डर मत, अब आपन जिकी हालत मे भगवान सायर घर दिया उण रो मुकाबला करण खातर त्यार हू जावण चाईज । दोनू जणा उठग्या, घर भाग गया । सीजाडा बदनसीब भी घायग्यो । बीरी हालत खराब हो । कोसीस र भुपरायत भी बो भटवणो फिरण घिरण जिसो नई हुयो ।

इण टापू माथ आ तो आफत ई हो क आ तीना न टाळर चौयै मिनल—जाय रा मू डो बठ देखण न नई मिल । पण खावण पीवण न भठ तोडो नई हो । भात भात रा कबळी-नबळा मीठा मीठा इत्ता फळ हा क निरखत भार सू लडाऊम हुयोडा । तीनू जणा फळा न सक्ते सक्त डरते डरते खातर देखया । इमरत री जात । ब डरग्या क भठ इसा फळ कई जाइगर या भूत-बलीत री करामात तो नई है पण जद तीन च्यार दिना म भी कोई डर डाकर घ्यान मे नई आयो तो ब निघडक हुयग्या । माग सू भक जळ सोत भी हो जिण रो पाणी जाल मिसरी म घुळर आवता हुव । घर-घार तो छूटग्या आली दुनिया मू भळगा भी हुयग्या, पण भूख र बिग को मर नी, इत्तो तो नेचो हुयग्यो ।

अब सार रयो जगली जिनावरा रो डर । जगली जिनावर बठ हिसक जात रा तो कोइ हा ई कोनी । हा जिका मुसिय हिरणिय जिता कबळे टिया जिनावर हा । ब इत्ता निघडक बिचरयोडा हा क डर सार समझ ई नई । जे कोई बारो सिवार करण आवैं तो ब प्राण बचावण खातर भागणो जाणैं ई नई । इसा निरदोस घर मोळा जिनावरा रो सिवार करण री गवाई आत्मा नई दी । दो च्यार बार तो ईनक घर हटर बा जिनावरा रो सिवार कर्यो, फर बान आपन गित्याण घायगी—घरे आ जिनावरा रो तो ओ टापू । भार घर म सरणायो बणर आया भू घर मिजमाना न ई मारा । आ किन्ती बढी जितपणता है । बा सिवार करणो बद कर दिया ।

ईनक घाघर आसर खातर जगा जोयी घर आसर पाड रै हेठली घेक गुफा माथ जिकी रो मू डो ममर कानी हो ताड रा पत्ता छापर घेक भू पडी त्यार करो जिकी आधी मू पडी घर आधी गुफा नूच ग्यु ही ।

इए तरै इए इन्दरलोक र वगीच मे, जठ रसाल सू भिषका बाई नई हो तोनू जणा बसग्या । इसी वठै हवा कै मिनख मस्तो सू भूलए लाग जाव । सँवती-सवती गरमी उठै बारै ई मास रव, पए फर भी व तीनू, इसँ देव-दुरळम वातावरण म भी घमूभ्योडा हा, जेळ मे हा, अर बठ सू छूटको पावए खातर तो वारी आत्मा कळमळावती ही । इए रो अेक कारण हो । छोरो हेनरी तो आया पछ कदेई साबळ रयो कोनी । वो हरदम झू पडी र माय ई पड्यो पड यो ओय हाथ बरतो रवतो । बद-डाकपर बठ हा कोनी इलाज कराव तो भी कीरो करावै ?

परवार मे जे अेक जणो मादो तातो हुवै, तो नात सात सगळा री मुख-मुविधा म फरक पड । इणी तर जे अेक जणो अपरोगो अपवा भुतलबियो हुवै, तो वो परवार म्पी इमरत म जर जिसो काम कर, अर सगळँ मुख न दुख म बदळ देव । पए तीनू साथी दुष्ट रा मतायोडा आफत रा मार्या । माद री देखरेख करणो सगळिया री फरज है । दोनू जणा हनरी खातर सोत सू पाणी लावता, तोडर बीर मन-भावता फळ लावता, उठायर बीन छया-तावडँ सुबाएता । पए इत्ता हीडा र उपरायत नी हेनरी री मादगी म मुधार नइ आया । उसटी बीरी हालत दिनोदिन बिगडती गयी । तीन वरसा तई वो सास रूप मे जीवतो रैयो । अेक दिन तग आयर बयो—“ईनव चाचा, म्हार दुख मू ये दोनू बीधीअग्या । हू साबळ तो हू सकू कोनी । अेक घरज करणी चाऊ जे कबूल करो, तो ।”

ईनव बयो—“हनरी, म्ह सदेई तन म्हारो टावर समभ्यो है, तो ई तू सक ? बोल तू बाई चाव है ?”

हनरी र साव मूकयोड सरीर मे जाण पाणी बठ सू आयो ? बीरी आम्ह्या मू टळ टळ बिरया बरसण लागी । ईनव आपर लरलर हाथ मू हेनरी रा आम्हू धर गाल पू छया ।

हनरी बयो—“बाबा, जिवी जरणा मू या म्हारा रोबा लाया है, बा म्हारै बाप र खातर ई ओम्ही ही । ‘नाबी मादगी मू भला भला रा धीरज अर ग्यान हीडा करत-बरत उपपर उत्तर देव देव, पए या कदेई नाक म सळ इ घालयो कोनी । म्हारै कन ओर ता काई कोनी, हू तो उए मोट धणी न घा ई भरदास करू बै बा आपन इए बट माय मू बाड जिए मू आप पाछा घरे जायअ आपर बाला रा मू डा दय सवा ।

हेनरी र गाला माथ हाथ फरता ईनक बयो—‘भगवान धागे घरज बचन कर । पए म्हारो छूटको हुया मू पछै किसो भट सारै रसी ?’

“नई, बाबा । म्हार मू अबै मादगी री बचना भल कोनी । हू चाऊ, हू पान, बाबा हू धाँन घरज कर, भगवान खातर थ मन समन्दर में न्हाय दो ।”

यात पूरी हुबते-हुबते ईनक हनरी र मूड घाबो हाथ देय दियो—“भर हनरी । हू तो तन स्याणो गिणतो हो, पण भाज तो तू सफा डफोळपण री बात करग्यो । भगवान माथ भरोसो राखणो ।”

हेनरी री दसा बिगडती गयी, भर पाच बरसा री जीवत मोत भुगत री भुगती पायी ।

हेनरी जीयो जित ईनक भर हटर न बीरा हीडा चाकरी करणा पडता भर ब घाबता भी हुयग्या हा । जदपी बा दरसायो कोनी, पण हेनरी री मोत सू बान ठा पडी क अब कितो घाटो पडग्यो । हेनरी यका कदेई भू पडी सूनी को रयी नी । ईनक अथवा हटर, दोना माय सू जे बोई शेकला बार भू आवतो तो सुख दुख री बात करण खातर हेनरी अस्टपीर हाजर लायतो । अब जद ईनक बार गयोडो हुब तो हटर शेकळपायत अनुभव, भर हटर गयोडो हुब तो ईनक रो सूनी भू पडी मे जीव अमूक ।

इण हालत म भी ईनक, सरत सातर, मस्त रखण री कोसीस करतो, जदपी हटर केई बार भू डो डेरन यठ जाया करतो । अक दिन हटर कया—‘ईनक घाली जिदगाणी इण टाणू माथ ई खपावणी हैक यठ सू छूटण रा भी कोई मारण काढणो है ?’

ईनक कयो—‘बीरा म्हारी अकल माथ तो परयर पडग्या । मन तो कोई उपाय मूक कोनी, घारी समक म जे कोई जुगत भाव है तो तू बताव ।’

‘मन जच’, हटर कयो, परसू म्है अक बडो सारो रुख जडामूळ सू गयोडो देखयो । जे भापा उण रुख र तण रो मायलो भाग बाळर बीन घोषो कर लेबा, तो फेर बीर सायेर भापा अठ सू निकळण री चेस्टा कर सका हा ।”

ईनक कयो—“काम तो यठण है पण कोसीस करण म कोई आठ कोनी ।

हटर तणो बाळण म लागग्यो । इण काम मे बी भापर सरीर री भी दुध बुध नई राखी । नवीटो भो हुयो क तावठ भर बास्ते री तपत र कारण बीन दाऊजळो हुयग्यो भर बी अचाणचक ईनक न निराठ अकलो छोडर बड घर गयो परो ।

भापरा दो मिनतर उठग्या, भर बी रयग्यो, इण मे ईनक न भगवान र घर री अक सन सागी । मन बी बचायो है, तो वो मन भूबारसी भी सरी । मन पचरावणा नई, पण उण रो भरोसो राखर अठीकणो चाईज ।

भगवान कोई चीज नई देव, तो ना देवो, मिनख निरवाळा हुयर बठ जाव—भा चीज भापा र करमा मे लिख्याडी कोनी । जलम बगाल कदेई पीस खातर माथो पटकर बोक कोनी । पण अेकर-सीक वाई पदारथ इधकार म भाप जाव, भर फेर

मुम जावै, तद ग्यानी सू ग्यानी लोका रो ग्यान भी घरे नई रव, भर बै भग्यानी समभीजण घाळा जिसो ई आचरण करण लाग जावै ।

ईनक जे सरू मे इण टापू माथे भेकलो ई भायो हुवतो, तो भेकलो भावण रो इत्तो दुख नई हुवतो जित्तो दो जणां रो साथो हुयर फेर छूटण सू हुयो । खावो, पीवो मौज करो पण बोल बतलावण खातर मिनख रो जायो आख देखएन ई कोनी । किसीक है थारी माया—आ मोचर ईनक चकराया करतो । टापू रा मीठा फळ भव बीन बाडा लागण लाग्या । टापू र सोतें भर मीठें जळ रो धारा रा पाणी थारो लागण लाग्यो । दिन रात मिनायर चौईम घटा रा हुया करै, भर बठें भी इत्ता ई बडा हा पण इनक न पाड जित्ता दिन, भर भयाग काळें सागर जित्ती लाबी चवडी राता लागण लागी । पाड किया टूट, भर समदर किया खूट—आ ई निरासा बीन माथ दिन रात छायोडी रवनी ।

इण सूतवाड मे ईनक र कन काम काज तो काई हा कोनी । भूल तिस नागती तो बो फळ खावता पाणी पी लेवतो, नई तो आख दिन आपरी भू पडी रै कन बठयो-बठया कुदरत रै फूटर नजारें न देख देवर इण तरै सिर घुण्या करतो प्यू बूढो आदमी आपरी जवान मदमातो घण न देख देवर माथ मे तडीड लिया करै ।

ईनक री नजर जठीन जमगी बठीन जमगी । कदई बो गिगनार जेडा आभो-छूवणा पाडा मामो भाकनो भर ताकतो—तळें मू लेयर चोगी तई कुदरत—भा आपर लाडसर पाड खातर जाएँ मू म रग रो भगलो पैराया है ।

इण तर पाड री तळेटो मू चोटी, भर चोटी सू तळेटो देखता-देखता जद निजर पाकेल हुआवती, तो ईनक आपरी हल हरे भरे मदाना कानी करतो । जित्ती दूर तई निजर पूग मैदान, मैदान, मैदान ई मैदान । ईनक भगवान रै इयाव माथे पस्तावो करया करतो—धाह रे भगवान । इसा सरग-लोक जिसा मैदान, भर भानें भोगण घाळा कोई नई । इसा-इसा इमरत फळ भर चाखण घाळें रो नाव ई नई । भजव लीता है थारी ।

मैदाना मू ईनक री निजर टढी मढी घाटया कानी जावती जिसकी मैदाना मू दुरन ठेठ पाडा माथे चढयोडी इया लागती जाण पिरथी मू सरगलोक जावण खातर पारा-न्यारा मारग हुव । ईनक मन म कळपता—भव अनो भर म्हारा टावर जीवता घोडा ई रया हुसी । भूव भर गरीबी व कारण व सरीर छोडर सरग सिधारग्या हुसी । जे भो रस्ता र सायर-सायर हू सरग पूग जाऊ, तो बठे मन मिब तो जाव । इणी भावना मे प्रवाहित हूय न ईनक कदेई कदेई घाटी र मारग दुर भी जावता, पण फेर जद सचेतन हुवतो, तो आपरी भू पडी मे आधार मूय जावतो ।

कदेई-कदेई इनक री निजर नारेळ र लाव भर पतळं भाड कानी जावती
 भर वो सिर मायें जायर पत्ता सू बण्याड पेठ रें मुगट न बठयो-बठया देखतो रवतो ।
 मन मे सोचतो-नारेळ रो पेठ कित्ता सुखी है हरख सू नाच । नाचें घापेई । घापर
 कबील र भेळा है, म्हारें दई श्रीकसो थोडो ई है ।

जद ईनक निरादम भोम री सुखमा भर गरिमा न निरख निरखर चमगू गो
 सो हुयोडा बठयो रध, अेकाअेक रग बिरगो कोई पनेरू बीजली र भवूक ज्यू
 उण री दीठी रो भारग काट जाव, भर ईनक रो ध्यान टूट जाव—रेसमी भमव,
 मुखमली कवळास, किसाक सोवणा, मन मोवणा है अठ रा पनेरू । पण मन री
 बात किरा र आग कवू, आ सोचर ईनक लांबो सास लेयर वठ ई निडाळ हुपर गुड
 जावतो ।

असबाडल—पसबाडल रुखा कानी निजर जाव तो बठ सू पाछी हटण रो
 नाव नई लेव । भात भात री बेला रुखा र सायेर ठेंठ ऊची चढेडी । मन में
 करयो, जे अवार बल न रुख सू अळयी बर दव तो काई हवाल हुब ? आपडी
 बल घरती माय भायर पड जाव । बिना रुख बेल भूभी थोडी ई रय सक । बिना
 मिनख नारी रो निभाव थोडो ई हुब भर इण र साग बरसाबध पली बिछइयोडो
 अ नी रो चित्राम नणाम घूमण लागग्यो । अ नी । त मन पाल्यो घणो ई पाल्यो
 रोय रोयर पाल्यो, कळप-कळपर पाल्यो, पण ॥ जिदी ठू ठो, थारी बात मानी कोनी
 जिक रा फळ हू तो पावू ई हू, पण थारी काई दसा है, इण री कल्पना किया
 करू ? इण तर बेला लिपटयोडा रुख निजर जाव जित्त तई दीसबो करता, भर
 ईनक नै इया लागता, जाणें ईनक अनी, अनी ईनक आपस में गळबाळडी घाल्या
 झूभा है । फेर जद ध्यान आवतो नै दोना रें बिचाळं अयाग सागर प्रायोडो है,
 मेळ कठ, मिलाप कठ, तो ईनक आख्या भीचर बठ जावतो ।

अ द्विस्य ईनक रोजीन देखतो । अिट दो अिट खातर नइ सगोलग अपलक
 नणा तू केई घटा तई देखतो, पण जिकी चीज न देख्या बीर अतस रा कवळ
 बिगसतो जिए खातर बीरा हियो रात दिन छपटावतो, वो हो मिनख रो, मानवी
 रो मूढो । ईनक आवतो—कोई मिनख दीस, हू बीसू बात करू, म्हार जेळखान री
 काणी बीन मुणाऊ, जे कदास कोई दयाल आत्मा मिल जाव तो सायद म्हारो इण
 सरग री जातना सू पिडो छूट जाव । ईनक न रळी आवती क कोई उणन भायर
 हेसो कर ईनक, ईनक । पण मानवी रो जायो बठ तो आस दखणन ई कोनी हेनो
 करे कुण ? जद बठ सायती छापोदी हुवती तो सागर र केई पनेरू री बरकस
 वाणी मुणीजती जिकी बाळज ॥ बाण ज्यू बीघर निसर जावती । कदेई-कदेई तो
 अ पनेरू ईनक र माथ ऊपर मडरावण लाग जावता जाण निरजडा आपरें सिकार

माथ घूम । काना रा पडदा फाडती चरचराट सुणार ईनक काना मे भागळ या घाल लेवतो ।

पण धा इमी जगा ही व जठ और कोई भीठी धुन री राग रागण्या तो सुणन यातर मिलती कोनी । जे सागर बानी निजर कर, तो कोई दो बोस रं मातरं मू परबतावार छोळा आवती दोस-प्रेक र सार दूजी, दूजी सारं तीजी, तीजी सारं चौथी, घर इणी तरं । लंरा बनारं घायर नडली चट्टाण मू तळाछ घायर टकराय, तो ईनक न सगाव जाण व वंद-प्रबं मू पड्यो मायो फोड, काई घाणी जाणी बानी । म्हानं देण, भायो फोडता फाडता हुआर वरम वीतया, पण कुण सुण ?

कदेई क्हेई जद वायरियो बाज तो मू-मू री अवाज निवळ । पत्ता आप सपरी मे रगड लाव । ईनक न ह्या सपावं व पत्ता आपस म ईनक री मूरखाई री मजाण उढायण यातर जोर जोर मू हसं है-कितोव मूरख भादमी है, लखपती हुनण र सपना म आप तो घठ घायर पोट मे पडण्यो, घर लुगार्द-टावरा नं भनाप पर दिया ।

क्हेई धो उण टापू री जळ घार नं भी देण्या करतो जिकी वं भूतावळ मू सागर म रळ जायती । घारा री इण अतावळ न देपर धो धनी न याद कट्या बिना नई रेंय सप्तो । सोचतो-जे हू धरे पूगू, घर धनी मनं दल, तो बा इण घारा र वंग मू म्हार सामो भाजी आव, घर म्हारी भुजावा म लुव जाय । पण जद धनी मू मिलण री असभवता मायं ध्यान जावतो, तो हिण री गुदगुनी ठडी पड जावती घर मगळो डील डीलो पड जावतो ।

भापत तो आ ही व बटं कोई काम भी जे करं, तो पाई कर, कीरं यातर घर ? ईनक इमो भादमी जिको रात दिन मोरमो करतो भी पापतो घर पवतो पोनी, अय घठ आपरा दिन दिया लूटाव ? पणीतीव घार वो आपरी गुफा में ई बटयो रया करतो जिएरो मू डो सागर बानी हो । इण गुफा मे वो बराबर बिता ई पटो तई बट्या रवतो । बिना बटोनं निजर जमाए वो सागर बानी मू डो करया बटयो रेंवतो । बीरा हाय पण काई भी हिलता नई, माठ री मूरत जू ईनक बटयो रवतो । इण बारण बठ रा मोगळा जिनायर इनक न कोई निरजीव पत्तारय ई गिणता । घोर ता घोर, दूध गितारी जिता छरोन जीव-जल भी ईनक न निरजीव जाणुर नणरं माय चट्टण लागण्या । घर ईनक बान अट्टया नई करतो इण बारण जीव जल उणर माय मोवळी ताळ बटया रवता ।

इण गुफा ॥ बटयो-बटयो ईनक ममदर बानी तावरी रवतो, दण घडीक में व घव ई बाई पाल दोम, अय ई कोई जाज निजर आव । दगलो रयो, घाम्यां

फाड़तो रगो, नस ऊंची तरनो रगो, पण पान रा दरमण बठ ? तो केर निन विधा सूटतो ?

भोर म उगूण निम भूगत भाग रो किरण-जाळ ताड र पत्ता माय सू भगणिणत तीरा ज्यू ईनकरी भू पडी मे बिगर १ बीन सचनण कर नामतो । उण री कू पडी म आया पळ सूरज री किरणा सागर जळ मू रमणन आवती, भर वान देसता ई जळ आपरो रात आडो बाळो ताडो उतारन चमचमाट करतो भावरण भारण कर लेवतो । देवता दयता भूगण आळो भाण ठीक तिर माय चड जावतो भर उण र तेज र कारण सगळी रोई हरल मू नाचती । मूरज माय ऊपर घणो टिकतो कोनी, ज्यू जगती घिर नई रया कर । आयूण बानी मूरज इत्तो बगो पूण जावतो ज्यू जवानी उळना भट पूणपो पेर घालण साग जाव । बिमू जन मूरज री किरणा सू केर पाणी माय खलाई भळकती । इया सगावतो जाण किरणा न बईद करण खातर सागर-जळ मुळकै है ।

मूरज आयो, भर गया परो, पण ईनक हान बठयो है जाण बोई जोगी समाधी म लवलीण हुव । तन बाई इचरज जे पन-मनेरु आयर ईनक र माय भयदा खपोल बिराजर घडी भयघडी बिसाई लेय लेवता ।

किरणा र बिजोग मू सागर र मन म अघारो भरीज जावतो भर सगळो टापू रात री गोदी मे सोय जावतो । ज्यू लुगई भर जाव, पण बीरो टावर सनाणी सरूप सारै रय जाया करै, इणी भात सागर न कळभळ करता देखर भेक भेक किरण आपर टावर रै सरूप मे सागर खातर भेक भेक तारो छोडगी जिण मू आपरा भसल टावर देखर सागर आपरो जीव जजू बा सक ।

भेक भेक घण री भव—भेक भोलाद मू भी सागर न सतोस नई हुवतो, भर बो किरणा र बिजोग म पछाडा माय आपर ऊचो पडतो, भर सागर रै पछाडा टाळर गौर बोई भी भवाज उण टापू माय नई गुणीजनी ।

ईनक निरी बार बठयो बठयो रात न तारा गिणतो रवतो, भर इण तर रात मू दिन, भर दिन मू रात रो क्रम भाजू हो । केर उणी तर ताड र पत्ता माय सू, रात न दगो दयर भयोनी किरणा निरलज्ज हुयन आवती भर सागर मू रमती । ईक न सागर बडभागी लागतो भर बीन आप री भनी भर टावर याद आय जावता । बरसा रा बरस वीतग्या पण बोई नाव निजर म आई कोनी, जिवी को ई आई नी ।

इण तर भूतिमान हुयो ईनक री निजरा केई बार टापू भर सागर री सीवो डाक जावती, भर किती ई घु घळी घु घळी तस्वीरा उण र नणाण भूलण लाग जावती । ब ई चीजा दीसती, जिकी बीरी देख्योडी हो । वाल्टर भर मेरी री चरपरट करती बाणी नदेई बाना म भू जती तो नदेई भनी रा सगीत जेडा सुर भणकार

करता लम्बावता । कदेई ईनक रँ सामनै आपरै छोटे सब घर रो नकसी आवतो—
 वित्त ढोड सू कित्त चाव सू बणाया हो घर । घर रा कमरा, पिलग, बासण
 भाडा, सगळा सामन नाचण लाग जावता । आपरी गळी याद आवती, जिवी पाड
 री चढाई कानी ही । इण र साग फिलिप री चढी रो भी ध्यान आय जावतो । फेर
 आपरै गाव रो गळ्या रो चित्राम नणाग मड जावतो—दोना कानी आपस म अेक
 दूज सू गुथीज्योडा रूप विसाव आछा लागता । फेर वा जगा याद आवती जठ
 सदा बहार पेड मोर रँ आकार म कटयोडो हो । वो अेकायत रो भवन भी याद
 आवतो जठ वो सुकरवार न मछल्या नवडावतो ।

जद इण तरै याद करण न बठतो, तो ईनक न आपरा घोडा भी याद आय
 जावतो जिण माथ समान लाद लादन वो अळगी अळगी जगावा सू बिएज कट्या
 करतो । घो= सिरसी प्यारी चीन आपरी नाव लाग्या करती ही, पण आवती बेळा
 बीन बचदी ही, वा नाव भी ईनक न याद आयगी । नवबर मास रा भोर भर
 भाभरका भी याद आवता जिवा ओस भर बाहर रँ कारण धू धळा धू धळा लागता ।
 साथ ई हळकी-हळकी फवार याद आवती, भर सिढतँ पत्ता री बास चेतँ आवती ।
 गर गभीर सागर री मधरी अवाज याद आवती, सागर रो सीस जिसो रग भी याद
 आवतो ।

अेक दिन अेकाअेक जाएँ बीर काना म गिरजाघर रो घटया रो मीठो मीठो
 टणटणट सुणीज्यो । अवाज इत्ती प्यारी लागी, क हरख सू बीरो हिपो उछळण
 लाग्यो । बीन इया लखायो जाएँ आ अवाज बीर गाव सू ई आवती ही । भर जद
 बी इण सोबण सुगल टापू न, जठ वो कंदी ज्यू पड यो हा फेर आल पसारन देख्यो,
 तो बीरो जीव उचटग्या । अठ री सूनवाड भर अेकायत चीन इत्ती खळी, क बीर
 मरण म काई बाको नई रयो । बस आसा री बिरण ही तो उणरी आ धारणा क
 परमात्मा सगळँ बिराजमान है, कण-कण म है, हू अेकलो कोनी म्हार कन और
 भलेई कोई ना हुवो, म्हारो भगवान तो है । बीसू परवार ता काइ चीज कोई जगा
 है ई कोनी । फेर हू सोच क्यू करू ? —इया सोचर ईनक आपर उखड्योड जीव
 न पाछो जमावण री कोसीस करतो ।

जद भिनग दोघडचित्या मे हुव, तो आछे सू आछा भोग पदारथ भी
 रुच कोनी । जे देख्यो जाव तो ईनक इण टापू रो राजा ई नई बागस्या हो, पण
 बादस्याई कर कीर ऊपर ? दिन रात छुटवार र फिकर म घुळ घुळर ईनक र म थ
 ओस्या सू आगू च रजत जयती मनायली । जिवा वेत हाल काळ्या भवर रँवणा
 चाईता हा रँ जिह्वावरा हुयर तादी ज्यू उमकण लाग्या । पण हान छूटो

હુવણ ન યઠ હો ? વેઈ ધૂનાળી ધર સિયાળા પ્રાયા, ધર પાછા ગયા પરા, પણ દેનક
 હાલ નિજરવદ હો । ઇત્તા વરસ વતીદ હુયમ્મા, પણ દેનક ર દિવઢ મ ધની ધર
 પ્રાપર ટાવરા ને દણ રી જિની રઢી હી, વા હાલ મિટી થોની । વા પ્રા મો
 ચાવતો મ હૂ મ્હાર ગાવ જાઠ ધર વઠ રી મઠ યા મ ફેર ફિલ્લ ધૂમ્ । ધર ધ્રુષાપ્રેક
 વીર માગ જોર મારયો, ધર જઠયાન રા વિવાઢ દૂટમ્મા ।

पाछो घरे

मिनख रै भाग न कए देख्यो है ? अक दूजो जाज 'बडभागए' घाघी तोफान र कारण सामी गेल सू रळग्यो, अर पोवरण पातर पाणी खूटग्यो । सजोग स इणी टापू र पसवाड आयर ऊभग्या, पए जाज चालवा नै आ ठा नई क ब किए जगा है । तडक री बेळा जाज री अक नाकर टापू र बनारै घूमतो हो, अर बी निरमळ जळ न सळ सळ करते सागर मे रळतो दख्यो । तिस डाढी ही । धारा र नडो गयो । मिट दो मिट ऊभो ऊभो देखतो रयो । दो-तीन टोपा पाणी जीभ माथ हारया । इमरत ! घोवा घोवा धापर पाणी पियो ।

इए जाज वरमी भट आयर जाज रै कपतान न पाणी री इतला करी । कपतान आदमी भेज्या अर बयो— 'बगा जावो अर पाणी रा ठाव भर लावो ।'

ज्यू ई व खाया—खाया जावता हा बारा काळजा ऊचा चढग्या । अक जणा तो भागर रुख माथ टगग्यो । अक रुख री ओट मे ऊभग्यो । सगळा निहत्था नीसरया हा, अर प्राण बिया बचावै—बार सामी अघाणचक अक इसी सूरत आयगी जिए रा लावा लावा उळभ्योडा केस सिणियो हुव ज्यू लागता हा । डाढी बध्योडी पए सवार्योडी नइ, जगळी घास हुव ज्यू । चामडी तावडें मे सप-सपर भूरी हुयाडी । इसी ठा पडी क आ सकस मिनलाजूए मे तो कोनी । व सोच मे पडग्या क ओ डाकी हैव राकस हैक हाऊ हैक, जमवूत हैव, कुए है ? सगळा आप आपरी कळपना सारू बीरो अनुमान कर हा ज्यू ई, रगग्या । आ सोका मिनख हुवण री कळपना नई करी, कारण उणरो भेस इसो उदबुदो हो क कदई मिनख जात न इसा गाभा पर्पा देखी कोनी । घास री जेवड्या बट बटर खाल रा बडा अर छोटा, रग रगीला टुकडा ऊपरल अर हठलें तिग माथ बाध्योडा हा ।

पडार जाए क ओ उदबुद भेसो आपारो ईनक आरडन ई हो । इत्ता वरसा सू आख्या फाडता फाडता नीठ मिनख रा चरा दोस्या, अर मिनख बीन देखर सतरा-बतरा हुयग्या । पेड माथल ईनक मिनख न देख लिया हा । वो पेडर न डा गयो । आदमी घवरायो अर जोर मू भरदायो । बीरा हाथ पग पूनग्या, अर भळे ऊ चो चडण री कामीस मे वो जरा दणो हठ आय पड्या । ईनक बीन दग्वर हस्ता पए आदमी न

बा हसी आपरी मीन जिसी डरावणी लागी । वो भागणो बायो पण पग छप्या । डोल धर धर धूज । ईनक बीरा भाव लसग्यो घर बाई चञ्चुवाया । आदमी र पल्ल फूटो आपर ई पड़्यो कोनी । ईनक दा पावडा तार सिरक्यो, घर हाथ सू भ्रमदान दियो - डर ना । तार सिरक्या सू आदमी रो डर हल्ला पड़न लाग्यो । बाकी आदम्या बानी भी ईनक सन करी । बान नडा बुताया । ब आगम्या । बान टूटी-भूटी जवान म कयो—“हू आदमा हू, डरो ना ।” बा भरण रा उदगम पूछयो । ईनक समझ्यो कोनी पण च्यार पाच बार सन सू पूछयो तो वो समझ्यो, घर बान ठोड ठिकाण लेययो ।

ईनक जाज करम्या न जद आपस म घोसता चालता मुण्या, तो बीरो इत्ता बरसा री सोयाडी बाब-सगती पाछी जागगी घर बा आपरा भाव थोतर घोडा घोडा समझावण लाग्यो ।

पाणी रा टाज भर लिया, घर ब जाज म आगम्या । ईनक न देतर जाज रा सगळा जातरी वीर बारकर धेरो घालर ऊमग्या । आपरी बाबडती बाणी मे ईनक बान आपर दुरभाग री कया सुणाई । सरू सरू म सोबा बीरो भरोसो नई करयो । सोक 'बी बी' हसण लागम्या, पण साच रो सस्तर भ्रमोष है । सरू म गत-बला बलिया लोक भी थोडीसीक ताळ म बात सावळ ध्यान देयर सुणन लागम्या घर जठे मरम भेदी पळ भाया, बठ सगळा रा हिबडा पसीजम्या । बा ईनक नै पै रण पसारू मिनवाचारें रा गाभा दिया, घर बीन बिना भाड जाज बठाण लियो ।

इत्ता बरसा तई ईनक भणयोले रँयोडो हो, इण कारण आपरी मायडमासा न भी बिसरयो हुब ज्यू ठा पडी, जीम भी जाडी पडगी घर उचळीजती नई हुब ज्यू लखावण लागगी । वो जाज करम्या भेळो बठग्यो । बान आपस म बोलना हसता सुण जद बीन भी भूडो खोलण री रळी भाव, पण इत्ता बरसा र भबोल बी म भभरोसो उपजाव दियो हो जिए सू वो सक र मारयो भूडो खोल नई । दो च्यार दिना तई साथी लोक बी न चलाय चलायर बतलायो श्रीर माझणी बोलबायो । जद आछी तर बोलण लागम्या केर तो वो खुद खुलर बोलणा चावतो । छोटी टाबर जद बोलणो सीख, घर भेब बात न दस दस बार बब, उणी तर ईनक तीन च्यार दिना तई बाम-बकाम खूब बोलतो ।

आपर गाव बाबत समाचार पूछतो । अनी बाबत पूछतो । टाबरा बाबत पूछतो, पण बीर इत्ताक बानसो कोई भी हो नई इण कारण ईनक न कोई जाणकारी नई मिली ।

जिए जाज सू श्री लोक जातरा करता हा प्रो इत्तो जूनो घर अघबळ्यो हुयग्यो हा व साथ गरथा मे मागर माथ चालण जोगो ई तई हो । अठीन ईनक रँ

ऊँटावट ही बगो पूगण री दण कारण जाज री धीमी धान घर जगा-जगा रो रनाव बीन घसणजोग 'नागण लाग्यो । इण जाज विच्च तो ईनक आपरी नाव मे भी पणो छायो चाल सकतो ह । हवा माथ भी ईनक न रीस भाई । का तो इमो जोरदार तोपान घाया व 'बडभागण' रा भाग फोड दिया, घर भवै हवा चालण रो नाव ई सेवै बोनी । जे हवा तज हुवै, तो जाज री चाल बर्य घर वो आपर गाव बगो पूग सारै ।

जाज र माथ रस्योने तो ईनक हो, बीरो बगलना तो जाज रै घेरै मे जकड़ीग्योही का ही नी । या इगनैड पूगगी, घर ईनक रै बगलगाह रै तीर माथ, गांव री गलया म घर बजार मे विचरण लाग्यो ।

घड़ीकना घड़ीकता छेउट इगनैड रो सागर तट नहो घायो । तटक रा बगत, पदमा मेपा र घोन हो । जिण तर एक प्रेमी आपरी प्रेमण री घरती माथ पूग घर बीन उण घरती र वण वण म, हवा मे, पाणी म, छैया मे, तावड म आपरी प्रेमण रा प्रेम छट्टहना, सामो आवतो दीनै, घर वो हरक पीज री प्रेम मू उगमांग कर, इगी तर इगनैड रो तीर नहो आवता ई ईनक रै गुम रो संसार पाछो नगजित हुय्यो हुब ज्यू लवायो, घर वो चाग र पाडा मू घायोही हवा रा बल-बलार मरा सात लिया ।

जद घरमरा घर दूज बोका र उत्तरण री बगत भाई, तो फर मान ईनक रो ध्यान घायो । या आपस म चढो बरनै दत्ता पीगा भेला वर लिया व ईनक नै बो जाज बीर गाव र बदरगाह लेजायन उताव द ।

ईनक रो बदर घाय्यो, घर वो चुपचाप आपरै घर बानी ठुरयो । केर मन मे बिचार घायो—घर बानी ठुरतो ग्यो, पण घर हवै बोनी ? केर भी पण घम्या बोनी, घर बा बराबर घर बानी नासतो रयो । तीज पीर रा उगत हो । मूरज घाम म पलपटाट बरता हो, पण भीमम ठहो ह । हवा सीली ही, घर सरदी भोवळी ही । छेवट गमदर मू बाहरा उछ्यो घर बट्टागां री तेडा माथ कर ठेठ गाव तई पूयो घर तगल गाव म भुध छावयो । इत्तो घरमार छायो व हाथ न हाथ नई मून् । ईनक र सामन सांबी चवनी सटव ही जिकी जागे जमी म चडगी बपामें में उडगी—टा ई नई वर बट गई । घाय्या तरगाया म इत्तो ई टा पठ व घटीन ठोरी री गार है घा रायो है, घट मन बायादा है ।

ईनक बामनो ग्यो । मन म घेब रग घायो जिण रा डाळा मूबग्या हा, घर पता गिरग्या हा । रग माथ राबिन पछी घेबनो उछ्यो बटन बाटन गावनो घपका रोवता हुब ज्यू मगाता । ईनक मन मे बीन पूछ्यो—घर बारी जोडीवान बठै नई ? ईनक रै ।गां म घनी रो तस्वीर घुपनी दीमण बागी । ज्यू-ज्यू

कोहरो धणो हुवतो गयो, अधारो बधतो गयो । इण अधारं म भी ईनक रुवयो कोनी
 धर वरावर पग मेलतो गयो । डाफर बाज । दात वडवड कर । काळत्रो घूज, पण
 गेलो नई सूभ । पण धनी सू मिलण रो चाव किणी तर नम आई पडयो, धर
 पग गला काटता रया । आगरे अेक पळवंदार रोसणी दीसी । रोसणी र जीम तो
 नई हो पण तो ई जाण बी ईनक न वयो--“अरे ! क्यू घारा भोगना फूट्या है ?
 टकरा लावतो क्यू फिरै ?” इनक जाण भा भासा समझ्यो, धर बी उणी वगत
 चुपचाप लावी गळी र मारग टुरग्यो । इण तर री अडचणा ईनक न मोट सुगना रा
 लकरण लागण लागनी । पण पग, धरे, य तो अयव गन सू चालता रया, जाणे
 थकणो धर मुस्तावणो जाणे ई कोनी । धर छेवट वा ईनक न उण घर भाग
 लायर ऊमाण दियो जठ धनी रया करती हो, ईनक न प्यार करवा करती हो,
 ईनक र टाबरा न हुलराया धर सडाया करती हो, जिवा न बार आपमी हेज र
 सात बरसा मे जलम्या हा ।

ईनक घर र भाग ऊभग्यो । उणी घर भाग अणजाणयो हुव ज्यू ऊभग्या
 जिणन ईनक आपर लोई री नमाई सू, धण हरख कोड सू, धनी धर धनी र टाबरा
 री मुख सोमती सातर चिणायो हो । बारण-बारया कानी सावळ निजर हांखी पण
 उजास रो काम नई । पान डेरया, पण भाय सू सपसपाट रो नाव नई । किवाड र
 नैडो जायर जद सडकावण खातर हाथ बघायो, तो ईनक रा नण फाट्योडा रयाया ।
 किवाड माथ अेक वागड चेप्योडो जिण मे लिख्यो हो—बिकरी सातर ।

अब ईनक सू वठ ऊभीज्यो कोनी । इत्ती ताळ अणथक चाल सू अवराम
 चालणिया पग अब उत्तर देवण लागया, पण ईनक वठ फर ठर्या कोनी धर गळी
 री डाळ कानी धीर आगीन गयो परो । मन मे बिहार करतो रयो—तो काई धनी
 मरनी ? नई तो घर बिकण रो काई कारण । पण म्हारा टाबर तो हुवला । धनी
 धर टाबर धोनू ई कोनी ?

वठ सू टुरम ईनक जाजा मे माल लादण रें डांक कानी टुरयो । वठ अेक
 जूनी सराय ही जिकी न ईनक जुगा सू जाणतो हा । मन मे सोच्यो—वा सराय तो
 आज सू मोकळा बरसा पत्ती भी पडू पडू ही अब तो धूड मे रळगी हुवली । पण तो
 ई देखू तो सरी । आसरो तो लेवणो पडसी । आम ह० कया रात कडसी ? सराय
 कानी टुरग्यो—कित्ती जूनी सराय ही वा । म्हार दाट री टेम सू भी पत्ती रो
 हुवली । काठ र सिलोपटा र सायेर भीता चिण्योडी हो । बोदी, मुळयोडी छत
 जिकी न उदेई खाथ सायर थोथी कर हाखी ही धर जिण म ऊपर सू धूड बरसण
 लागनी ही । चिड या भी आपरा भाळना वणाय राख्या हा । भीता रा लेवडा
 उतरग्या हा धर जगा जगा खागळा धर साडा पडग्या हा । मरामत क्येई हुई कोनी ।

मराय रा मानव ता म्हाय घट रैवता यनां भी समीर हुयग्यो हो । जद सराय मे धायो तो मालम पढी व इग रो मालव तो भरग्यो पण उणरी बळ मरियम नेन, दिनादिन घटन नफ न बावजूद भी इग न हास घानू राखी ह । ईनक न याद धायो व बिणी ब्रमान म धा मराय माइश मू गघागव नर्योनी रवनी, पण अब बा चमपल, बा रोनक बठ ? मूनी-मूनी पढी है । बोई घर-बायरो हुय जिवा घठ घासरा तक । ईनक घठ ठरग्यो । जद मरियम नाव पूछयो, ता ईनक घेकरसी मरियम र गामो भांययो, पर बोत्वो—म्हारो नाव, म्हारो नांव है 'नेटिव' ।

मरियम 'नेटिव के, धा बेटा, धा सराय घारो है, तन घाछो लाग जिबं कमर में ठरजा । घेकसी रा तो दिन ई गूट कानी । ई सराय म बोई कमाई घोड़ी ई है पण ई र मिय मिनगा रा मू हा तो दीम है । अछ मा, घवार तू घबयोहो हुती, भूयो ।"

मरियम रागी बलाई । ईनक जीमर मोयग्यो ।

सराय में डेरो

मरियम बाछी घर बातेरए लुगाई हो । भापरा बस्ती खातर ई बी घा मराय हाल चानू राखो हो । जातरमा सू बा गपसप सड़ावर भापरी टेम पूरी करती । जद बाछा निना रो याद भावनी भाईना रो दुखार धली रा प्यार घर भापर जोवन रो प्रमोत्तव घड या याद भावती तो बा भापरी बाणी बवतो रवती घर रोवती रवती ।

डाकरी ठूडी हो, पण बळ हा हो नी चेताबूफ नई हो । गाव म घण्टा घाळी जूनी बाता ता म याद हो पण अबार काइ ह्व रयो है इण सू भा नावाकव नई हो । मुसापरा न बा नवी जूनी पूछणी रवनी, घर बार घाग उवळी रवती जिण सू बाता री याद ताजा बणी रवती ।

ईनक इण सराय म भावना ई माचो झल लियो । बो बाग घणा फिरता फिरतो कोनी, इण कारण माजी उणर भाव कर्न बढी बढी नवी-जूनी बाता मुणावती रवती । ईनक रो जीव संसार री मगळी चीजा सू ऊ-योडो हो पण फेर भी बा माजी री बात रो हकारा देवतो । हकार सटट डोकरी न क्यू बिराजी करू ?—बो सोवतो ;

इगो तर माजी अफ नि ईनक रो इतिहास मुणावणो सरू करयो । भोळो डोकरी न काई ठा बापडी न क ईनक बीर घाग भाव माथ सूखो हो । बा बापडी कळपना ई नई कर सकती हो क ईनक इगो बूने निमळा भुळ्ळ्योडो घर कुड योडा हुवलो । इगो कारण ईनक री सगळी काणी—बीर नानडिय री मोत घर अनी री नागरी री बात कई । किलिप टाबरा न मदरस धारया बान सभाळया जिकी बात भी कई । किलिप बरमा तई अनी खानर तरसतो रयो, अर अनी टाळती रई भा बात भी मरियम बाछी तर माटर सुणाई ।

पळ अनी कठ गई ? ईनक पूछयो ।

ए मगळी बात मुणाऊ, तू मुण बेग ! मन आखर छाखर याद है । अनी जिसी लुगाई म्हार दखण म दूजी आज तई कोई घाई कोनी ।" मरियम कयो—
'चौगडद री टोका टीपणी री करामात आ हुयो क अके रात अनी री नीद ह्राम

हुयगी। मोक्षण खातर घणा ई पसवाडा फोरया तडफा तोड्या, अधारो करयो, धारणा ढक लिया, पण नींद तो रुठगी जिकी रुठ ई गयी। अनी आख्या मीचै, पण आख्या मीच्या मू बाई हुवै, रुठयोडी नींद तो मनी कोई नी।

खाट माथ पडो पडो तडफण लागगी। भगवान में मुरता जोडी—‘हे नाथ, आज नींद उचटगी जद तू यात्र आयो है, नई तो तनै कदेई चितारण रो काम ई कोनी। हे दावलिया! ईनक खातर म्हारो जीव रात दिन आकळ-आकळ रैवै। तू मन परचो तो दे कं म्हार ईनक रो काई हवाल है। वो जीवै हैक पार परमधाम मे पूगाया।’

मन मे माडो माडो कळयनावा रा गोट उठया, घर काळजा फाटण लागयो। बा लेध अनी सू मनी कोनी। बा उठो। अधारें में भीता टटोळी। तूळया री पेटी जायी अर भट भेक तूळी मिनगामर दीयो सजोयो। फर भागती भागती बाइबल उठायी, अर पोथी न अधाणचक खाली, घर जिको पानो खुल्यो उण माथ, आख्या भींवर बिना देये वाच, आगळी मेल दी।

दीवट बन जायर पोथी ध्यान मू देखी। आगळी हठनी लण ही—ताड र कख हेठ? ताड र कख हेठ बाई? बा जिको परचा चावती ही, उण रो तो इण पाठ मू बाई सबष भी कोनी। अनी सोचयो—‘खर क्यू फालतू म्हारो मागो पराब कर? रात मोकळी ठठगी, हाल ई जे थाडो आख मे वट पड जाव, तो डील हठको हू जाव।’ अनी सायगी घर नींद आयगी।

पण अनी र इजरज रो पार नई रैयो, जद बीं देखयो क ईनक तो साचेई घणी ऊचाई माथ भेक ताड र कख तळ वठयो है अर उण र माथ मूरज री पळपळ ट करती किरणा मुख री विरखा कर है।—‘ईनक इण संसार म रया कोनी।’ अनी सोचयो। ईनक सरण सिधारयो, अर अब बठ नितो मुखी है। वठयो वठया मुख मू भगवान रो भजन कीतन कर है, अर भगवान री लीला म लयलीण हुय रयो है। बठ ना तो छळ है, ना कपट, सगळा सतवादी है, अर ईनक भी सतवादया री दुनिया म पूगयो। बूड-कपट री दुनिया म रोभा देखा ने मन छोडयो। अर हा भ तो ब ई ताड रा पेठ है जिका र पत्ता न जल्मजल्म रै लावा भगवान ईमू र स्वागत मे बिछायर धरती न पाटदी ही।’

घर अनी री आख उपडगी—जागू हूक सोऊ हूक अनी चक्कर म पडगी। पेर भेकाभेक बिचार आयो—‘ईनक जगो गवायो, अर हू इण तज बीर लाज मूकू, बापड पिनिप न तडपाऊ, टाबरा न अणमणा रागू, आ निस घर री स्वागत? अब म्हार मे अड्डन धावणी चाईजै।’

उठर भनी मेरी र बिछावणी कर्न गयी । बा सूती ही । घेक बार तो साधी भालर उठावण लागी, केर पाछी आपर बिछावण माथ थायगी । थोवाही ताल कमर म भठी उठी धूमो, पण हाल अपारो हो । ज्यू ई दिन रो उबास सधामा, भनी मरी न चचढी । मेरी चकरायो—भाज तई मा बढई अपार भधार चचढर जगाली को ही नी ।

भनी कयो—‘मेरी, म्ह घारी बात मानण रो बिचार कर लियो ।’

मेरी रो नींद हाल पूरी उठी कोनी, इण कारण बा समझी कोनी क भनी काई कयो । भनी जद मेरी रा सांधा भालर आपरी बात न दुसराई, तो मेरी उछळर ऊभी हुयगी, भर वाल्टर न भी उठाएयो । भनी कवण लागी जिर्क सू पली तो ब फिलिप न बुलावण खातर घर सू भाग निकळ या ।

फिलिप घवरायग्यो, सायद भनी र माथ मे कोई सनक आयगी हुसी—आ सोचर बो बिना भू डो धोया, भर बिना पट्टा बाया, हो ज्यू ई घायग्यो ।

जद फिलिप भनी र घर मे पग मेल्यो, तो भनी बारण कन सामी आयी, फिलिप सू हाथ मिलाया, बीन आपरी बाया मे भर लियो भर दोना आपस म घेक बीज रा होठ चुम लिया ।

केर भनी बोली—‘अडीकण रो अपधारो सतम हुयग्यो, भर अब कोई इसो कारण कोनी क आपा ब्याव नई करा ।’

दोनू टाबरा न मा र आपरण माथ इचरज भर हरल हुयो । इचरज न बा दाब लियो, भर हरख न चबढ दरसायो ।

फिलिप कयो—‘अच्छया, भनी, घार जचगी तो भगवान र खातर, भर आपा दोना खातर अब ढील-ढाल ना कर । सुभ काम मे ढील साधी कोनी ।’

आपरा भी आपरा कोनी

अडीकता-अडीकता जुगा रा जुग बदीत हुयग्या, इण कारण फिलिप न अनी साग ब्याव असभव लागण लागयो, पण छेवट बो दिन, बा घडी आयी । ब दोनू धूमधाम स गिरज मे गया । और भी दूजा भोक्ला सोप गया । टण-टणाटण, टण टणाटण गिरज रा समळा घण्टा एक साथ भाणद रो उदघोस करण लागग्या । घण्टा री टणमणाट आख गाव न सनसो सुणायो, क अनी अर फिलिप आज परणी जग्या है, जिका क इत्ता दिना सू, इत्ता बरसा सू आपस म एक दूसरें न परवता आया हा ।

आज अनी इसी सज्योडी अर बणीठणी ही, क आपरी ऊमर स पन्द्र बरस घाट लागण लागयी । लोक चकराया क ईनक स ब्याव आली बगत इणरो जिको मनभोवणो रूप अर कवलो डील हो उण मे, इत्ता बरसा र उपरायत भी तिल मात्र रो फरक नई आयो । अनी पक्कायत कई जडी बूटी रो सेवण करती हुवली, नातर जोवन धन तो पिर रंबण आली चीज कोनी ।

पण अनी जद परणीजर फिलिप र साथ गयी तो उणर चर माथ हरव नई, उदासी ही । बापडी अनी बचना म बधनी ही ।

बा फिलिप र घर म रव पण अणमणो । बात करती करती बिचाळ ई चुप हूजाव, अर दो-तीन बार बतलाया भी पाछो उयलो नई देव । अर जे उयलो देवण री कोसीस कर तो आघो उयलो देव, अर फेर बिचारा री साकळ टूट जाव, घर बा आपरी बात पूरी नई कर सक । रसोई करण नै बठ तो ध्यान और कठान ई जाव परो, दूध अफण तो उफणबो करो, रोटी बळ तो बळबो करो । घडी घडी बार, बा बिना बतलाया ई कय देव-‘हैं ?’, ‘काई ?’ बीन इया ललाव जाण कोई हर बगत बीर साग चाल है, अर वान मे कोई बात कव है ।

इसी हालत र कारण अनी डरू फरू रवण लागयी । अकेली रो घर म मन नई लागतो इण कारण न तो बा घर मे अकेली बढती अर ना अकेली रवती । जद घर रो ताळो सोलर माथ बढती तो, हाथ कूट रै माथ ई रुक जावतो । सायद बीन ललावतो क कोई पूछ है-‘कठ जाव है अनी ? कीर घर मे जाव है ?’ तू

तो ईनक री बऊ ही, भवै फिलिप री बिया बलंगी । भर घँ निवार उठना ई बीरा पग बठ ई रूप जावता भर जा ओकनी घर म नई बढनी ।

सरु सरु मे फिलिप अनी न गमभावण री चेस्ता करी—“अनी, नन काई लखाव ? कोई दीस है डराव घमकाव है ? बात काई है, मन जे तू बताव तो हू सावळ परबध करू ।

योडा दिन और हुयां पछै फिलिप री सोच मिटग्यो । बीन ठा पडगी क अनी रा पग भारी है भर इसी हालत म सुगाया भाम तीर स्रू इवा करण नाग जाया करै ।

अनी री उयल्ल-पुयल्ल री कारण तो उणर ७ गरभ नई ईनक हो पण केर भी फिलिप आपरी बात साची समभण लागग्यो, कारण जण अनी रं जापो हुयग्यो भर जद बा जाप स्रू उठी तो उणर माय माय स्रू सगळा बम निकळग्या । आपेर छोट टावर साग जाए अनी ७ आपरो नवो जनम हुयग्यो भर बा भंक दम नवो नवेली हुव ज्यू दीसण लागगी ।

अनी छोट टावर न रमावण मे बिलम्बाही रवनी । ईनक न भवै बा बिसरगी । भर जे बिसरी नई तो भी उणर मारण स्रू ईनक र ध्यान आळो रोडा अळगो सिरकग्यो । अब अनी फिलिप री सर्वेसर्वा है भर फिलिप अनी री सर्वेसर्वा । ईनक बापडो गयो गत्ता स्रू ।

इए काणी स्रू ईनक ७ घर माथ क निनाड माधक बेईतर रा भाव भी नई भळक्या । काणी सुणन आळ बिच्छ काणी कवण आळी भलबल परभावित हुयाही हो । काणी कवता कवता किणी ई बार तो भीरी बोली गळगळी हुयगी, छाती भरीजगी, भर दो तीन बार बी आपरी आख्या पूछी, भर कर सरु करण री सगती बढोरण खातर थोडी थोडी थमी । हा, जद माजी कयो—“ईनक बापडो गयो गत्ता स्रू” ता ईनक आपरो किडकावरी माथो दुख स्रू हिलावता कयो—“गयो बापडो गत्ता स्रू ।” केर मन मन मे सपसपाट करयो—“गयो बापडो गत्ता स्रू ।”

ईनक र मन म जचो—जद हू अठ आयग्यो, इए गाव भर गळी में जीवता जागतो पूगग्यो, भर म्है समाचार सुण लिया क अनी कठ है भर किए हाल म है तो कर जे ओके बार अनी न सोरी मुखी देख तू तो म्हार मन न सायती मिल जाव । अ विचार ईनक र मन मे उठता वो बार जावण खातर सभतो भर केर पग पाछा पड जावता—कठ ई आ नई हुव क म्हार देखणन गया स्रू अनी री कूना भरी बगेची मे पतभड घाय जाव । पण जिए अनी री चरो देखण खातर ह वरसा स्रू इ छाळू हुव रयो हू, ईनक सोच्यो, बीन देखा बिना म्हारो मन मान

नो ता कोनी । अनी र अरर री अक हळकी सो मुस्कराट मे सगळो दुनिया री सदा सू सो गुणो सुख भरयो है । देखसू, देखसू पक्कायत देखसू ।”

नवबर रो अक दिन भाए बाढळा री ओट, दिन म भी उजास रो टोटो फर सझ्या पडता ई तो रात जितो अ घारा छायायो । बा चुपचाप सराय सू निकळर पाड कानी जायर बठग्या । बठे बठ्यो बठ्यो आपरी जीवण री पोथी रा पाना पळटतो रयो जिए म सुय दुख री हजरू धाता मझ्योटी हो । पण अब वा माय सू अक भी कर्दज नई सकती कारण इनक रा हिरदो दुख सू काठो छमीजग्यो ।

बठे सू फिलिप री घर भी दीसतो हो, कारण उण मे तेज रोसणी जगती ही, जिवी सू बीरो पिछाकडा घर पसवाडलो पाडोस, सगळा संचमण हा । ज्यू समदर म तेज रोसणी बळती देखर पसरू उण सू ललघायर नटा जाव अर आपरा मावो टकराव अर प्राण छोड देव इणी तर फिलिप र घर री रासणा ईनक न माडाणी आपर कानी लाचर सयगी ।

फिलिप र रवास रो कमरो तो मटक माथ हा पण पिछोकडे म जिणरै प्राग भगड ई भगड पडयो हो, अक छोटोसोक बगेचो भी लगायोणे हो । बाग समचौरस हो अर ज्यारू मेर टाटी खाच्योडी ही । तर तर रा, रग गंगीला पुसव प्राप आपरी अनोखी मक बायरिय साग खिडावता हा । अठ सदाबहार रा पेड लाग्योडा हा, अर इण वगच र ज्यारू मेर गड्डा रो मारग बलायोडा हो । अक मारग बीचोबीच भी गयोडो हो । ईनक बीचलो मारग छोड दियो, अर टाटी र सायेर सायर पेड रै लारै लुकग्या अर वठ सू इनक वो निजारी दरवा जिको, बा जे नई देखतो तो ई ठीक हा । पण ईनक रा दुख इत्ता अध्याग हा क अब ठीक बठीक रो फरक ई मिटग्यो । इण दसा सू माडी दसा ओर काई आसी ?

सामली भीत माथ बेल वूटा कढयोण है । आज री नवी रग्याडी ज्यू दीस । बारनिस कर्द्योनी लकडी र चौखट माथ प्याला अर चादी रा चिमचा, काटा तथा दूजा बासण जचायोडा है जिका तेज ज्ञानण मे चमचमाट कर । इणी तर चूलो साफ-मुणरो—सगळा रा सगळा बासण सोनै चादी ज्यू चमकै । चूल र जीवण कानी फिलिप, जिको केई जमान मे अणपू ज्यो अमी हो आज डोल म स्र ठो हो अर बीर डोल रा वरण गुलाबी ही, अर बीरो टावर बीर गाढा माथै लियोडो हो । अर मेरी जिवी अनी ती सू पछ जलम्योडी ही पण अनी ती सू लाबी हो, आपर दूज बाप कानी लुळयोडी ही । कवळा, सोबणा केस, पदमणी तो पातळी अर कद री पूरी, ईनक री लाडली बेटी, पीथ सू लटकायोडो हाथीदात रो छन्ला (जिको दात सोरा ऊण खातर टावरा न चावण सारू देखतो) लिया फिलिप री छोरी र ऊपर हाथ पसाय्या ऊमी ही । छोरी बी छल्ल न भालण री कोसीस करती ।

छत्तनो गुदगुन हाथ मे भन जावनो, पग कर पाछो छून जावता, भन जावनो केर पाछो छून जावतो, इए तर रो कम चानतो, भर ब सगळा घटो घटो बार जोर जार स हसता जिण स पमवाडतो मैदान भी गू जए साग जावतो ।

ईनक न विचार भायो— 'म्हारी बेटी आपर दूज बाप र टाबर रा भी इत्ता लाड कर है, जे म्हारी ईन ठा पड जाव क हू भायग्यो, तो भा कित्ता कोड कर । भा सोचर बी भाग बधावण सारू पग साम्यो, पग उगी बगत केर दूजी बिचार तरग उठी—ईनक धारी बेटी न तू एक छुग पनी प्रबोध मोत्या मे छोडर गयो, तन बा कोई जाए, भर किया पिछाण ? जे ईन ठा पड जाव क हू भायगा, तो ई बीन फिलिप बालो लाग जिमो तू थोडो ई लाग सक । तै इए छोरी खातर करयो कोई है ? बरगो चाव तो पट्कायत हो, पए भगवान न धारो कर्यो कबूल क हो नी ।'

पूर्व र डाव बानी अनी रसोई र काम म लाग्योडी ही । बा थोडी थोडी ताळ स आपर टाबरिय बानी जावनी भर जद सगळा जए हसता तो बा आप मुळकनी । घडी घडी बार फिनिष स बात करती, फिलिप प्यारी आवाज मे बोलतो ।

अनी र कन ई उए रो बेटी वाल्टर ऊमो हो जिवा मोत्या मे पणो नई हुवता यना भी कद म पूरो बघ करग्यो हो भर बीन म सैठो हो । बीं कयो— 'बापू, बेबी म्हा सगळा म घली फूटरी है ।' भा सुएर फिलिप मुळकयो । वाल्टर केर कयो— 'बेबी तू तो बीत हुसियार है भई । बोल, तू पडए खातर लन्दन जासीक भाक्सफोड ?' फिलिप केर मुळकयो । वाल्टर बेबी र गाला न आपर दोना हाथा में पालासाक दबाया । बेबी हसी भर सगळा हसए लाग्या ।

जिए अनी खातर जिए मरी भर वाल्टर खातर ईनक घर बार छोडर, थोडो भर नाव वेबर परनेसा गयो बठ इत्ता रोभा देख्या भर मिनख बापर टापू मे रबना रबता मिनख सू ठाडो हुआवण पर भी पाछो घर आवण री तालना बणाया राखी बा बीरी घए आन बीरी घए को रई नी । बीं अनी र छोट टाबरिय नै देख्यो पए बी टाबर जिबी आपर बाप र मोडा भायें किलकारया भरतो हो, ईनक रा नई हो । कुटम रा सगळा जणा अेक नई हुवता यना भी बै इत्ता भुल मिळग्या जाए सगळा अेक ई परिवार रा हुव, फिलिप स दूजो बाप हुवण री अयवा टाबरा स दूज रा टाबर हुवण री गध रो लवलेस तक नई हो ।

'किसक सुख तू आण' सू हेत सू अ सगळा रव पए इए मे म्हारी सीर अेक रती भर ई बीनी । म्हारा आपरा टाबर जिवा अब जोध जवान दीसए लाग्या, स्याण समझगा हुयगा, ब खुद म्हारा को रया नी । अनी भर टाबरा

मू जिको प्यार घर भादर मन मिलणी चाईजतो हो, उग रो प्रियवारी म्हारी जगा भाज दूजो भादवी बण बळ्यो है ।”

मरियम अपनी रो सगळी बात ईक न भावळ मांडर मुणाय दी ही, पण काना-मुणी घर भादवी देखी म इतो फरक हुब क जिकी बात ईक मरियम वन चुपचाप घर भाद बिना कोई भाव लाया, मुणाय रयो, बी ईक रो मन पीपळ र पान ज्यू डोलण लाग्यो ।

सोच्या—‘अनी फिलिप र साग सार सास बंधी कोनी । म्हार भावण रो भास छूट्या मू ई बी फिलिप रो भासरो निया है । जे हाल ई अपनी को ठा पच जाव क हू भायगा, तो बा म्हार प्यार न ठुकरासो थोडो ई । जद अपनी म्हार साथ घामी तो म्हारा आपरा टावर दूज बाप साग थोडा ई रमी ।’

ईक हीमत भेळी करी । हनो करयो—‘अनी ।’

और सगळा तो आपणे बाता घर हसा मे लागगोडा हा, पण अपनी र काना मे बा घणा बरसा पली रो सया हनो पूगता ई कान गढा टुग्या । हाप भायनो बासण छूट्यो घर बा मूनवाड कानी जोवण लागी । मन मे करयो—‘ईक जिनी, ठीक ईक जितो भावाज इता बरमा मू किया कान म भाई ? हू आप भयगेली हू, सिनकण हू, बडी बडी र हया ई सई उरग्यो । कठ ईक है, घर कठ ईक रो भावाज है । बी रो भाग्या घानी हुयी, घर बी ईक सिवाय और केई न ठा घाल्या बिना, घान पूछनी ।

ईक र हिर मे उयळ-पुपळ भावनी । ‘अनी म्हारी है, टावर म्हारा है । फिलिप ! तू कुण है ? हू भायो जित सँ भारी परवरिस करी थारो मोताप है पण भव म्हारा न लायर मन सुप ।’ ईक सोच्यो क इण तर जोर मू कऊ पण कर बिचार भायो क जे हू चवड भायगा, तो इण घर री सायनी घर सुख र लाय लाग जासी । सुख री जगा दुख आपरो भासण बिछासी । म्हारो घट भेक पळ छिन ब्यातर ई कणो ठीक कोनी । जे जीभ कबज म नई रई, तो गजब हुआमी । म्हार मन री रळी ठेठ मू ई था रई है क अपनी मोरी मुखी रैवणी चाईज, टावरा न सावळ पढाय लिखाय हसियार करणा चाईज । अ दोनू काम फिलिप भाखी तर कर दिया, तो भव हू ई री मनत रा फळ ई नै क्यू नी चाखण दू ?

मू डो खुलणो चाव । जीभ न रळी भाव क बा अपनी न हेसो करे । ईक न डर हो क जे अठे और ठरग्या तो बो जोर मू चीख पडसी—‘अनी, मेरी वाल्टर ।’

पगा मे ऊभो रवण री सगती नई रई । बो बठग्यो । साम फूलग्यो । बठ मू गोडाळिया गोडाळिया टुरण लाग्यो, जे ऊभो ऊभो जाव, घर दीस जाव, तो किसीक हुब ! पण गोडाळिया चालण मे भी ऊत्तावळ नई कर सक हेठ गढा

बिछ योडा है जे कदास ऊनावळ र बारण खंडखंडाट हूजावै भर घरभाळा नै बम पड जाव, तो किमीक हुव । इण बारण भीत र सायेरै सायेरै, हाळ होळ ईनक बगेच र फाटक बन आयो । भघर सीक फाटक घाल्या, भर उणी तर पाछो जड भियो जाण वेमार र कमर रो घाडा गान हव । भव बा मून बगड म प्राययो ।

अठ घावर ईनक भगवान रो प्रायना खानर सुअनो चवता णण गोडा रो सत निकळयो हो भर बो ऊर्ध्व मूड जमी माघ पडग्या । पड या पड या घालो जमी प्राणल या मू कुचरतो रयो भर भगवान मू प्रायना करी— ह सरदसगतीवान म्हारा दुख अब हद मू ऊपर कर नीसरग्या । अब म्हार म सगती कोनी क हू घान सण कर सक । भगवान । म्हारा मानव । तै मन उण मून टापू मू बाढयो, मन मिनखा भेलो करयो भर अठ पूगाया भा आल्या केवा दखाळण खातर ई इत्ती किरपा करी हो काह ? भगवान । हू जाणू, तै म्हारी बठे घणी घणी सायना करी । म्हारा तारणहार । धार घर म दया रो पार कोनी । प्रवार तई त्या करतो प्रायो है तो घोडी दया भीर कर, भीर कर म्हारा घणी । प्रवार तन टाळर म्हारी भीर कोई कानी इंग अेकनपायत र कारण म्हांग दम घुई, भर इसी कुचमाद मूम क ॥ हाथ भालर अैनी भर म्हार टाबरा न म्हार घर म लिमाळ । पण नई तू मन सगती दे, जिए मू म्हारी इण इछा नै हू कानू म राख सकू,— म्हार जीवता जो अनी न ठा नई पड क हू जीवू हू । जे अनी न ठा पडगी तो बा घर री रैसी न घाट री ।”

ईनक केर कयो— ‘भगवान । तू मन इत्ती सगती घीर दे क हू म्हार टाबरा आग भी म्हारी परचा नई देऊ । भगवान । म्हार टाबर है पण हू बामू बोल ई सकू कोनी ? बान बतळाय ई सकू कोनी ? म्हारा टाबर ता मन ओळख कोनी पण जे कदास ॥ वामू बात करण न गयो परो, तो म्हार मू इया कया बिना किया रईजसी क हू घारो बाप हू । पण नई हू वामू बात करू कोनी । म्हारे भाग म टाबरा नै चूमणो भी लिख्योडो कोनी भर मा म्हारी बेटी जिकी प्रापरी मा जिसी ई फूटरी है भर म्हारा बेटी म्हार उणिवार पण म्हार मू ई अिधकी कदेई प्रापरो बाप समभर मन चूम सक ।’

इत्ती प्रायना करया पछ ईनक री जीम रक्की, माघो मूनो हुयग्यो भर सगळ डील मे सण्णाटो बयग्यो । ईनक न मुरछा आयगी भर जो घोडी ताळ तई इणी हानत म पड थो रयो । जद पाछो चेतो वापरयो तो आख्या मसळर उठयो, गामा भडकाया भर सराय बानी टुरग्यो । माघ मारण जो आ ई सबदा न उपळता रयो— ‘अैनी न नई बवणो चीन ठा नई घालणी —जाण केई गीत री टेर हुव ।

पण सागर र खार जठ मे मी, उण र तळ मू फूटर निक्कलणियै मीठ पाणी र सोत रा पाणी ता भीठो ई निक्कलतो रव, इणी तर इण घोर दुख निरासा अर बेवना री घडी म भगवान माऽ अटळ विस्वास ई ईनक रो अंकलो साधेरो हो । इण भरोस र कारण ई ओ सोच्या करतो — “भगवान करै जिवी ठीक कर ।”

इण तर सोच बिचार करता करतो बी जद सराय पूग्यो तो रात खासा पडगी ही । सराय मे मरियम टाळ सगळा सोयग्या हा । बा ईनक न दवते ई बोली—
‘अरे बेटा ! तू जुलम करै । इसी ठारी मे बाज गयो इसी निमळो घारो डील, तू कोई घारी लुगाई टाबरा सू मिलण न गयो ? तन म्हारी सोगन है तू सख्या पड या पळ बार पग ना मेल्या कर ।’

ईनक माच माथ घठर कामळ ओढली । माजी कन आयर बठगी । केर पूछ यो — ‘तू तो घडीकतो घडीकती मासती हुयमी, गयो कठ हो बाज ?’

‘निक्कल यो तो घूमग खातर ई हो,’ ईनर कयो, ‘केर कोई संधा लाक मिलया वान देवण लाग्यो ;’

‘देवण लाग्यो ?’ मरियम कयो, तन हाल सावळ बोलणो ई फ्राव कोनी ।
देवण लाग्योव बाता करण लाग्यो ?’

‘हू पड्याडो कोनी, माजी,’ ईनक कयो, ‘माभी भादमी हू ।

ईनक सोयग्यो अर मरियम आपर माच गई ।



फेर मजूरी

दूज दिन ईनक सदेई धाली टेम उठयो कोनी । मरियम हेसा कय्यो । ईनक कयो— नीद म कोनी, जागू हू पण रात धाली मरनी मू डोन करडो हुयोडो है ।’

मरियम भट अेक चिमच म तेन तपायर साई भर बोली—“ल, धोहो मालस कर ल जिको अकड़ाव उतर जासी ।

ईनक बठग्यो । मरियम कयो—“ल, हू मसल हू । तू तो म्हार बेट जितो है ।

जद ईनक आपरा पग भेळा कर लिया तो मरियम पसवाडली कुरसी माघ बठगी । बोली—‘बटा तू अठ रो ठारी जाए कोनी । माँ-तात न तो माच मू हठ ई पग नई टेनणो ।’

अवार तो दो तीन दिन हुयग्या, काई नवी बात मुण्णई कोनी ।’ कयर ईनक आपरी पीडो र तेल मसलण लाग्यो ।

मरियम कयो— बेटा, म्हार बन तो बाता रो अलूट मण्डार है जे बार मरना लागेलग कऊ तो ई खूट कोनी । पण थारी बिणपिण देखू जद म्हारो जीव उचट जाव भर हू अेकली बठी-बठी मन म ऊ घा गोट उठावती रैऊ ।’

ईनक कयो—‘माजी अेक दिन था कळचळी अाले’ री बऊ री बात भी कई ही नी ?”

हा हा, अनी भर फिलिप री पूछ है नी ?” कयर माजी आपरी कुरसी माच र नडो सिरकाई ।

तो आ काई काणी मुण्णई हीक ई नाव रा मिनल-सुगाई साचई पाई अठ हा ?” कवतो कवतो ईनक आपरी आस्था हेठी करया मालस करतो रयो ।

मरियम कया—‘तू जावक सीधो आदमी है । हू कऊ जिकी बात तू सावळ समझ कोनी ज्यू लखाव । अरे बेटा म्है तन इतिहासी अथवा जोड्योडो काणी को मुण्णई नी, फिलिप भर अनी दोनू हाल तो जीवता जागता सोरा मुखी बठया है ।’

ता माजी, अनी रो आगलो घणी परदेस कमावण न गयो, भर बीर पाछो आया पली अनी दूजो ब्याव कर लियो, पलड घणी रो काई डर ई को लाग्योनी बीन ? ईनक पूछयो ।

‘डर ?’ माजी कैयो ‘डर रो तू पूछ ई ना । डर र कारण ई तो बा बरसावध फिलिप न टाळनी टरकावती रई जे डर नई हुवतो तो बा दस बार बरस गमायर ब्याव क्यू करती, पत्नी ई कर लेवती । डर र साग बा पलड धणी न प्यार भी करती । बो मालदार नो को हो नी, पण आपस म दोना रा जीव रळ्योडा हा । अनी रो जगा जे कोई दूजी लुगाई हुवती, तो बा फिलिप जिस भादमो सू ब्याव करण मे इत्ता घोचा का घालती नी ।’

‘आ घात है ?’ ईनक पूछयो ।

‘हा,’ माजी कयो— ‘हाल ई जे कोई अनी न कय देव क थारो पैलडा धणी मरग्यो, म्ह बीन मरयोडै न दल्या, तो बा याल हूजाव कारण पलड धणी आळो सूळो बीर काळज मे रात दिन चुर्म ।’

मरियम री बात सुणर ईनक री आख्या फाटगी अर बो फाट्योडी आग्या सू मरियम सामो आकतो रयो ।

मरियम पूछयो “क्यू उदास क्यू हुयग्यो नेटिव ? इसी ठा पड कै दूजी बाना बिच्च तनै आ घात धणी मुवाई है ।’

‘मुवाई तो कोनी, पण बरबाण माथे बिचार करू ह । मिनख काई तेबड, अर भगवान काई री काई करद ।’ कयर ईनक चुप बठग्यो । मरियम न बारण कन केई दूज, मुसाफर री भणक पडी अर बा उठर गई परी । ईनक मन मन मे कयो— ‘जे अनी म्हारै मरण रा समाचार पाया सोरी हूसी, तो, जद भगवान मन आपर घरे बुलाय लेसी, तो व भी अनी न मिल जासी । हू चाऊ क अनी मुखी ग्व, बीर काळज रो काटो अवार ई निकळ जाव पण कुमौत क्रिया मरीज । हू भगवान र तेड न अडीकू ॥ ।’

ईनक री हालत सुधार माथ आवणी सर हुयगी अर वो आछी तर फिरण फिरण लागग्यो । अब पेट भरई रो सवाल सामो आयर ऊभग्यो । ‘जे सह्या दिनगै मागण न निकळ जाऊ, तो म्हार पेट पूरती रोठया तो लियासू । ईनक सोच्यो, पण भगतो वणर दुनिया आग हाथ पसारू, दर दर रोटी मागतो फिरू, पग पग ठोकरा खाऊ, जद सिरजणहार मन कमावण सिमरथ बणायो है ? हाथ-पग मनत मजूरी खातर है दीन बणर मागण खातर पारका माथ मार बधावण खातर कोनी । ठीक है, आग आळो पूच गई कोनी, पण म्हारो अक पेट तो हाल ई भर सकू ह । म्हार पेट खातर वित्तोक घन चाईज कित्तोक घान चाईज । हू मजूरी करसू अर पेट भरसू ।’

गाव मे त्रिका घघा हा, वा मे कोई इसो नई हा जिण री जाणकारी अर जिण री कुसळता ईनक कन नई हुव । कदेई बा जाज म पागो भरण आळा ठाव

वृणावण र काम म लाग जावतो, कदेई सुधार रो काम करण लाग जावतो कदेई साभ्या खातर माछल्या पकड़ण रो जालया गूथण र काम म लागतो, तो कदेई जाज रो समान लदावण उतर न्हण र घघ मे लागतो, अर इण तर आपरी जरूरत माफक पोसा कमायर पाछो बावडतो । सराय मे थाया सू मरियम सदेई तळपूछा लेवती — आज कित्ता पोसा कमाया ? काई काई काम बग्गो ? थाकेलो तो को थायो नी ? '

ईनक पाछा इसा उचळ देय देवतो जिण सू मरियम राजी रवती ।

पण ईनक र मन मे उमग कठ ही, उछाह कठ ही ? काम कर पोसा, कमाव तो कीर खातर ? भेळा कर तो कीर खातर ? अ सवाल बीर मामा आवता, पण था मे कोइ तत नई लागतो । आवर अनम माथ सू भावाज आवतो — "म्हार कुण है कोई कोनी । धणो खारमो ह कीर खातर करू, कीर खातर जोडू कीर खातर छोडर जावणो है ?

इणी कारण ईनक र मन केई घेक काम म नई लागता । दस दिन अक जगा काम करया तो पद्द दिन झुजी जगा । इण तर दिन तोडता तोडता बा सांगी तिन आयथ्यो जिण दिन ईनक जातरा सू इण गाब म पाछो थायो हो—साल भर बीतग्यो । जीवण रो आकरसण जद मिटग्यो, तो इसी जीवण मौत सू माडो है ।

ईनक रा लावा डोला पहण्या । काळज माथ भारी मदमो पूग्यो— साल ग्रीनग्यो, अर ह निरुद्देय्य गोता ग्याळ हू, म्हार घर थका घर आळी थका बेट थका, बेटो थका । हू वान ऐय ई सकू कोनी, बा सू भासण ई कर सकू कोनी । भगवान ! थारी गत थारी है । '

चालता चालता बीरो डील गग्म हुय जावतो, हाड भारी लवावण लाग जावता दो दो दिना तई भूय ई नई लागती । मरियम नोरा करती तो दो गास थायर उठ जावतो । नो दिन नाकरी गयो, दस दिन नाथा करदी फेर काम माथ जावण रो बेस्टा करतो पण ऊमा हुवण रो भी आसव नई । मरियम पालती— बेटा तू कठ जाव आराम कर । मन तू म्हार जायोड जिसो लागण लागग्यो । इसी निमळाई म तन थारमो करण न किया जावण ॥ ।'

पण जित तई हलग्न हालता रया ईनक माथ म पड थो रयर मरियम माथ भार बगनो कवूल नई करयो । नो काम माथ जावतो । पाछो आवतो जित थकर चूर हुआवतो, अर घटा आघ घटा माथ लाय सुस्तावतो, फेर जीमतो ।

आवर, बार निकळण जिसी हालत रई कोनी अर वो सराय र मांय माथ ई रवण लागग्यो । मरियम कया— बेटा तू फिकर ना कर जे म्हारो पेट मरीजतो, तो थारो ई मरीज जामी । मिनख तो फालतू आपरो सोच कर सोच करण आटो तो मोटो धणो है । '

पण ईनक री हालत जिगाड माय ई रई, अर अब सराय मे घूमण लायक सरघा भी रई कोनी, अर बो कुरसी माथ बठयो रवतो अर मरियम लेन बीन राजी करण खातर, बीरो जीव लगावण खातर हरख री बाता सुणावती, हसावण री बाता सुणावती, पण ईनक र हसण रा, हरखावण रा दिन तो लार, निरा लार रेंपया हा । अब कोई भी बात सुणार बीरो जीव सोरो हूवनो कोनी, हरखावणो तो आघा रयो । जे साचो पूछी जाव, तो अब सुख दुख दोना सू बा उपराम हुयग्यो हो । घरती सू भलघो गया ज्यू गुरत्वाकसण खतम हूजाव, इणी तर बो सुख दुख दोना रो परिधि सू घणो भलघो पू चग्यो हो ।

जद सागर म तोफान आयि जाव, जाज री हालत खतर म पड जाव । बतार अथवा दूज जरिये सू सायता री भाग कर । सायता पूग्या पसी ई जाज केइ चट्टाण सू टवराय जाव अर दूट जावण कारण उण मे पाणी भरीजणां सरु हूजाव अर बा हूवण लाग जाव । उण बगत मगळा री आख्या सायता सारु आवण आळी जाज कानी लाग्योडी रव—कोई पाल, मस्तूल, जे कदास दीस जाव तो प्राण बच जाव । जित तई दूजो जाज हाथ नई आव हूण आळ जाज रा जातरी हायतोबा कर । पण ईनक री रगत यारी ई ही । बीर जीवण री जाज हूबण आळी ही, पण ईनक र माय पबराहट को ही नी । जाज हूबणो बीर खातर आस किरण हो । जाज हूबणो यानी सरीर खतम हूबणो, अथवा मीत आया बीन आपण अथाग दुख सू तो छून्को मिलसो ई, पण अक बात र कारण घणा सतोस हो कै अनी र मन री बोधबचित्या खतम हूजासी । अबार तई जिग डर री भटटी मे अनी जळनी ही बा भटटी बुझ जासी । अबार तई अनी न जिको डर हो क ज ईनक आयग्यो, तो काई करसू ?—बा डर मिट जासी, अर अनी न फिलिप र साग जिको सुख मिलै है, उण रा बा निरम हुयन उपभोग कर सकसी ।

सुद आपरा प्राण देयर भी ईनक अनी न सुखी बणावणी चावतो हा आ ई अब बीर जीवण री रळी ही ।

आखरी सनेसो

रात री वेळा ही । जू चकी जगती छाडर मरियम आपर बिद्यावणा मे पडी पडी मन म् बाता करती ही । नींद तो घणी आवती कोनी पण तो ई आराम करण खातर माथ माथ हाड उरळा ता करणा पडता । जद बा आधी नींद मे भर आधी जागती ही, तो ईनक हेलो करयो । हेलो सुणीज्यो, पण आधी नींद ही, इण कारण बोली कोनी । “माजी ! दूजा हेलो फेर जोर म् करयो । वा चमकर उठी, भर दीय री बाट सावळ करी फेर ईनक र पसवाडली कुरमी बीर माच र नडी सिग्कापर बठती बोली— क्यू नटिव अबार हेलो किया करयो तबियत तो सावळ है ?”

ईनक कयो— ‘माजी, माजी, थान अक बात कवणी है । गुपताऊ बात कवणी है ।

माजी कान ऊभा कर दिया, आख्या पूरी खोल दी भर नस आगीन करली ।

“क्यू, सुणीज्यो माजी हू थान अक भेद री बात कवणी चाऊ, पण माजी, थान सौगन जावणी पडती । कवतो कवतो ईनक माजी कानी फुरयो ।

इसी काई बात है बटा ? थारी गुपताऊ बात दूजा न किया बता सकू ? तन म्हारो इत्तो ई भरोसो कोनी ? हू तन म्हारा बेटो समझू हू, तू मन थारी मा को समझ नी ? भर जे समझ है तो फेर म्हारो अभरोसो क्यू कर ? कयर मरियम ईनक र मू ड माथ हाथ करया ।

ईनक कयो— माजी, थारी किरपा तो हू कदेई बीसक कोनी, पण थारा समाव काई मोळो है, भर थार पट म बात खट काई कमनी है इण कारण जे ये सौगन जावो तो फेर हू अक बात कऊ ।

मरियम बोली—‘ वा रे नटिव ! त मन समझी कोनी । मन अससी मू ऊपर बरस थाया है जे हू मोळो दूवती तो घाज तई म्हारो भर लोक कदेई खाय जावता भर मन घर घर भीख मागणी पडती । तू मन जावव गली ई समझ है काई ? भाळी कवो चाव गली कवो बात तो अक री अक है ।

माजी हू थान स्वाग्ना-ममभणा समझू पण म्हारी बात इसी है क सौगन दिरावणी जरूरी है । हू माफी मागू ये रीम मत करज्यो ।

“सौगन खावणी ई पडसी ?” माजी पूछ्यो ।

“खाली सौगन ई नई, आपा र ग्रय बाइबल रो सौगन खावणी पडसी ।”
कयर ईनव सारो हुवण खातर पाछो सागी तग सोयग्यो ।

मरियम न रोस ग्रायगी । बा आपरो कुरसी भायै कापती बोली—“तन सरम को घावे नी इसी बात करतै न ? आज तई बयासी बरसा री ऊमर तई तो मन कण ई बाइबल रो सौगन दिराई कोनी, अर तू मन इसी सौगन दिराव । बा रे नेटिव, तू आछो घादमी है । जबरो बेटो बग्यो तू म्हारो ।”

ईनक कैयो—“मा, त म्हार ऊपर इत्ती किरपा करी है, तो हू बऊ जिकी किरपा और कर दे । कर दे मा । चारो टाबर हू । तू नई करसी, तो फेर कुण करसी ? और म्हारो है कुण ?”

डोकरी री छाती पसीजगी । बा दीवट हाथ मे लेयर, माय मू बाइबल री पोथी काढर साई ।

ईनक कैयो, “मा, म्हारे मरया पैली म्हारी बात सीजै जान ई नई पूगणी खाईजै ।”

“हे भगवान ।” कैयर मरियम आपरी दोनू आरया भीचती बोली, ‘इया काई काली बाता करण लागग्यो । हारी बेमारी तो सरीर रो घरम है । मिनख हुवै जिका इया कदेई धबराया कर ? काल हू डाक्टर न बुलाऊ । तू देख लिम्मे भलेई, भेक दिन म आराम लवावण लाग जासी ।”

छेवट ईनक र कैया मू मरियम लेन सौगन खायली । पण बा डर मू कापण लागगी कँ अब कुण जाएँ ईनक इसी काई गुपत बात कसी जिण खातर बी इत्ती करडी सौगन खवाई ही ।

आपरी सिलेटी आरया ईनक डोकरी रै मगळै डील मायै घुमाई फेर पूछ्यो—
“मा, तू इण गाव रै ईनक आरडन नै जाएली ही काई ?”

डोकरी कुरसी मू ऊभी हुयगी—“अरे बेटा नेटिव, अब हू काई करू, चारो तो मायो खराब हुयग्यो । इसी बकयोडी बाता तो बार मईनां मे त भेक दिन ई करी कोनी । आज चार हुयग्यो काई ? ला, चारो हाथ भला, तन ताव घणो तेज तो को घण्यो नी ।”

कळाई छयर बोली—“नई बेटा, डील तो घणो तातो कोनी, फेर आ काई बात ?”

ईनक जीभ रो कबळास घटायर बाल्थो—“म्हारो मायो ठीक है ताव तप रो कई धणो जोर कोनी । हू पूछू जिकी बात रो उषठा = मन ।’

पण त आ कई बात पूछी ? ‘ईनक आरडन ? वा तो म्हार सामन जलम्या म्हारी आरया आग बडो हुयो । हाल ई बीरो पाहू म्हारी आरया आग वो हा जिंसा रो जिंसा दीस । बीरो सावा बंद ऊचो लिलाड, उठयोजे सीनो, गाळ फोलादी बूकिया—असगळा काल देल्या हुव ज्यू लखाव । कोई धणा बरस को आया नी बापड न । आपर मारग आवणो, आपर मारग जावणो । कई सू लडनोक भिडनो कितोक हुव बोजाणतो ई कोनी । आपर काम सू काम राखता । तन कई बनाऊ ईसो चोखो छोरो हो क बीर गया मू गाव री छिब मन उडगी हुव ज्यू लखाव । बा बस आपरी धुन मे मस्त रवतो, और केई री परवा ई करतो कोनी । पण सगळा बीरो कायदो राखता । राख आपेई—काम रो करता साचा घर ईमानगर ।

पण अब बीरो मायो नीचो हुयग्यो घर कोई बीरी परवा को कर नी ।” धीर धीर घर दुलभरो बाणी म ईनक बोल्या । आज मू तीज दिन म्हारी मीत है । इण सु बमी हू जीऊ कोनी । माजी, चकरावो ना बो ईनक हू ई हू, ईनक आरडन ।

डाकरी र मूड मू अेकामेक चीख निकळी जाण कोई मिरगी भयवा लोड मू पली निकळी हुव । बा अमरोस मू बोली—तू आरडन ? मन तै नाव अकल वायरी गिए राखी है ? कठ रयो ईनक आरडन, घर कठ रयो नटिब, तू । धारो आपस म मुकाबलो ई कोनी । कई तो ओपती बान कवणी ही, थोडी तो जवती बात कवणी ही भलामाणस । तू तो बूगो हुव ज्यू लाग है, ईनक हाल टावर है बापडो । बो तो धार मू जे धणो नई तो ई, कम-मू कम अेक फुट ऊचो है अक फुट समझ्यो ?’

‘मा भगवान री मरजी आग मिनख री अेक ई चाल कानी । भगवान इ म्हारी आ दसा करी है । बीन आ ई मजूर ही । उणी मन इण तर मुकायर डाकरो हुव ज्यू बलाय दियो । अेकलपो रवर र धारण म्हारो डोल टूटग्यो जोवन गळग्या, घर हू मकाल म ई इण दसा म आयर पडग्यो । पण मा तू म्हारी बात मान, बा तू कव जिकी ईनक आरडन हू ई हू । दूज माझ्या साम हू बदेई बदेई धारी सराय म आया करतो । तू म्हारी बोली ओठग्य कोनी ? म्ह बी लुगाई मू ब्याव करो जिकी दो बार आपरो नाव पळटयो है । तू म्हारी बात समझी हुवली—कळचडी घाळ फिलिप रे मू ब्याव करयो है नी बी अनी मू पलपोत ब्याव म्ह ई करयो हो ।

डोकरो आपरो आभ्यां माय ताण दियो अर ईनक न भोळवण री पोसीस करी ।

ईनक कथा—“कुरसी म्हार और नडी खाचल । माच मू घडावत । सुण म्हारी बात ।”

ईनक आपरो जातरा री, जाज डूबण री, टापू माय भेक्सप जीवण री, बठ मू निक्कलण री, पाछो गाव पूगण री फेर अनी अर आपरें टाबरा न देखण री सगळी बात मरियम सन न सुणाई । बा बीच-बीच मे आरया मीच मीचर लाबा सांस लेवतो रई अर बीरी आरया मू बराबर टळ-ळ आसुवां री भडी लाग्याडी रई । पण बीर मन मे इसी भाई कं बा भटदणी उठ अर सगळें गाव मे इण बात री धडोळो फर दब व घरे जिका ईनक आरडन आज मू कित्ता ई बरसां पली घन कमावण न बिदेस गयो हो, अर जिए न लोक भरयोडो समभण लाग्या, अर जिक री बळ अनी फिलिप रे साण दूजो व्याव कर लियो, वो ईनक आरडन मर्यो कोनी । जीवतो बठया हे जीवतो बंठयो हे म्हारी सराय म आयर देखलो ।

पण डोकरो री हीमत पडी कोनी । पलडी बात तो आ, कं जे आ खबर गाव म फल आव, तो काई छा ई रा नकीटा काई-काई निक्कळ-सायद अनी न पाछी इनक र घर म फिलिप आवण देख नई आवण देव । फेर ईनक अर फिलिप म सायद नगडा हुब टाबर बठोन रवं ? इण तर र नगडा री आसकावां मू डोकरो नापगी । इण र उपरायत बा घरम पराधण लुगाई ही । बाइबल री सौगन लाया मू घघाण म घापोडी हो । बाइबल री सौगन किया तोड ? आ सोचर बा बार भाजी वांनी ।

डोकरो सौगन तो ग्यायो, पण इण गुपताऊ बात न हजम करणा बीर घम री बात नई हो । बा सोचण लागी— भव काई करू काई नई करू । इत्तो बात जालर भी खुप घट्यो रवलो तो डीक कोनी ।

बा घोनो—“मिटिब, घरे नई, ईनक, देख, म्है थारी बात मानली, तो मू भी म्हारी सेक बाव मान । बाव मानसी ?”

ईनक धोत्यो कोनी, पण बीर चैरें माय बठोरता रा भाव नई हा, इण मू मरियम न आपरो घान बवण मातर हीमत बघी । बा घोली— घेकर सी मू थारें टाबरा रा मू डा तो नेवत । थारें हवारो भरण री डील है, फेर तो दू घबार सयर घाय जाऊ, जालें दोनू बन भाई घटें ई ऊमा हा । घोल, ईनक बोल । पुरती घर ।

टाबरां र नांव मू ईनक री हिबडो सतचाययो । सोच्यो— ज घेक थार म्हार टाबरा मू मिल मू बामू बात करमू ना बाळज म उडी नीक पद जावें ।

काई टा टाबर भी म्हारी अडोक म हुवना । आपर असली बाप न दूया ब भी घणा घणा राजी हुवना ।—आ बाता मे दिमाग थोडा अछू भयो इए कारण ईनक पाछो भट्ठणो काई उथळो नई दियो ।”

चुप्यो न हकारो समभर मरियम कुरसी माथे सँ उछळर ऊभी हुई, अर बईर हुयगी । पाच सात पावठा गई परी । इत्त मे ईनक रो ध्यान पाछो बावड या । बी हेनो करयो— मा अठ आ । कर काई है तू । बुनावण रो कए कैयो तनै ? हू करणो चाऊ ज्यू तू मन करण दे, बीष मे पचायतो ना कर । मँ पारो भरोसा करन म्हार हिरद री बात पार प्राग काढी है । तन भरोस जोगी समभर मू तन म्हारो भेद दियो है । केर तँ घरम अच री सौगन भी खाई है तो कर तू इमा मन मरजी सँ टाबरा न सावण खातर किया टुरगी ?”

मरियम पाछो आपर कुरसी माथे बठगी । बानी—‘बेटा ई म कोई हरज तो कोनी । टाबर आवता तो कित्ता राभी हुवता । इत्ता बरसा पछै आपर वा पसू मिलणो कोई कम हरज री बात है ? पण खर पार जे जखी कोनी, तो तई सई हू बुलाऊ कानी । अच्छ या अब बोल तू और काई कबणो चाब है ?”

ईनक कयो—‘पारी कुरसी म्हार नडी सिरका अर सावळ सोरी बठजा । हू कऊ जिक कानी ध्यान दे अर बीन समझण री बीसीस कर ।”

‘म्हारी सरधा दिन दिन खीण हुव है, अर अब ई मरीर रो कोई भरोसो कोनी । जित्त तई म्हारै सँ बोलीज है, बित्त हू चाऊ क म्हारी बात तन सुणाऊ अर थोडी भोळावण तन देवणी चाऊ ।’ कयर ईनक अेक लावो सास लियो ।

मरियम कयो—‘पारी इछा माफक काम हुसी । बोल बटा, तू मन दूजी ना समझ ।

ईनक कयो—‘जद तू अनी न दख तो बीन कईज—ईनक प्राखरी सास तई पार सँ प्यार करतो । तन हिरद सँ चावतो, आसीस देवतो अर पार सुख री कामना करतो । फरक इत्तो है क थ दोन आपस मे मिल को सक्या नी । पण ईनक तन आपर अतस सँ उणी तथ चावतो जिण तर बा तन तद चावतो हो जद क बीर माथ र पसवाड पारो माथो पोढया करतो हो ।

“पारो सनेसो अनी न जरूर पू चासू । मरियम बोनी ।”

पण म्हार मरया पछ पनी नई इण रा ध्यान राखे ।” ईनक समभायर कयो ।

‘तू बेफिकर रह बेटा ।” मरियम भरोसो दिरायो ।

“अर म्हारी बेटी अनी न, जिकी न हू छोटी हो जद सू ई ‘मेरी’ कयर बतलावतो, आ बात कईज क म्हे बीन फिलिप रे घर मे सोरी मुखी देखी। वीरो रुप रग, डील डोल देखर म्हारो घरणो जीव सोरो हुयो, अर हू बीन आसीस देवतो-देवतो मरयो हू। भगवान न म्हारी बेटी र सुख खातर हू अत सम तई प्राथना करतो रयो हू।” कयर ईनक थमग्यो।

“ठीक है।” मरियम बोली।

“अर म्हार बेट वाल्टर न भी कईज क आखरी दम तई म्हारी आत्मा बीर सुख, वीरो बढोतरी, बीरो चढोतरी रो कामना करती रई है अर भगवान न इणी बात रो प्राथना करती रई है। क्यू ठीक है?” ईनक पूछया।

“हा ठीक है बेटा।” मरियम बोली।

ईनक फेर कैयो—“म्हारो जीवता थका रो चरो ता बान याद कोनी, कारण, जन् हू त्रिदेसा गयो, तो ब जाबक अणसमभ हा, अर इत्ता बरस बीत्या पछे मन किया याद राख सकता, पण फेर भी हू वारो बाप हू, ब म्हारा टाबर है। जे अबार नई तो ग्राम जायर वार मन मे इण बात रो घोखा सदई खातर रय सक क—अर म्हा सो म्हार बाप रो सूरत ई देखी कोनी।—आ भी हू जाणू क म्हारी सूरत अब दरसणा सायक कोनी, पण आपरो बाप सदई पूजण—जोग हुव। मन दवर म्हारा टाबर पढ़ायत राजी हुसी।”

‘हा, ईनक। जद व तन दखण न आसी ता अनी बान धारी जवानी रो सगळी बाता बतासी, हू भी बतासू क इण गाव म धारी जोड रा पछा जवान भीठ निराबळ लायता। कयर मरियम ईनक माथ बात रा असर दखण सारु बीर कानी भाकी।

ईनक विचाळ ई बात काटतो बोल्यो—“मा, टाबरा साग अनी न ना बुलाये। हू आ घाऊ कोनी क अनी म्हार सब न देखे, म्हार ईण खीण सरीर रो लास अर मू भो देख। जे बा देखसी, तो म्हारो मुहदो चरो सनेई बीर नणा सामो घूमतो रमी, अर बा बीन सुम्मी जीवण में दुख घेळण रो काम करमी। तू जाए हू तो अनी न सोरी-मुखी घाऊ। जे अनी अर म्हारा टाबर दोरा-दुखी हुव, तो कवर म भी म्हारी आत्मा न सायतो मित कोनी अर वा ठेठ तई तडफती कळपती रवे।”

मरियम रो आम्ह्या मे आसू आयग्या। ठीक है बेटा, धारी बात ठीक है। तू कब जू ई हू जरमू। हू साचू कें अब धारी सनेसो पूरो हुयग्या हुवलो। पारो शेन निमळो है। बोलण म डीन न ताण पड।”

इनक सास लेवण खातर थोडा यमग्यो । मरियम बीरी छाती र हाथ करयो, माथो पपोळ्यो अर आपरी आम्हा जिक्की निरी ताळ सून आली ई ही, बान सावळ पू छी ।

बो बोल्हो— मा तू रो ना । म्हारी छाती काची ना घाल । मिनस रो काळजा करडो हुव, बज्जर हुव पण लुगायां न रोवती, बसका फाटती अर करळावती दखर बज्जर ई मण वण जाव । मा तू रो ना मन सायती सून मरण दे । पण हां भेक बात तन और कवणी है ।”

मरियम आपरी कुरसी नडी सरकाई अर बा इधरजी आख्यां सून, नवी बात सुणन सार, ईनक र सामी भाकण लागयो ।

बो बोल्हो— ‘म्हार परवार म अब भेक जणा बाकी है, फकत भेक ।”

मरियम चमकी । बी भट ईनक री छानी र हाथ लगायो नाड देवी, चरो देख्यो । बोली— ‘ईनक, ईनक, इया धार काई हुयग्यो ? सबार तई तो तू सावळ सावळ बाता करतो हा । ह भगवान ।”

ईनक कयो— ‘मा, तू धवरा ना । हास तई म्हारो काई बिगडया कोनी । म्हारा हास हवास भी ठिकाण सर है । तू बिचाळ बोल ना पत्ती म्हारी बात सुणल ।

मरियम चुप हुयगी, पण बीन ठा पडगी न ईनक रो माथो फेस हुयग्यो । बा धराबर डळवीज्योड नणां सून ईनक सामो जोवती रई ।

ईनक कयो— ‘म्ह “याव करयो लुगाई आई टावर हुया ह हरवायो । व सगळा कायम है पण बा मांय म कोई म्हारै काम को घायो नी । हो, म्हारो मक टावर और है बीर माथ म्हारी दीठी । टक्कोडी है बीसू मिनण खातर हिरवी उतावळ करै बीन पमण मातर म्हारा होठ घडी घडी बार फडक ।”

डोकरी मन म तो जाणनी ही न ईनक कक्कोडी बाता कर, पण ऊमर सून आ बात बिना दरमाया बोली—

पण बटा तू तो बीन जाणू कोनी ।”

तू जाण मा, ईनक कयो । आछी तर जाण । त मन बीरी सरग जातरा रा समाचार भी सुणाया । बीन जाण है नी ? कयर ईनक अलखीठ मुळक मुठयो ।

“अरे बटा, तू आ काई बात कर ?” कयर मरियम दो तीन उतावळा भर ऊ हा सास लिया ।

ईनक कयो—“पण अमार दुनिया न छोडर जद हू सरग म पूगसू, तो म्हारो लाडलो पूत म्हार सू गलबाधडी घालर भटण सारू अडीकतो त्यार लाघसी ।” फर ईनक बागद री अक पुडिया आपर खुज माय सू काठर कयो— आ अक इसी चीज है जिए न म्ह इत्ता बरसा तई म्हारै मिनखपण बिच्च ई बपी साभर राखी है । मून टापू मे हू मिनख सू ढाने बणग्यो, पण फेर भी इण पुडिया न परमारवा गमण दो कानी ।” ईनक पुडिया न खालण खातर बठयो हुवण लाग्या ।

मरियम कया—‘सा, हू पाल दू, तू खेचळ ना कर ।’

ईनक कया—‘मरियम आ हू तन दऊ कोनी । आ म्है इत्ता बरसा म मिनख जाय न दो कानी । पण नई अब म्हारा भावरो बगत है, आखर तो मनै इण सू बिछडनो पडसी, भर तन ई री भाठावण देवणी पडसी ।’

मरियम बोली—“ईनक, अक बात हू तन पली पूछलू, पद सापद हू भूल जाऊ । आजकल म्हारो सुभाव भूलणा हुयग्यो । बात चेत को रब नी । बुढापो छाटी घणो मिनख रो सुरसा काढल ।’

‘पूछ ल ।’ ईनक घीरसीक कयो ।

मरियम सक्ती-सकती बाली—“भारा समाचार हू अनी, फिलिप भर टाबरा न पूगता तो कर देसू, पण ब किया मानसी ब तू ईनक है । ब किया मानसी ब ईनक इत्ता बरसा तई जीवतो रयो, भर आपरी लुगाई-टाबरा न सनसो भी भेज्यो नई । ब भा भी किया मानसी कै तू अठ आयग्यो, अक बरस ताली म्हारी सराय म रयो, जद ब थारो आपरो घर अठ है । अनी किया मानसी क ईनक आयो, भर बीसू मिल्यो कोनी । वेटा, मन डर इण बात रो है ब मन कूडी नई घाल द ।’

ईनक कयो— थारी बात रो उषळो मुण । इण पुडिया म म्हार नानडिय र केसा री एक लट है जिकी अठ सू परदेस खातर बईर हुवती ब्रेळा अनी मन बीर लिलाड माय सू काटर दी ही । जद तू इण लट न अनी र हाथ मे म्हारी संताणी सारू देसी, तो बा आपेई समझ जासी ब हू ईनक हू ।” वो फेर बोल्थी—‘पली तो म्हारो विचार हो क हू इण केसलट न म्हारी क्वर मे साग ले जासू, अठ कीर मरोसै छोडू ? पण अब म्हारो मतो पळटग्यो, भर तू ल, साम । सावळ जतन मू राते, भर म्हार आख्या मीच्या पछ म्हार मर्या पछ, तू अनी र हाथ मे भलाय दय । इण सू अनी रो जीव सोरो हुसी ।’

मरियम कयो—“तू फिकर ई ना कर। हू आप अनी कन जामू धार टाबरा कन जामू, बान सगळो वाता वसू। बान बुनायर अठ लासू। धारी भलायोडी केसलट भी देसू। अर तू चाव जिका सगळा काम अक दम आछी तर कर देसू। अनी आप आछी लुगाई है। फिलिप चोखो आदमी है।”

अ बाता सुणेर इनक फेर करडो आख मू मरियम र सगळ डील न देख्यो। वा डरती डरती बोनी—‘तू डर ना बटा, म्ह धार आग सौगन खाई है। हू धार आग फेर बण करू व तन जिका वाचा दियोठा है, वा में राई जित्तो फरव ई नई पडसो। आ, हू कऊ जिकी, आठ माथ लीक गिए ल।

जाज आगम्यो

‘बटो प्रापन बाप न कितो वालो लाग । इती उयल पुयल म भी ईनक प्रापर बेट र केस नै साभर राख्यो । बा र भगवान । बाप रो हिरवो भी तै काई बगायो है । इण केस न साभर राखण री जरूरत काई ही, पण बेट र केस नै, बेट री मनाणी न, बाप किया गमाव, गमायोडी पोसाव कोनी ।’ आ बिचारा म गम्योडी मरियम लेन तिरया म डूब्योडी, ईनक रै पसवाडली कुरसी माथै प्रापर बठगी, कारण आज ईनक री तबियत डरावणी ही ।

मू डो हुयग्यो पोळो हुळक, आख्या री पलका मोडी भरण लागगी । होठ मूकग्या । हिचकी आवण लागगी । बोलणो बंद कर दिया । मरियम चिमच सू पाणी रो गुटको देव भयवा आगळी र सत लगामर माडाणी मू ड म आगळी घालर जीम र लगाव ।

छेवट आख्या टमकारणी बंद हुयगी । सास खाथो आवण लागग्यो । डील घाग धुल ज्यू धुवण लागग्या । मरियम केई वार कबल मघर मुर मे बनळायो, पण मरियम र सामो वो काइया भी घुमाय सक्यो कोनी । सारलो घडी जाणर मरियम र मूक नणा मे भी फेर जळ आगम्यो ।

सक्ष्या री वगत हुई । मरियम न डर लागण लागग्यो—अब काई हुसी । पण डोकरी उमर म घणा ई रोभा देख्या हा । होमत राखी । भगवान न प्रायना करी— हे परमात्मा, अब ओ पार घरे आवण आळो है, तू ई ई रो धणी है ।”

मरियम कन बठी-बठी बराबर ध्यान सू देखै । कदेई कदेई डोकरी न भोटो प्राय जाव, अर वा चमकर पाछी नस ऊची कर । कुरसी सू उठ दो पावडा घूम, अर पाछी प्रापर बठ जाव ।

ईनक मीट मे पड यो हो ।

अचानक समदर मू अेक डरावणी मूज उठी अर उकळत पाणी ज्यू वी म लळमळी मचगी । परवताकार छोळा अळग सू भाग भागर आव अर कनार माथै प्रापर मायो फोड फोड रोव । इण उयल-पुयल अर टकराव मू इसो ऊ ताळी सबद

उठयो क गाव रा सगळा घर हिलग्या । रसोई म पढ या बासण खणखण करण लाग्ग्या । बारया अर बारणा रा किवाड खडखड करण लाग्ग्या । गाव रा सगळा वासी घवरायग्या । इसो डरावणो दिस्य वा आज पली वदेई नई देख्यो हो ।

अचाणचक मोट टूटी, अर वो उठयो, अर चिरळायो, ऊताळो चिरळायो—
जाज ! जाज ! ! हू वचग्यो ! ! ! जाण वो हूबतो हुध, अर उवारण खातर कोई जाज आय पूग्यो हुव । आपरी घाघी बोली म अई बीरा पोछडी रा सबद हा ।

मरियम सतरी बतरी हुयर बीन साभण खातर त्यार हुई, जित्त तो ईनक पाछो आपर बिछावण माथें गुडग्यो, अर अबोल हुयग्यो ।

ईनक री सव जातरा इत्ती धूमधाम सू हुई अर उणरी कबर माथें इत्ती घन लख्चीज्यो कै आ वठ री दूजी कबरा मू यारी निरवाळी ई लागती ।

